

विश्व की अलौकिक साधनाएं

जीवन के विविध पक्ष और अनेक आयाम हैं, जिनको पूर्णत्व की दृष्टि तक पहुंचाने की सामर्थ्य कुछ विशिष्टतम व्यक्तियों में ही होती है और उनके पीछे किसी तेजस्वी व्यक्तित्व की ही कृपा दृष्टि रहती है, लेकिन पुरुषार्थ तो यही कहता है, कि हम स्वयं प्रयास कर उस पूर्णत्व को प्राप्त कर लें, जो जीवन के विविध आयामों को पूर्णता देने में समर्थ हैं और यह पूर्णता साधना के माध्यम से प्राप्त की जा सकती है। अनन्त विस्तारित ब्रह्माण्ड के समान विस्तृत तंत्र साधनओं के क्षेत्र में से कुछ विशिष्टतम साधनाओं को दुर्लभ ग्रंथों, साधुओं, संन्यासियों से प्राप्त कर उसे संग्रह कर ग्रंथ रूप में आपके समक्ष प्रस्तुत है, जिसमें दुर्लभ सामग्रियों साधनाओं, विशेष मंत्रों के साथ महत्वपूर्ण दुर्लभ यंत्रों का भी विवरण है।

मंत्र-तंत्र-यंत्र विज्ञान, डॉ. श्रीमाली मार्ग, हाई कोर्ट कॉलोनी, जोधपुर(राज.), फोन:0291-432209, फैक्स:0291-432010
सिद्धाश्रम, 306 कोहाट एन्क्लेव, पीतमपुरा, नई दिल्ली - ३४, फोन : 011-7182248, टेलीफैक्स:011-7196700

विश्व की अलौकिक साधनाएं डॉ० नारायण दत्त श्रीमाली

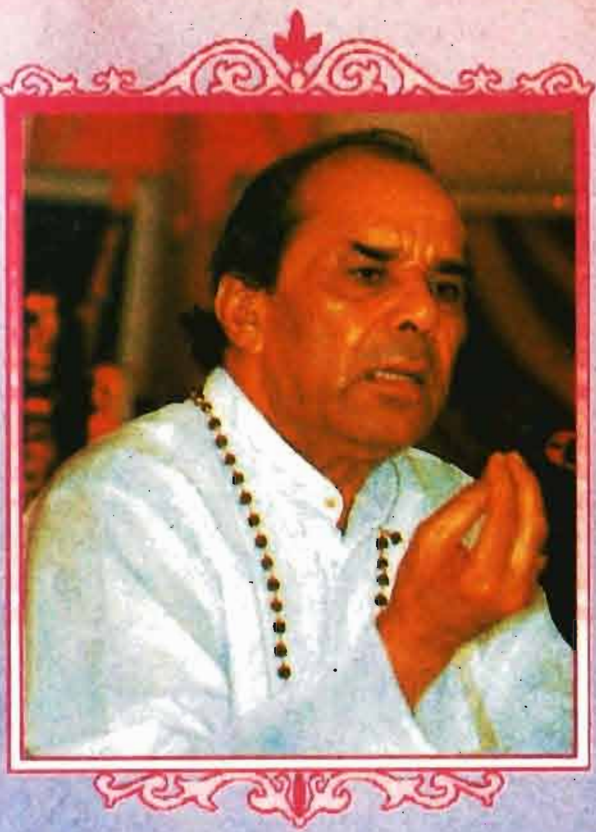
96/-



डॉ० नारायण दत्त श्रीमाली



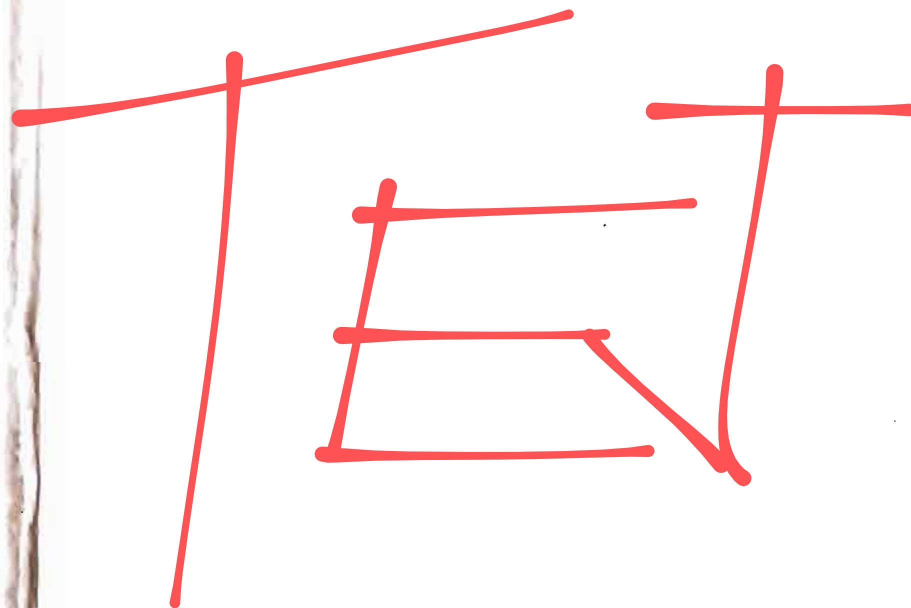
विश्व की अलौकिक साधनाएं



साधनाओं की अगाध जलराशि में से ढूंढ़ कर कुछ 'अलौकिक साधनाएं' जो कि सर्वजन सामान्य के लिए भी शीघ्र फलप्रद हैं, उनकी सूक्ष्मता, गोपनीयता और बारीकियों का क्रमबद्ध रूप से प्रस्तुतिकरण हुआ है, इस ग्रन्थ में

'विश्व की अलौकिक साधनाएं.

श्री गुरुचरणकमलेभ्यो नमः



विश्व की अलौकिक साधनाएं



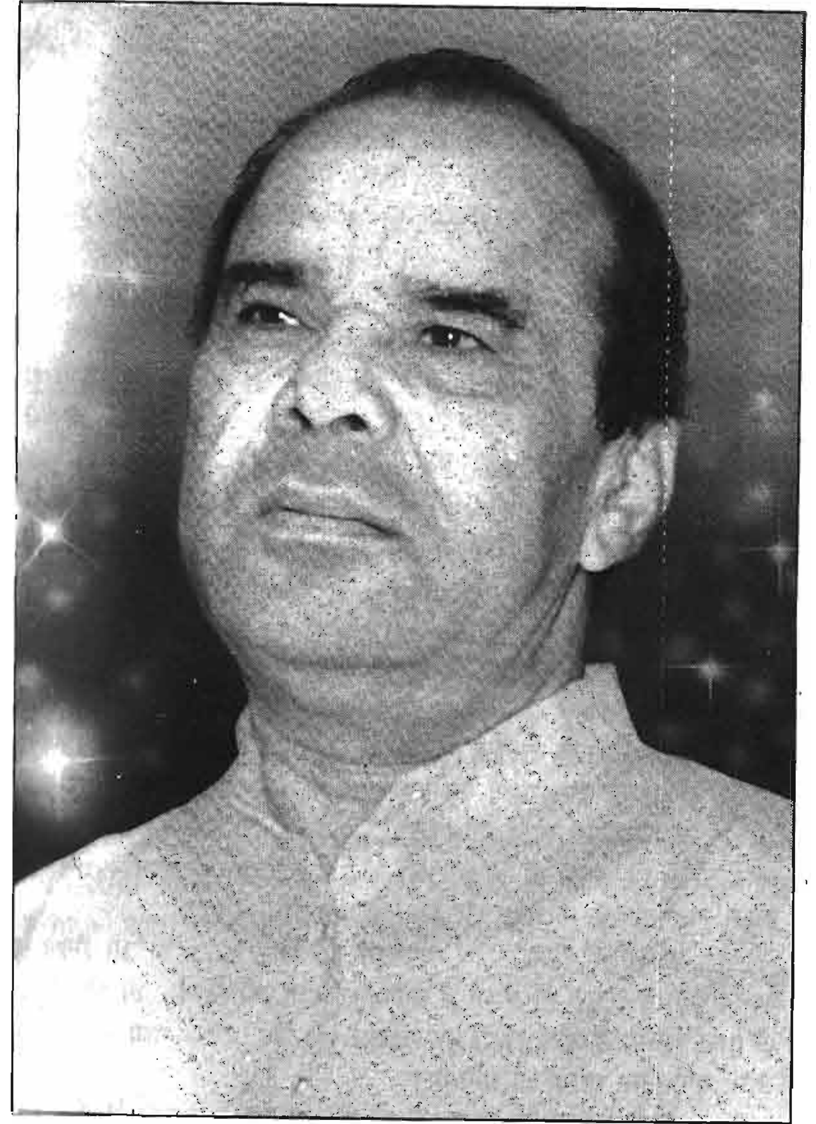
डॉ० नारायण दत्त श्रीमाली

एस—सीरीज

संकलन एवं सम्पादन
श्री कैलाश चन्द्र श्रीमाली

प्रकाशक
मंत्र-तंत्र-यंत्र विज्ञान
डॉ० श्रीमाली मार्ग, हाई कोर्ट कॉलोनी,
जोधपुर - ३४२ ००१ (राज.)
फोन : 0291-432209, फैक्स : 0291-432010

संस्करण	:	दिपावली 2001
मूल्य	:	96/-
मुद्रक	:	R.S. Offset Printers.487/84 School Road Peera Garhi N.D-87 Ph.: 5254209



पूज्य गुरुदेव
डॉ० नारायण दत्त श्रीमाली

प्रकाशकीय

'मंत्र–तंत्र–यंत्र विज्ञान' प्रकाशन के अन्तर्गत प्रकाशित होने वाली विश्व की अलौकिक साधनाओं से सम्बन्धित यह अद्वितीय पुस्तक आपके हाथों में है। यह पुस्तक जन साधारण के लिए अत्यन्त महत्वपूर्ण और सहायक है। एक प्रकार से देखा जाय, तो यह साधनाओं का खजाना है और इस ग्रंथ का प्रत्येक शब्द साधकों के लिए वरदान स्वरूप है। इसमें साधनाओं की सूक्ष्मता, गोपनीय बारीकियां और सिद्धियां प्राप्त करने हेतु विस्तार से, क्रमबद्ध रूप से समझाया गया है। इसमें हर प्रकार के दुर्लभ ज्ञान को जिस सहज और सरल भाषा में प्रस्तुत किया गया है, वह अपने आप में सराहनीय है और इसके माध्यम से साधक साधनाओं के क्षेत्र में पूर्ण सफलता की ओर अग्रसर हो सकेंगे, सिद्धियां प्राप्त कर सकेंगे और जीवन में पूर्णता प्राप्त हो सकेगी।

साधना के पथ पर न तो कोई पुरुष होता है और न कोई स्त्री, वह एक सम्पूर्ण साधक होता है और फिर साधना की यात्रा शून्य से आरम्भ होकर पूर्णता प्राप्ति तक पहुंचती है, क्योंकि उसका अंतिम पड़ाव साधना की पूर्णता है।

इसमें ऐसी साधनाएं हैं, जिन्हें सामान्य गृहस्थ स्त्री–पुरुष कोई भी सम्पन्न कर सकता है, उसे न बहुत विधि–विधान की जरूरत है और न विद्वता की, सामान्य सामग्री के माध्यम से आप पुस्तक में वर्णित साधना को करके अपनी समस्याओं का समाधान प्राप्त कर सकते हैं।

ये साधनाएं साधु, संन्यासियों, योगियों और साधकों के लिए तो उपयोगी हैं ही, साथ ही जिज्ञासुओं और इस विद्या से लाभ उठाने की इच्छा रखने वालों के लिए भी बहुत ही उपयोगी हैं।

साधना में सिद्धि और सफलता के लिए दो तत्त्वों की नितान्त अनिवार्यता है– गुरु के प्राणों में एकाकार होने की क्रिया, जो कि दीक्षा के द्वारा सम्भव है और इससे पूर्ण साक्षात्कार कर, उनके भव्य दर्शन कर उनमें पूर्ण समा जाने की प्रक्रिया।

कोई भी साधना आरम्भ करने से पूर्व यह आवश्यक है, कि हम परम पूज्य गुरुदेव से दीक्षा प्राप्त करें। दीक्षा के माध्यम से पूज्य गुरुदेव साधकों को जो चेतना देते हैं, उससे साधना सरलतम रूप से सम्पन्न हो जाती है। दीक्षा हेतु साधक हमारे दिल्ली कार्यालय – " सिद्धाश्रम, 306, कोहाट एन्क्लेव, पीतमपुरा, नई दिल्ली – 34", फोन नं0 7182248, 7196700 अथवा जोधपुर कार्यालय – "मंत्र–तंत्र–यंत्र विज्ञान, डॉ0 श्रीमाली मार्ग, हाईकोर्ट कॉलोनी, जोधपुर (राजस्थान)", फोन नं0 32209, 32010 से सम्पर्क कर सकते हैं। यदि व्यक्तिगत रूप से आना सम्भव नहीं हो, तो आप अपना नवीनतम फोटो भेज दें, पूज्य गुरुदेव फोटो के द्वारा स्पार्शी विधि से दीक्षा प्रदान कर देंगे।

इन साधनाओं को करने से साधक अपने जीवन में आर्थिक उन्नति, सामाजिक प्रतिष्ठा, आध्यात्मिक उन्नति प्राप्त कर सकेंगे, जीवन में सुखी, सफल और यशस्वी हो सकेंगे, जीवन में पूर्ण खुशहाली छा सकेगी और पूर्णता प्राप्त हो सकेगी।

इनके लिए माध्यम हैं साधनात्मक उपकरण – माला, यंत्र, चित्र एवं साधना सामग्री, जो कि मंत्र सिद्ध हों, प्राणश्चेतना युक्त हों, फलदायक हों, इष्ट और साधना के बीच सेतु हों, गुरु और शिष्य के बीच आत्मिक सम्बन्ध हों। ये उपकरण आपको पूर्ण सफलता दे सकेंगे और जब ऐसा होगा, तो अपने आप आपके प्राणों में गुरु की चेतना का दीप प्रज्ज्वलित हो जायेगा, अपने आप सिद्धियों की जगमगाहट हो जायेगी, सिद्धियां हाथ बांधे आपके सामने खड़ी होंगी, अपने आप सिद्धता और सफलता प्राप्त कर सकेंगे, यह निश्चित है और अवश्यम्भावी है।

मैं युगपुरुष पूज्य गुरुदेव, जिन्होंने इस पुस्तक में साधनाओं के बारे में अमृत तुल्य शब्द लिखा है, के प्रति नमन करता हुआ मेरा रोम–रोम उनके प्रति ऋणी है और उनके आशीर्वाद का आकांक्षी है और हम हजारों–लाखों शिष्य–शिष्याओं की प्रार्थना है, कि वे इसी प्रकार हमें अमृत के घूंट पिलाते हुए पथ प्रदर्शन करते रहें।

प्रकाशक

विषय-सूची

श्री चिन्तामणि गणपति प्रयोग

श्री चिन्तामणि गणपति प्रयोग भारतीय मंत्र शास्त्र का श्रेष्ठतम और गोपनीय प्रयोग है, जो यद्यपि लघु दिखाई देता है, पर उसका प्रभाव तुरन्त, अचूक और अद्वितीय है।

यों तो गणपति से सम्बन्धित सैकड़ों साधनाएं भारतीय तंत्र–मंत्र के ग्रंथों में वर्णित हैं, पर यह साधना अन्यतम है। जब भी, जिसने भी इस प्रयोग को किया है, उसे पूर्ण और निश्चित सफलता मिली है।

प्रसिद्ध दण्डी स्वामी अलक्ष्यानन्द जी साधु समाज में चर्चित व्यक्तित्व रहे हैं। उनकी दाहिनी आंख की पुतली में पारद गणपति का विग्रह हर समय विद्यमान रहता है। साधना काल में आंख की कोर से इस गणपति विग्रह को निकाल कर साधना सम्पन्न करते हैं और फिर पुनः आंख की कोर में ही स्थापित कर देते हैं।

पिछले दिनों स्वामी जी ने कृपा कर इस प्रयोग को समझाया था, जो कि पाठकों के लिए उनकी तरफ से वरदान स्वरूप है।

इस प्रयोग का प्रारम्भ अधिमास अथवा चैत्र, आषाढ़ अथवा किसी मास के शुक्ल पक्ष की चतुर्थी से करना चाहिए, इस दिन तांबे के प्लेट में पारद गणपति की स्थापना करें, जो **'विजय गणपति'** मंत्र से सिद्ध हो।

इसके बाद सर्वप्रथम संकल्प करना चाहिए –

संकल्प

अत्राद्य अमुक वर्षे अमुक मासे शुक्ल पक्षे

अमुक तिथौ अमुक वासरे मम अमुक कामना (कामना बोलें) सिद्धचर्थे लक्ष्मी प्राप्त्यर्थे श्रीचिन्तामणि प्रयोगमहं करिष्ये।।

संकल्प करके गणपति की मूर्ति को सर्वप्रथम पंचामृत से तथा उसके बाद शुद्ध जल से स्नान कराकर बाजोट पर पीले अथवा केसरिया रंग का वस्त्र बिछाकर, उसके ऊपर कुंकुम युक्त चावल से स्वस्तिक निर्मित कर, उसके मध्य में चावल रखें। उसके ऊपर स्नान कराये हुए गणपति को स्थापित कर उन्हें चंदन, अक्षत, पुष्प, धूप–दीप, यज्ञोपवीत तथा पीत वस्त्र से अलंकृत कर पुष्प हार पहिनाएं। तत्पश्चात् उनके सामने मोतीचूर (बूंदी का लड्डू) का नैवेद्य रख कर गायत्री मंत्र का जप करते हुए जल चढ़ायें। उसके बाद यह मंत्र पढ़ें –

ॐ गणानां त्वां गणपति (गूं) हवामहे प्रियाणां त्वां प्रियपति (गूं) हवामहे निधीनान्त्वां निधिपति (गूं) हवामहे व्वसोमम आहमजानिगर्भधमात्वमजासि गर्भधम्।।

इसके उपरांत निम्नलिखित मूल मंत्र का '**कमलगट्टे की माला**' से ग्यारह हजार बार जप करें –

मूल मंत्र

।। ॐ श्रीं ह्रीं श्रीं चिन्तामणि गणपतये वांछितार्थं पूरय पूरय लक्ष्मीदायक ऋद्धिं वृद्धिं कुरु कुरु सर्वसौख्यं सौभाग्यं कुरु कुरु श्रीं ह्रीं श्रीं ॐ।।

नित्य जप की संख्या और समय एक समान रखना चाहिए। जहां तक सम्भव हो सके, यह प्रयोग रात्रि के समय ही करना चाहिए तथा गणपति के सम्मुख रखे गये नैवेद्य को स्वयं ग्रहण करने के बाद बालकों तथा घर के अन्य व्यक्तियों को देना चाहिए।

जप के पश्चात् उसी स्थान पर अपना बिस्तर बिछा कर सोना चाहिए। साधना काल में सत्य बोलना चाहिए, क्रोध नहीं करना चाहिए, सात्विक भोजन ग्रहण करना चाहिए, मिर्च–खटाई युक्त भोजन नहीं ग्रहण करना चाहिए, यदि सम्भव हो, तो स्वयं ही भोजन बना कर ग्रहण करना

चाहिए अथवा कोई स्नान कर स्वच्छ धुले वस्त्र धारण कर भोजन बनावे, तो उसके हाथों का बना भोजन ग्रहण करना चाहिए। जप के पश्चात् स्वयं ग्रहण करने वाला नैवेद्य भोजन के समय से पहले ग्रहण कर लें।

ग्यारह हजार मंत्र जप समाप्त होने के पश्चात् हो सके तो तिल, नारियल, शक्कर, घी से दशांश अर्थात् ग्यारह माला का होम करना चाहिए तथा दो या अधिक ब्राह्मणों को भोजन कराना चाहिए।

जब तक यह प्रयोग चलता रहे, तब तक साधक को सात्विक भोजन तथा ब्रह्मचर्य आदि का पालन करना चाहिए।

यह प्रयोग मनोवांछित कामना या सिद्धि हेतु किया जाता है। धन की प्राप्ति हेतु, चाहे जैसा संकट या बाधा आयी हो, उस विघ्न से मुक्त होने या मन की कोई भी इच्छा पूर्ण करने हेतु यह प्रयोग किया जा सकता है। जिस संकल्प की पूर्ति करनी हो, उसका पहले संकल्प बोलना चाहिए।

प्रयोग समाप्ति पर पारद गणपति को अपने साधना स्थान में स्थापित कर दें तथा माला को नदी में विसर्जित कर दें।

रोग निवारण के लिए

घर में यदि रोग की समस्याएं बनी रहती हों और उनसे छुटकारा पाने के लिए कोई उपाय कारगर न सिद्ध हो रहा हो, तो साधक यह प्रयोग सम्पन्न कर रोगों को घर से समाप्त कर सकता है।

किसी भी शुक्ल पक्ष में पड़ने वाले सोमवार को प्रातः स्नानादि से निवृत्त होकर किसी पात्र में कुंकुम या अष्टगंध से स्वस्तिक का निर्माण कर उस पर '**पारद गणपति**' का स्थापन करें। पारद गणपति का संक्षिप्त पूजन कर उस पर जल चढ़ाते हुए निम्न मंत्र का जप 101 बार करें –

मंत्र

।। ॐ गूं नमः ।।

चढ़ाए हुए जल को एकत्र कर उसे पूरे घर में उपरोक्त मंत्र का जप करते हुए छिड़क दें, ऐसा चार सोमवार को करें। घर में आरोग्यता स्थापित होगी।

कुबेर यंत्र साधना

भारतीय ग्रंथों में कुबेर को धन का देवता माना गया है और देवताओं में भी कुबेर को सर्वश्रेष्ठ स्थान प्राप्त है, क्योंकि वे आर्थिक समृद्धि के देवता हैं।

यह मंत्र प्रामाणिक होने के साथ–साथ प्रत्येक गृहस्थ के लिए उपयोगी है। इस मंत्र का जप पुरुष या स्त्री, कोई भी कर सकता है; यदि यह सम्भव न हो, किसी योग्य विद्वान से भी कुबेर मंत्र के जप करवाये जा सकते हैं।

कुबेर यंत्र अपने आप में पूर्णतः गोपनीय रहा है, यद्यपि तंत्र–मंत्र से सम्बन्धित कई ग्रंथों में कुबेर यंत्र का वर्णन आया है, परन्तु इसका सही रूप में अंकन कहीं पर भी नहीं हुआ। लेखक इसकी खोज में था और कुछ वर्षों पूर्व उसे अपने गुरु से कुबेर यंत्र के बारे में पूर्णता से ज्ञात हुआ था। इस यंत्र के बारे में कहावत है, कि पिता को चाहिए, कि वह अपने पुत्र को भी कुबेर यंत्र का ज्ञान न दे। इन सारे तथ्यों से यह स्पष्ट होता है, कि यह यंत्र अत्यन्त गोपनीय रहा है और आज तक प्रामाणिक रूप से न तो इसका प्रकाशन हुआ है और न इसके बारे में प्रामाणिकता से साधु–संतों को ज्ञान ही है, अटकलबाजी के सहारे वे इसके बारे में कुछ न कुछ कह देते हैं।

यह यंत्र अपने आप में अत्यन्त प्रभावशाली और श्रेष्ठ धन प्रदायक यंत्र माना गया है और लगभग सभी तांत्रिकों और मंत्र मर्मज्ञों ने इस यंत्र की सराहना की है। प्राचीन समय में जितने भी आश्रम थे, उन आश्रमों में पूर्ण विधि–विधान के साथ कुबेर यंत्र की स्थापना अवश्य होती

थी, जिससे कि वे आश्रम धन–धान्य से समृद्ध रहते थे, हजारों शिष्यों का पालन–पोषण होता था और वे आश्रम राजाओं से भी ज्यादा समृद्ध माने जाते थे, उनके मूल में कुबेर यंत्र का ही प्रभाव था।

कहते हैं, कि राजा रावण ने महादेव से कुबेर यंत्र प्राप्त किया था और इस यंत्र को सिद्ध किया था, जिसके फलस्वरूप वह और उसका राज्य पूर्णतः समृद्ध हो सका था और उसकी लंका सोने की बन गई थी।

मेरे जीवन में ऐसे कई अनुभव हुए हैं, जिनसे यह ज्ञात होता है, कि यह यंत्र अपने आप में कितना अधिक प्रभावपूर्ण है। इस यंत्र की विशेषता यह है, कि यह जीवन में पूर्ण समृद्धि देने में सहायक है, जिसके घर में भी यह यंत्र स्थापित होता है, उसके जीवन में किसी प्रकार का कोई अभाव नहीं रहता।

कई वर्ष पहले एक कुम्भ के मेले में स्वामी प्रवृज्यानन्द जी ने लगभग दस हजार साधुओं को भोजन कराया था, एक छोटे से कमरे में वे स्वयं बैठ गये थे और अन्दर से उन्होंने खाद्य सामग्री देने का उपक्रम किया था। सभी साधु आश्चर्यचकित थे, कि इनके पास अवश्य ही कोई न कोई ऐसी साधना है, जिसके बल पर हजारों साधुओं को भोजन कराने में समर्थ हो सके हैं, जबकि वे अपने शरीर पर लंगोटी के अलावा कोई वस्त्र नहीं रखते, उनके बगल में एक छोटा सा झोला पड़ा रहता है और उस झोले में से वे खाद्य पदार्थ निकाल–निकाल कर लोगों को खिलाते रहते हैं।

मेरा उनसे मधुर सम्बन्ध है, अतः जब मैंने उनसे जिज्ञासा प्रकट की, कि उनके पास कौन सी साधना है, जिसके बल पर वे समृद्ध हैं और हजारों लोगों का पेट भरने में सक्षम हैं, उनका भण्डारा या कोष कभी खाली नहीं होता।

उन्होंने मंद–मंद मुस्कराते हुए रहस्योद्घाटित किया, कि उन्होंने कुबेर साधना सम्पन्न कर रखी है और उनके झोले में कुबेर यंत्र है, जिसके बल पर वे समृद्ध हैं और जितना भी द्रव्य वे चाहते हैं, प्राप्त हो जाता है।

आबू से आगे वशिष्ठ आश्रम है, वहां पर भी एक साधु काफी समय पहले रहते थे, जिन्हें लोग नंगा बाबा कहते थे, क्योंकि वे सर्वदा

नग्न रहते थे। उनके पास एक झोला था, जिसमें से वे मनचाही वस्तुएं या खाद्य पदार्थ निकालते रहते थे, उनके जीवन में आर्थिक अभाव कभी नहीं रहता था।

कुछ वर्ष पहले उनका शरीर शांत हो गया। मृत्यु से पूर्व उन्होंने लेखक को बुलाया था और अपने झोले से कुबेर यंत्र निकाल कर कहा था – 'मेरे जीवन में जो कुछ भी है या मैं जीवन में जो कुछ भी प्राप्त कर सका हूं, उसके मूल में यह कुबेर यंत्र ही है। तुम मेरे अत्यन्त प्रिय रहे हो, यद्यपि अब तुम कुछ समय से गृहस्थ में चले गये हो, परन्तु फिर भी तुम्हारी आत्मा साधुवत् है और मेरे मन में तुम्हारे प्रति अत्यन्त उच्च भावना है, इसीलिए यह कुबेर यंत्र तुम्हें देना मैं अपना कर्त्तव्य समझता हूं।'

उनका यह कुबेर यंत्र आज भी मेरे पास सुरक्षित है और वास्तव में ही यह यंत्र आश्चर्यजनक सफलता एवं सिद्धि देने वाला है।

एक बार दीपावली को मुझे एक अत्यन्त श्रेष्ठ उद्योगपति के यहां लक्ष्मी पूजन के लिए निमंत्रण मिला, यद्यपि मैं व्यस्त था, परन्तु उनका आग्रह ज्यादा था और पिछले बीस वर्षों से उनका मुझसे मधुर सम्बन्ध रहा है, अतः व्यस्तता होने पर भी मैंने दीपावली की रात्रि को लक्ष्मी पूजन कराने की स्वीकृति दे दी।

जब मैं पूजन कराने के लिए बैठा, तो उन्होंने तिजोरी से निकाल कर एक यंत्र मेरे सामने रखा और बताया, कि पिछली तीन पीढ़ियों से इस यंत्र की पूजा दीपावली की रात्रि को करते हैं। मेरे पड़दादा को यह यंत्र एक उच्चकोटि के महात्मा ने दिया था और कहा था, कि यह यंत्र घर की तिजोरी में रख देना और नित्य एक बार इसका दर्शन कर लेना, साथ ही साथ दीपावली की रात्रि को इसका पूजन करके पुनः तिजोरी में रख देना।

तब से हम प्रत्येक दीपावली को इस यंत्र की पूजा करते आ रहे हैं। मेरे पिताजी ने यह यंत्र मुझे दिया था और अब यह परम्परा बन गई है, कि सबसे बड़े पुत्र को ही यह यंत्र दिया जाय। आज हम जो कुछ भी हैं, इस यंत्र के फलस्वरूप ही हैं, ऐसा मेरे पिताजी ने मुझसे कहा था। मुझे ज्ञात नहीं है, कि यह यंत्र क्या है और इस यंत्र का क्या नाम है।

मैंने उस यंत्र का ध्यानपूर्वक अवलोकन किया, तो मैं सुखद

आश्चर्य में पड़ गया, क्योंकि यह मंत्र सिद्ध प्राण प्रतिष्ठायुक्त कुबेर यंत्र ही था, इसी प्रकार के यंत्र को मैं आबू में नंगा बाबा से प्राप्त कर चुका था और इसी यंत्र को मैं कुम्भ में स्वामी प्रवृज्यानन्द जी के पास देख चुका था।

वास्तव में ही यह यंत्र अपने आप में यंत्रराज है और तंत्र एवं मंत्र से सम्बन्धित समस्त ग्रंथों में इस यंत्र को सबसे अधिक महत्व दिया गया है। यह अलग बात है, कि यह यंत्र अपने आप में गोपनीय रहा है और सामान्य व्यक्तियों को सुलभ नहीं हो सका है।

यह यंत्र धातु का बना होना चाहिए, साथ ही साथ यह केवल विजय काल में ही निर्मित होना चाहिए, जब इस यंत्र का निर्माण हो जाय, तब पूर्ण विधि–विधान के साथ प्राण प्रतिष्ठा और चैतन्य विधान होना चाहिए, जिससे कि यह यंत्र पूर्ण प्रभाव युक्त हो सके।

इस प्रकार का यंत्र स्वयं ही सिद्ध होता है, किसी जटिल विधि–विधान की आवश्यकता नहीं होती। प्रत्येक गृहस्थ को चाहिए, कि शुभ स्थान पर इस यंत्र को स्थापित कर नित्य इसका दर्शन करे तथा अगरबत्ती व दीपक लगाये। यह यंत्र जिसके घर में या जिसके पास होता है, उसी को फलदायक होता है, किसी विशेष नाम से यंत्र का निर्माण नहीं होता। जिस प्रकार जहां पर भी दीपक लगाया जाता है, वहीं रोशनी हो जाती है, ठीक उसी प्रकार यह यंत्र जिस घर में भी होता है, उसी घर को ऊंचा उठाने व पूर्ण समृद्धि, सुख एवं सौभाग्य देने में सहायक होता है।

इस प्रकार मंत्र सिद्ध होने के बाद इस पर पांच लाख मंत्र जप करने से यह यंत्र चैतन्य होता है।

विधान

घर के पूजा स्थान में भगवती लक्ष्मी का चित्र स्थापित कर उसका षोडशोपचार पूजन कर लक्ष्मी का आवाहन करना चाहिए, पास में कुबेर यंत्र की स्थापना कर लेनी चाहिए।

सर्वप्रथम इस यंत्र का निर्माण किसी सुपात्र या अच्छे वर्ण वाले व्यक्ति से विजय काल में ही कराना चाहिए, फिर इस यंत्र का षोडशोपचार पूजन कर इसमें प्राण प्रतिष्ठा करनी चाहिए। इसके बाद निम्न विनियोग करना चाहिए।

विनियोग

ॐ अस्य श्री कुबेर मन्त्रस्य विश्रवा ऋषिः, बृहती छन्दः, शिवमित्र धनेश्वरो देवता दारिद्रय विनाशने पूर्ण समृद्धि सिद्धयर्थे जपे विनियोगः।

ध्यान

मनुजबाह्यविमान वरस्थितं
गरुडरत्ननिभं निधिनायकम्।
शिवसखं मुकुटादिविभूषितम्
वरगदे दधतं भज तुंदिलम्।।

इसके बाद कर न्यास और अंग न्यास करना चाहिए तथा सर्वतोभद्र मंडल बनाकर उस पर इस यंत्र को स्थापित करना चाहिए, उसके सामने ग्यारह दीपक लगाकर यंत्र पर दुग्धधारा देते हुए निम्न मंत्र से अभिषेक करना चाहिए –

मंत्र

।। ॐ श्रीं ॐ ह्रीं श्रीं ह्रीं क्लीं श्रीं क्लीं वित्तेश्वराय नमः।

तत्पश्चात् दस हजार पुष्पों से अभिषेक कर पुष्पांजलि देनी चाहिए और उस यंत्र पर निम्न कुबेर मंत्र का पांच लाख मंत्र जप स्फटिक माला से करना चाहिए, तब यंत्र पूर्ण चैतन्य होता है।

कुबेर मंत्र

।। ॐ यक्षाय कुबेराय वैश्रवणाय धनधान्यादिपतये
धनधान्यसमृद्धिं मे देहि दापय स्वाहा।।

जब पांच लाख मंत्र जप हो जाय, तब उसका दशांश घृत यज्ञ करना चाहिए, जिससे कि यंत्र पूर्ण फलदायक हो जाता है।

इस प्रकार का सिद्ध यंत्र अपने आप में ही दुर्लभ होता है और यह यंत्र वास्तव में ही यंत्रराज कहलाने में सक्षम है, क्योंकि आज के युग में मानव की प्रतिष्ठा सम्पत्ति आदि से ही आंकी जाती है। अतः प्रत्येक

व्यक्ति या गृहस्थ का कर्तव्य है, कि वह पूर्ण भौतिक उन्नति और आर्थिक समृद्धि प्राप्त कर जीवन की उच्चता प्राप्त करे।

प्रयत्न या परिश्रम के साथ ही साथ यदि मंत्र आदि का सहारा लिया जाय, तो निश्चय ही वह पूर्ण उन्नति और समृद्धि प्राप्त कर सकता है।

आर्थिक उन्नति, व्यापार वृद्धि एवं पूर्ण सुख सौभाग्य प्राप्त करने के लिए इससे श्रेष्ठ न तो कोई साधना है और न कोई यंत्र ही।

इस यंत्र की सबसे बड़ी विशेषता यह है, कि नित्य इसका पूजन आवश्यक नहीं है, अपितु केवल मात्र इसका दर्शन ही पर्याप्त है। इस यंत्र को घर के पूजा स्थान में, कारखाने में, उद्योग स्थान पर स्थापित किया जा सकता है, स्थापित करते समय भी किसी प्रकार की विधि–विधान की आवश्यकता नहीं होती, केवल मात्र इसकी उपस्थिति ही कुबेरवत् उन्नति देने में समर्थ है।

वास्तव में ही हम भारतवासी सौभाग्यशाली हैं, कि हमारे पूर्वजों ने इतने श्रेष्ठ मंत्र और साधनाओं को हमारे सामने रखा और हम उसका लाभ उठाने में समर्थ हो सके हैं, पर जैसा कि तुलसीदास जी ने कहा है –

सकल पदारथ है जग माहीं,
भाग्यहीन नर पावत नाहीं।

अतः इस प्रकार का यंत्र भाग्यशाली व्यक्ति ही अपने घर में स्थापित कर पाते हैं।

यह यंत्र जीवन में पूर्णता, श्रेष्ठता, दिव्यता, उच्चता, समृद्धि, सुख–सौभाग्य, व्यापार वृद्धि, आर्थिक उन्नति, पुत्र सुख, दीर्घायु, स्वस्थता एवं सभी प्रकार के सुख–सौभाग्य प्रदान करने में समर्थ है, क्योंकि अष्टलक्ष्मी साधना का समावेश स्वतः ही कुबेर यंत्र में हो जाता है।

अभी तक यह यंत्र गोपनीय रहा है, परन्तु मेरा कर्तव्य है, कि मैं अपने पाठकों को इस गोपनीयता से परिचित कराऊं और वे इस मंत्र और यंत्र का पूर्ण लाभ उठाकर जीवन में सभी प्रकार से पूर्णता प्राप्त कर सकें।



हनुमान साधना

हनुमान–साधना, जीवन की श्रेष्ठ साधनाओं में से एक है, भारत के लाखों–करोड़ों साधक हनुमान के उपासक हैं और हनुमान को ही अपना इष्ट मानते हैं।

जीवन में ओज, बल, बुद्धि, साहस एवं पराक्रम के लिए हनुमान साधना श्रेष्ठ साधना मानी गई है। प्रस्तुत है इस सम्बन्ध में पाठकों के लिए महत्वपूर्ण एवं श्रेष्ठ साधनात्मक लेख –

अतुलितबलधामं हेमशैलाभदेहं,
दनुजवनकृशानुं ज्ञानिनामग्रगण्यम्।
सकलगुणनिधानं वानराणामधीशं;
रघुपतिप्रियभक्तं वातजातं नमामि।।

जो अतुल बल के धाम हैं, सोने के पहाड़ के समान कान्तियुक्त शरीर वाले, दैत्यों का नाश करने के लिए अग्नि रूप, ज्ञानियों में अग्रगण्य, सम्पूर्ण गुणों के निधान, वानरों के स्वामी और जो श्री रघुनाथ जी के प्रिय भक्त हैं, उन पवनपुत्र श्री हनुमान जी को मैं श्रद्धायुक्त प्रणाम करता हूं।

हनुमान उपासना अत्यन्त महत्वपूर्ण और श्रेष्ठ उपासना है, क्योंकि इसका प्रभाव तुरन्त और अनुकूल होता है।

संसार में प्रत्येक स्थान पर श्री हनुमान जी से सम्बन्धित मन्दिर हैं। इनके बारे में अनेक साधना पद्धतियां हैं और जो उच्चकोटि के साधक हैं, वे हनुमान साधना करके अपने जीवन को पूर्णता देते हैं।

प्रस्तुत साधना को उच्चकोटि के साधक ही नहीं, अपितु सामान्य गृहस्थ व्यक्ति भी कर सकते हैं, जिससे कि वे हनुमान उपासना करके जीवन को पूर्णता दे सकें।

वस्तुतः शत्रुओं पर हावी होने, मुकदमे में सफलता, घर में भूत–पिशाच आदि बाधाओं को दूर करने, किसी भी प्रकार की बीमारी और कमजोरी को जड़–मूल से नष्ट करने और समस्त प्रकार की सफलता के लिए हनुमान की उपासना अत्यन्त महत्वपूर्ण मानी गयी है।

सावधानियां

हनुमान की उपासना में साधक को कुछ विशेष सावधानियां बरतनी चाहिए, साथ ही साथ इस सम्बन्ध में कई प्रकार की शंकाएं जन मानस में हैं। मैं उन शंकाओं की निवृत्ति और साधना से सम्बन्धित कुछ जानकारियां स्पष्ट कर रहा हूं –

1 हनुमान साधना करते समय पूरी सावधानी बरतनी आवश्यक होती है। अतः साधना काल में साधक को किसी भी प्रकार की शिथिलता नहीं बरतनी चाहिए।

2 हनुमान साधना में ब्रह्मचर्य व्रत पालन करना आवश्यक है, जब तक साधना या अनुष्ठान चले, साधक स्त्री संसर्ग न करे और न किसी प्रकार की स्त्री चर्चा या कामुक चर्चा करे।

3 हनुमान की मूर्ति को जल से और पंचामृत से स्नान कराने के बाद, सिन्दूर में तिल के तेल को मिलाकर पूरे विग्रह पर लगाना चाहिए, इससे हनुमान प्रसन्न होते हैं।

4 हनुमान को लाल पुष्प प्रिय हैं, अतः लाल पुष्पों को ही चढ़ावें।

5 नैवेद्य में गुड़ और गेहूं की रोटी का चूरमा चढ़ा सकते हैं।

6 हनुमान की उपासना में चरणामृत का विधान नहीं है, अतः चरणामृत का प्रयोग नहीं किया जाता।

7 हनुमान उपासना में दक्षिण दिशा की तरफ मुंह करके साधक को मंत्र जप करना चाहिए।

8 श्री हनुमान जी को जो भी प्रसाद चढ़ाया जाय, वह शुद्ध घी में

शुद्धता पूर्वक बनाया हुआ होना चाहिए।

9 हनुमान की उपासना पुरुष या स्त्री कोई भी कर सकता है। जन साधारण में जो यह भावना, कि स्त्री वर्ग यह उपासना नहीं कर सकता, भ्रामक है, यह बात अवश्य है, कि रजस्वला समय में भूल करके भी हनुमान उपासना नहीं करनी चाहिए।

10 कुछ साधुओं के मुंह से यह सुनने में आया है, कि हनुमान की पूजा सवा पहर दिन चढ़ने से पूर्व नहीं करनी चाहिए, क्योंकि उस समय वे श्री राम की सेवा में होते हैं और उनको स्मरण करने से उनकी सेवा में बाधा आती है, परन्तु यह तथ्य भी भ्रामक है और शास्त्रों में ऐसा निषेध कहीं पर भी नहीं है। प्रातःकाल या सायंकाल अथवा रात्रि को भी हनुमान उपासना या हनुमान अनुष्ठान सम्पन्न किया जा सकता है।

11 यदि मंगलवार से हनुमान उपासना प्रारम्भ की जाय, तो ज्यादा अनुकूल है; हनुमान उपासना प्रारम्भ करने के लिए कोई विशेष मुहूर्त आदि देखने की जरूरत नहीं है, इसके लिए मंगलवार सर्वश्रेष्ठ दिन है।

कुछ विशेष सिद्ध मंत्र

गृहस्थ साधकों के लिए कुछ विशेष मंत्र दे रहा हूं, जिनका प्रभाव तुरन्त होता है और ऐसा प्रयोग करने पर अवश्य ही सफलता प्राप्त होती है। ये सभी प्रयोग मंगलवार से प्रारम्भ किये जा सकते हैं। इन प्रयोगों में हनुमान सिद्धि यंत्र तथा मूंगा माला का प्रयोग किया जाता है, प्रयोग के प्रारम्भ में कार्य के अनुसार संकल्प अवश्य लें।

कार्य सिद्धि मंत्र

यदि कार्य की सफलता में बाधाएं आ रही हों या कार्य सफल नहीं हो रहे हों, तो यंत्र का पूजन कर निम्न मंत्र का चालीस दिन तक जप करने से कार्य सिद्ध हो जाता है, इसमें नित्य चालीस मालाएं फेरनी आवश्यक हैं।

मंत्र

॥ ॐ हनुमते नमः ॥

प्रयोग समप्ति के पश्चात् किसी मंगलवार को यंत्र व माला हनुमान मंदिर में चढ़ा दें।

रक्षा मंत्र

यदि कोई परेशानी हो या शत्रु भय हो, तो निम्न मंत्र का कुल दस हजार जप करें। यह सम्पूर्ण मंत्र जप ग्यारह दिन में पूर्ण हो जाना चाहिए।

मंत्र

॥ अंजना गर्भसम्भूत कपीन्द्र सचीवेत्तम।
रामप्रिय नमस्तुभ्यं हनुमत् रक्ष सर्वदा॥

मंत्र जप के पश्चात् यंत्र व माला को नदी में प्रवाहित कर दें या हनुमान मंदिर में चढ़ा दें।

लक्ष्मी प्राप्ति मंत्र

आर्थिक उन्नति एवं व्यापारिक वृद्धि के लिए निम्न प्रयोग अत्यन्त अनुकूल माना गया है। इस प्रयोग में नित्य 11 माला मंत्र जप 11 दिन तक किया जाता है। मंत्र निम्न है –

मंत्र

मर्कटेश महोत्साह सर्वशोकविनाशने।
शत्रून् संहर मे रक्ष श्रियं दापय मे प्रभो॥

प्रयोग समाप्ति के बाद यंत्र व माला को नदी में प्रवाहित कर दें।

महामंत्र

यह मंत्र बारह अक्षरों का महामंत्रराज कहा गया है और इस मंत्र के प्रभाव से असम्भव कार्य भी सम्भव किये जा सकते हैं।

जो मनुष्य नित्य रात्रि को ग्यारह सौ मंत्र जप अर्थात् 11 माला करता हुआ, दस दिनों तक यह मंत्र जप करता है, तो उसे किसी भी प्रकार की कोई तकलीफ नहीं रहती और उसका कार्य निश्चित सिद्ध होता है।

इस मंत्र के कुछ और लाभ भी हैं –

1 यदि यह मंत्र 108 बार पढ़कर उससे अभिमन्त्रित जल सांप काटे हुए या बिच्छू के डंक या किसी भी प्रकार के विष से प्रभावित व्यक्ति को पिला दिया जाय, तो विष का प्रभाव दूर हो जाता है।

2 यदि 108 बार इस मंत्र से अभिमन्त्रित कर जल को ज्वर ग्रस्त व्यक्ति को पिला दिया जाय, तो शीघ्र ही वह ज्वर से ठीक हो जाता है।

3 यदि भस्म पर 108 बार इस मंत्र का उच्चारण कर वह भस्म रोगी के शरीर पर या घाव पर लगाया जाय, तो वह घाव समाप्त हो जाता है।

मंत्र

॥ ह्रौं ह्स्फ्रें ख्फ्रें ह्स्त्रौं ह्स्ख्फ्रें ह्सौं हनुमते नमः ॥

प्रयोग समाप्ति पर यंत्र व माला को नदी में प्रवाहित कर दें।

प्रत्यक्ष दर्शन

यदि कोई साधक हनुमान के प्रत्यक्ष दर्शन करना चाहता है, तो उसे ग्यारह दिन में निम्न मंत्र का एक लाख मंत्र जप करना चाहिए, ऐसा करने पर निश्चय ही हनुमान जी उसके सामने प्रत्यक्ष होते हैं और साधक की मनोकामना पूर्ण करते हैं।

मंत्र

॥ ॐ नमः हनुमते मम मदनक्षोभं संहर संहर आत्मतत्वं प्रकाशय प्रकाशय हुं फट् स्वाहा॥

प्रयोग समाप्ति के पश्चात् माला को धारण कर लें व यंत्र को हनुमान मंदिर में चढ़ा दें।

प्रेत बाधा निवारण के लिए

यह मंत्र दस हजार जप करने पर सिद्ध हो जाता है और इसके बाद यदि किसी को प्रेत बाधा हो, तो केवल एक माला फेरने से ही उस घर से प्रेत बाधा समाप्त हो जाती है या व्यक्ति प्रेत बाधा से मुक्त हो जाता है।

मंत्र

॥ ॐ दक्षिण मुखाय पंचमुख हनुमते करालवदनाय नारसिंहाय ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः सकल भूत प्रेत दमनाय स्वाहा॥

मंत्र सिद्ध होने के बाद यंत्र व माला को नदी में प्रवाहित कर दें।

शत्रु संकट निवारण के लिए

यंत्र को कुंकुम से रंगे लाल रंग के चावलों पर स्थापित कर यह साधना सम्पन्न करें। यह मंत्र पन्द्रह हजार जपने से सिद्ध हो जाता है, सिद्ध होने के बाद यदि नित्य इस मंत्र की एक माला **'मूंगे की माला'** से फेरे, तो निश्चय ही वह अपने शत्रुओं पर हावी हो सकता है। मंत्र जप करते समय तेल का दीपक लगाना चाहिए।

मंत्र

॥ ॐ पूर्व कपिमुखाय पंचमुख हनुमते टं टं टं टं टं सकल शत्रु संहरणाय स्वाहा॥

साधना की समाप्ति पर चावलों समेत यंत्र व माला को लाल रंग के वस्त्र में बांधकर पीपल की जड़ में दबा दें।

वस्तुतः यह मंत्र महत्वपूर्ण है, प्रत्येक साधक को यह साधना अवश्य करना चाहिए।

मनोकामना सिद्धि प्रयोग

यह मंत्र सर्वश्रेष्ठ मंत्र है और किसी भी प्रकार की मनोकामना सिद्धि के लिए इस मंत्र का प्रयोग किया जा सकता है। शनिवार के दिन

हनुमान जी को तेल चढ़ाकर यह मंत्र जप प्रारम्भ करना चाहिए और केवल इक्कीस हजार मंत्र जपने पर मंत्र सिद्ध हो जाता है।

मंत्र सिद्ध होने के बाद साधक केवल पांच बार इस मंत्र का उच्चारण कर कार्य सिद्धि के लिए रवाना हो, तो निश्चय ही उसे कार्य में सफलता प्राप्त होती है। यह मंत्र अनुभूत है और सैकड़ों लोगों ने इसका लाभ उठाया है।

मंत्र

॥ ॐ नमो हनुमते सर्वग्रहान् भूतभविष्यद्वर्तमानाम् दूरस्थसमीप स्थान् छिन्धि छिन्धि भिन्धि भिन्धि सर्वकाल दुष्टबुद्धिमुच्चाटयोच्चाटय परबलान् क्षोभय क्षोभय मम सर्वकार्याणि साधय साधय, ॐ नमो हनुमते ॐ ह्रां ह्रूं फट् देहि ॐ शिव सिद्धिं ॐ ह्रां ॐ ह्रीं ॐ ह्रूं ॐ ह्रैं ॐ ह्रौं ॐ ह्रः स्वाहा ॥

प्रयोग समाप्ति के बाद यंत्र व माला को नदी में प्रवाहित कर दें।

कुछ विशिष्ट प्रयोग

यदि कोई मानसिक चिन्ता हो और साधक शनिवार के दिन हनुमान का पूजन कर उनकी मूर्ति पर तेल चढ़ावे, तो उसकी चिन्ता मिट जाती है, इसी प्रकार यदि पांच शनिवार तक प्रत्येक शनिवार को तेल चढ़ावे, तो निश्चय ही उसकी समस्या का समाधान हो जाता है।

यदि किसी महिला को किसी भी प्रकार की कोई परेशानी हो और वह मंगलवार को एक स्थान पर बैठकर हनुमान का ध्यान कर बाएं हाथ से भोजन करे, इस प्रकार पांच मंगलवार तक प्रयोग करे, तो वह जो चाहती है, वह कार्य अवश्य ही सम्पन्न हो जाता है।

यदि कोई विद्यार्थी परीक्षा में पास होना चाहता है, तो वह हर शनिवार को तेल का दीपक हनुमान जी के सामने रखे, ऐसा पांच शनिवार तक करने पर उसे परीक्षा में सफलता प्राप्त होती है।

किसी भी प्रकार की तकलीफ हो या किसी भी प्रकार की कोई इच्छा हो, यदि कोई साधक नित्य ग्यारह बार बजरंग बाण का पाठ करे और इस प्रकार चालीस दिनों तक कार्य करे, तो निःसन्देह उसका

मनोरथ पूर्ण हो जाता है और उसे कार्य में पूर्ण सफलता मिल जाती है।

अब मैं कुछ हनुमान से सम्बन्धित साबर मंत्र दे रहा हूं, यद्यपि ये साबर मंत्र पढ़ने में सामान्य दिखाई दे रहे हैं, परन्तु इनका प्रभाव निःसन्देह श्रेष्ठ होता है।

शरीर रक्षा के लिए

शनिवार की रात्रि को हनुमान यंत्र के समक्ष लाल हकीक माला से इस मंत्र का एक हजार बार जप करने से मंत्र सिद्ध होता है। इसके बाद इस मंत्र के तीन बार उच्चारण मात्र से कार्य सिद्ध होता है।

मंत्र

॥ ॐ नमः वज्र का कोठा जिसमें पिण्ड हमारा पैठा ईश्वर कुंजी ब्रह्म का ताला मेरे आठों याम का यति हनुमंत रखवाला, शब्द साचा पिण्ड काचा फुरो मंत्र ईश्वरो वाचा॥

प्रयोग की समाप्ति पर यंत्र तथा माला को नदी में प्रवाहित कर दें।

पीलिया रोग निवारण के लिए

शनिवार की रात्रि को हनुमान यंत्र के समक्ष मूंगे की माला से निम्न मंत्र का एक हजार बार मंत्र जप करने से यह मंत्र सिद्ध हो जाता है। मंत्र सिद्ध होने के बाद जिस रोगी को पीलिया हो, उस पर केवल पांच बार मंत्र जप करने से पीलिया रोग धीरे–धीरे समाप्त हो जाता है।

मंत्र

॥ ॐ नमः वीर वैताल असराल नारसिंह देव खादो तुषादी पीलिया कूं भिदाती कारै झारै पीलिया रहे न नेक निशान जो कहीं रह जाय तो हनुमन्त की आन मेरी भक्ति गुरु की शक्ति फुरो मंत्र ईश्वरो वाचा॥

साधना समाप्ति के बाद यंत्र तथा माला को हनुमान मंदिर में रख दें।

वस्तुतः हनुमान उपासना इस युग में अत्यन्त महत्वपूर्ण और शीघ्र

सफलता दायक है। यदि साधक इस उपासना को करे, तो निश्चय ही वह विशेष सफलता प्राप्त कर सकता है।



बिच्छू झाड़ने का मंत्र

आज भी किसी किसी ग्रामीण अंचल में बिच्छू के काटने पर वहां के निवासी किसी डॉक्टर या दवा का सहारा नहीं लेते, अपितु वे मंत्रों के माध्यम से ही इसका इलाज करते हैं और पूर्णतः स्वस्थ हो जाते हैं।

इस मंत्र की साधना 11 दिन में सम्पन्न होती है, इसके लिए शुक्रवार के दिन बाजोट पर काले रंग का वस्त्र बिछाकर, उस पर सिद्धि यंत्र को स्थापित कर यंत्र का पूजन करें, उसके समक्ष तेल का दीपक लगायें तथा काली हकीक माला से निम्न मंत्र का एक लाख मंत्र जप करें –

मंत्र

॥ॐ नमो आदेश गुरु को, कालो बिच्छू कांकर वालो, उत्तर बिच्छू न कर टालो, उतरे तो उतारुं, चढ़ै तो मारुं, गरुड़ मोरपंख कालूं, शब्द सांचा पिंड कांचा फुरो मंत्र ईश्वरो वाचा॥

एक लाख जप करने पर यह मंत्र सिद्ध हो जाता है। जब यह मंत्र सिद्ध हो जाय, तो ग्यारहवें दिन रात्रि को ही यंत्र तथा माला को उसी काले रंग के वस्त्र में लपेट कर किसी निर्जन स्थान में रख दें तथा मिट्टी के दीये में तेल का दीपक जलाकर उसके उसपर रख दें।

जब किसी व्यक्ति को बिच्छू काट ले, तो उसे सामने बिठा कर उस स्थान पर दोनों हाथों से, तेजी से फेरते हुए, मात्र तीन बार इस मंत्र को पढ़ने से बिच्छू का जहर उतर जाता है और व्यक्ति हंसता हुआ घर जाता है। 

कनकधारा यंत्र साधना

पिछले कुछ वर्षों के अनुभव, प्रयोग, परीक्षण और प्रभाव को देखने के बाद पूरे विश्व के तांत्रिक, मंत्र–मर्मज्ञ एवं विद्वान इस निष्कर्ष पर पहुंचे हैं, कि आज के अनास्थावादी युग में भी **'कनकधारा यंत्र'** अचूक एवं शीघ्र फलदायक होने के कारण यह विश्वास दिलाने में समर्थ है, कि अभी मंत्र–तंत्र का लोप नहीं हुआ है; अब भी कुछ यंत्र ऐसे हैं, जिनका प्रभाव निश्चित होता है और आश्चर्यजनक होता है।

विश्व के प्रसिद्ध मंत्र मर्मज्ञ **'हिरकोन'** ने अपने जीवन के अन्तिम चरण में निष्कर्ष पर आते हुए कहा, कि **'कनकधारा यंत्र'** भारतवर्ष की अमूल्य थाती है, जिसके बल पर ही वह **'सोने की चिड़िया'** कहला सका, इस यंत्र में दरिद्रता विनाश का अद्भुत गुण है, यह यंत्र जहां भी होता है वहीं अपना प्रभाव बिखेरने लग जाता है। जिस प्रकार अगरबत्ती जहां पर भी जलेगी, वहीं सुगन्ध फैलती है, इसी प्रकार यह यंत्र भी जहां रहता है, वहीं स्वर्ण वर्षा सी करने की स्थिति पैदा कर देता है।

जर्मनी के प्रसिद्ध विद्वान **'श्मेतजर'** ने कनकधारा यंत्र के बारे में स्वतन्त्र लेख लिखते हुए अपना निष्कर्ष स्पष्ट किया है, कि जिस दिन विश्व कनकधारा यंत्र के मूल रहस्य को समझ लेगा, उस दिन उसे किसी भी प्रकार का आर्थिक अभाव नहीं रहेगा।

भारत के तांत्रिक सम्राट त्रिजटा अघोरी ने स्पष्ट शब्दों में बताया है, कि यदि हमारे सभी तंत्र–मंत्र के ग्रंथ नष्ट हो जायें, पर केवल कनकधारा यंत्र व उसकी रहस्य विधि बची रह जाय, तब भी हम धनी हैं, विश्व में सर्वोपरि हैं, संसार में सर्वश्रेष्ठ हैं।

प्रसिद्ध मंत्र शास्त्री **'हरिपाद ब्रह्मचारी'** ने **'कनकधारा यंत्र रहस्य'** शीर्षक ग्रंथ की रचना की है, जो हस्तलिखित दुर्लभ प्रति है, जिसके अन्त में निष्कर्ष स्वरूप उन्होंने लिखा है – हमारे भारतवर्ष में कनकधारा यंत्र जैसी अद्भुत वस्तु मौजूद है, फिर भी हम गरीब हैं, यह आश्चर्य नहीं तो और क्या है?

कनकधारा स्तोत्र

कथा प्रसिद्ध है, कि आचार्य शंकराचार्य एक दिन भिक्षा के लिए, एक सद्गृहस्थ के द्वार पर पहुंचे और 'भिक्षां देहि' का घोष किया, वह ब्राह्मण परिवार अत्यन्त दरिद्र था, अपने द्वार पर एक तेजस्वी अतिथि को देखकर गृहणी लाज से गड़ गयी, क्योंकि उसके घर में भिक्षा देने के लिए कुछ भी नहीं था, पूरे घर को छानने पर एक सूखा हुआ आंवला उस ब्राह्मणी को मिला, जिसे लेकर वह झर–झर रोती हुई, भिक्षा देने के लिए द्वार पर आई तथा अत्यन्त संकोच के साथ वह उसे अर्पण करने लगी।

शंकराचार्य को उसकी दुरावस्था पर तरस आ गया, उन्होंने वहीं बैठकर तत्काल ऐश्वर्य की अधिष्ठात्री देवी, वात्सल्यमयी भगवती महालक्ष्मी की स्तुति प्रारम्भ की और उनकी वाणी से अनायास ही करुणापूर्ण ऐसी कोमल कान्त पद्यावली प्रस्फुटित हुई, जिसे सुनकर भगवती महालक्ष्मी देखते–देखते आचार्य के सम्मुख अपने त्रिभुवन मोहन रूप में प्रगट हो गयी और कोमल शब्दों में पूछा – 'मुझे कैसे स्मरण किया?'

आचार्य शंकर ने सारी कथा कह सुनाई और प्रार्थना की, कि उस गरीब ब्राह्मणी की दरिद्रता को दूर करें। भगवती लक्ष्मी ने बताया, कि उस गृहस्थ का प्रारब्ध ऐसा नहीं है, कि उसे इस जन्म में धन प्राप्त हो। आचार्य ने विगलित कंठ से निवेदन किया, तो **महालक्ष्मी ने बताया, कि 'इसके घर में कनकधारा यंत्र रख कर इस स्तोत्र का पाठ करो, तो इसका दुर्भाग्य टल सकता है।''**

शंकराचार्य ने ऐसा ही किया और उसी समय उस गरीब ब्राह्मण के आंगन में सोने की वर्षा हुई, जिसके फलस्वरूप उस गृहस्थ का दारिद्र्य सदा के लिए मिट गया और वह प्रचुर धन–सम्पत्ति का स्वामी हो गया।

प्रसिद्ध ग्रंथ **'शंकर दिग्विजय'** के चतुर्थ सर्ग में इस घटना का स्पष्ट उल्लेख है, पर उसमें मात्र स्तोत्र का ही उल्लेख है, पर मुझे कई वर्षों पूर्व एक साधु से अत्यन्त पुरानी हस्तलिखित प्रति देखने को मिली थी, जिसमें ऊपर वाली घटना ज्यों की त्यों थी, पर साथ ही यह भी उल्लेख था, कि **'कनकधारा यंत्र निर्माण के बाद ही भगवती लक्ष्मी ने प्रसन्न होकर स्वर्ण वर्षा की'।**

हिमालय स्थित **'सिद्धाश्रम'** के मंत्र स्वरूप ऋषि **'कात्यायन जी'** ने भी इस बात की पुष्टि की थी, कि कनकधारा यंत्र महत्वपूर्ण है तथा व्यापार वृद्धि एवं दारिद्र्य नाश में अद्भुत प्रभावशाली है, उन्होंने ही मुझे इस यंत्र का स्वरूप व विधि समझाई थी।

'कनकधारा' यंत्र का स्वरूप

कनकधारा यंत्र पंच त्रिकोणों से निर्मित है, यंत्र के चारों तरफ तीन परिधि खींची जाती है, जो कि तीन शक्तियों – महाकाली (शत्रु संहार कर्त्री), महालक्ष्मी (धन–धान्य प्रदान कर्त्री) तथा महासरस्वती (यश–सम्मान प्रदान कर्त्री) की प्रतीक है। इसके पश्चात् गोल घेरा त्रिभुवन सुन्दरी का प्रतीक है। तत्पश्चात् सोलह कमल दल हैं, जो कि कुबेर सहचर के प्रतीक हैं, जिनके नाम हैं –

1. धन, 2. धान्य, 3. पृथ्वी, 4. भवन, 5. कीर्ति, 6. आयु, 7. यश, 8. सम्पदा, 9. वाहन, 10. स्त्री, 11. सन्तान, 12. राज्य सम्मान, 13. स्वास्थ्य, 14. प्रफुल्लता, 15. भोग तथा 16. मोक्ष।

इसके बाद सोलह कमल दलों के भीतर अष्टदल का निर्माण होता है, जो कि अष्ट सिद्धियों का प्रतीक है, जिनके नाम –

1. अणिमा, 2. महिमा, 3. लघिमा, 4. प्राप्ति, 5. प्राकाम्य, 6. ईशिता, 7. वशिता तथा 8. ख्याति हैं, इसके पूजन से जीवन में किसी भी प्रकार का कोई अभाव नहीं रहता।

इस अष्टदल के भीतर का त्रिकोण दारिद्र्य धनदा लक्ष्मी का प्रतीक है, इसके भीतर का त्रिकोण भुवनेश्वरी लक्ष्मी का परिचायक है तथा त्रिकोण के मध्य का बिन्दु भगवती का सूचक है, जो कि समस्त अनिष्टों का नाश करने वाली तथा जीवन में प्रफुल्लता बढ़ाने वाली हैं,

साधक को इस बिन्दु पर स्वर्ण सिंहासनारूढ़ भगवती लक्ष्मी की कल्पना करनी चाहिए।

इस प्रकार से यह यंत्र समस्त प्रकार की धनदायक शक्तियों का परिचायक एवं सूचक है तथा इस यंत्र की पूजा इन सारी शक्तियों की समग्र पूजा है।

कनकधारा यंत्र धातु निर्मित होता है तथा यंत्र का निर्माण अत्यन्त पेचीदा एवं सूक्ष्म है। **'कनकधारा यंत्र रहस्य'** हस्तलिखित प्रति के अनुसार इसे कूर्मपृष्ठीय बनाना चाहिए तथा धातु निर्मित हो, इसके साथ ही **संजीवनी काल** में ही इस यंत्र का निर्माण हो, क्योंकि अशुद्ध एवं अप्रामाणिक यंत्र लाभ के बजाय हानि दे सकता है।

घर के अतिरिक्त दुकान, कारखाना, फैक्ट्री, व्यवसाय स्थल पर भी इस यंत्र को स्थापित किया जा सकता है। **'यंत्र राज'** ग्रंथ के अनुसार इस यंत्र को घर में स्थापित करने से अटूट लक्ष्मी प्राप्त होती है तथा लक्ष्मी का चिरकाल तक वास रहता है।

यंत्र तभी फलदायक हो सकता है, जब वह मंत्र सिद्ध प्राणप्रतिष्ठा युक्त हो, इस यंत्र पर संजीवनी सम्पुट युक्त प्राणप्रतिष्ठा होनी चाहिए। अपने घर में किसी भी बुधवार को इस यंत्र को स्थापित किया जा सकता है। गृहस्थ व्यक्तियों को यदि शुद्ध मन्त्रोच्चार एवं प्राणप्रतिष्ठा का ज्ञान न हो, तो उन्हें चाहिए, कि वे किसी योग्य विद्वान से प्राणप्रतिष्ठा युक्त मंत्र सिद्ध कनकधारा यंत्र ही लें।

कनकधारा विनियोग

ॐ अस्य श्री कनकधारा यंत्र मन्त्रस्य, श्री आचार्य श्री शंकर भगवत्पाद ऋषिः श्री भुवनेश्वरी ऐश्वर्यदात्री महालक्ष्मी देवता, श्रीं बीजम्, ह्रीं शक्तिः श्री विद्याः रजोगुण रसना ज्ञानेन्द्रियं भोग रसः, वाक् कर्मेन्द्रियं, मध्यमं स्वरं, द्रव्य तत्वं, विद्या कला, ऐं कीलनं, ब्रू उत्कीलनं प्रवाहिनी सचय मुद्रा, मम

क्षेमस्थैर्यायुरारोग्याभि वृद्धयर्थं श्री महालक्ष्मी अष्ट लक्ष्मी भगवती दारिद्र्य विनाशक धनदा लक्ष्मी प्रसाद सिद्धयर्थं च नमोयुत वाग् बीजं स्व बीजं लोम विलोम पुटितोक्त त्रिभुवन भूतिकरी प्रसीद मह्यम् माला मंत्र जपे विनियोगः।

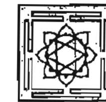
कनकधारा ध्यान

सरसिज निलये सरोज हस्ते,
धवल तमांशुक गन्ध माल्य शोभे।
भगवति हरि वल्लभे मनोज्ञे;
त्रिभुवन भूति करि प्रसीद मह्यम्॥

कनकधारा मंत्र

॥ ॐ वं श्रीं वं ऐं ह्रीं क्लीं कनकधारायै स्वाहा ॥

कनकधारा यंत्र एवं कनकधारा स्तोत्र का परस्पर घनिष्ठ सम्बन्ध है। व्यक्ति को चाहिए, कि वह अपने घर में मंत्र सिद्ध प्राणप्रतिष्ठा युक्त कनकधारा यंत्र स्थापित करे। कनकधारा स्तोत्र स्वयं मंत्रमय है, अतः विभिन्न सम्पुट देकर स्तोत्र पाठ से विभिन्न कार्य सम्पन्न किये जा सकते हैं। उदाहरणार्थ धनदा सम्पुट से अतुलनीय धन प्राप्ति, पुत्रेष्टि सम्पुट से पुत्र लाभ, संजीवनी सम्पुट से रोग मुक्ति एवं अष्ट लक्ष्मी सम्पुट से अटूट धन-सम्पत्ति प्राप्त की जा सकती है। विद्वानों के अनुसार **'श्रीयंत्र'** एवं **'कनकधारा यंत्र'** का अद्भुत सामंजस्य है, जिसके पास श्री यंत्र है, उसके लिए तो यह वरदान स्वरूप है। श्रीयंत्र के साथ ही कनकधारा यंत्र भी स्थापित करें, इसके समान सामंजस्य विश्व में दुर्लभ है।



बगलामुखी साधना

मुझे जीवन में प्रारम्भ से ही साधना करने का शौक रहा है और इसीलिए जब मैं सयाना हुआ और अपना भला–बुरा समझने लगा, तो मैंने यह पक्का निश्चय कर लिया, कि मुझे इस संसार के कार्यों से और गृहस्थ के जंजाल से कुछ भी लेना–देना नहीं है, मेरा रास्ता इन सबसे अलग हट कर है और मुझे उसी रास्ते का चयन करना है, जो साधना का रास्ता है, तपस्या का रास्ता है, पूर्णता का रास्ता है।

मेरे इस निर्णय से मेरे घर वाले परेशान हुए, उनके लिए यह सब आश्चर्यचकित कर देने वाला था। वे मुझे किसी नौकरी में लगाना चाहते थे, मेरी शादी करना चाहते थे और अपनी वंश वेल बढ़ाना चाहते थे, परन्तु इन सब में मेरी किसी प्रकार की कोई रुचि नहीं थी और मैंने अपने इस निश्चय को माता–पिता के सामने स्पष्ट कर दिया था।

मेरे दृढ़ निश्चय से माता–पिता ने स्वीकृति दे दी और मैं उस दिन से सभी प्रकार के बन्धनों से मुक्त हो गया। पहली बार मैंने अनुभव किया, कि मैं सर्वथा स्वतंत्र हूं, यह आकाश मेरा है, यह पृथ्वी मेरी है और यह प्रभु का बनाया हुआ समस्त व्योम मण्डल और ब्रह्माण्ड मेरा है।

इसके बाद की कहानी बहुत लम्बी है, वास्तव में ही यह रास्ता हर एक के लिए अनुकूल नहीं है, इस रास्ते में कांटे ज्यादा हैं फूल कम। परन्तु जो कुछ भी है, वह अपने आप में अन्यतम है, अद्वितीय है, इसकी तुलना संसार के ऊंचे से ऊंचे सुख से भी नहीं की जा सकती।

जब मैं अपने जीवन में पीछे मुड़ कर सरसरी निगाह से देखता हूं, तो मैं अनुभव करता हूं, कि इन पिछले वर्षों में मुझे परेशानियां और

दुःख मिले हैं, तो असाधारण सफलता और मानसिक शांति भी। इस अवधि में सैकड़ों योगियों और साधुओं से भेंट हुई है, उनसे मिला हूं और उनके आश्चर्यजनक कार्यों को भी अनुभव किया है। मैंने देखा है, कि वे असाधारण शक्ति सम्पन्न हैं, तो साथ–साथ अत्यन्त नम्र और क्षमाशील भी, किसी प्रकार का उद्वेग और मनस्ताप उनके मानस में नहीं रहता।

कुछ छोटी–मोटी साधनाएं मैंने सीखी थीं, शुरू–शुरू में मुझे कुछ असुविधा होती थी, परन्तु बाद में इनका व्यावहारिक ज्ञान प्राप्त हो गया था। मैंने यह अनुभव कर लिया था, कि किस प्रकार की साधना के लिए कौन सी युक्ति काम में ली जानी चाहिए और किस युक्ति से किस प्रकार की साधना सम्पन्न की जा सकती है।

बाद में एक योगी संन्यासी व्रजानन्द जी मिले और उनके साथ लगभग एक साल रहने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। इस एक वर्ष की अवधि में मुझे बहुत कुछ सीखने को मिला, उनके निर्देशन में एक महाविद्या भी सिद्ध की और छिन्नमस्ता साधना को भी पूर्णता दी। अब मैंने अनुभव कर लिया था, कि यदि आदमी हिम्मत और दृढ़ता का सहारा ले, तो वह महाविद्या साधना भी सम्पन्न कर सकता है।

गोपनीय तथ्य यह है, कि महाविद्या साधना में प्रवेश करने से पूर्व यह आवश्यक हो जाता है, कि व्यक्ति क्रोध रहित हो, क्योंकि इस प्रकार की साधनाओं में कई क्षण ऐसे भी आते हैं, जब आदमी झुंझला जाता है और ऐसी स्थिति में क्रोध आना स्वाभाविक है और यही क्रोध उसकी साधना को समाप्त कर देता है।

पर धीरे–धीरे आदमी अभ्यस्त हो जाता है और उसके बाद उसे जीवन में किसी भी स्थिति में क्रोध नहीं आता, अपितु वह स्वयं में संयत बना रहता है। यद्यपि आज के युग में इस प्रकार की स्थिति को कायरता कहा जाता है, पर मानवीयता की दृष्टि से यह उच्चस्तरीय गुण है और इस गुण का विकास पूर्णता से होने के बाद व्यक्ति महाविद्या साधना में प्रवेश पा सकता है और उसमें सफलता प्राप्त कर सकता है।

जब मैंने दो–दो महाविद्याएं सिद्ध कर ली, तो मैं यह निश्चय कर बैठा, कि अब मुझे दसों महाविद्याएं सिद्ध कर लेनी हैं और अपना नाम सिद्धाश्रम में अंकित करा देना है, परन्तु यह कार्य जितना आसान दिखाई

दे रहा था, उतना आसान नहीं था, फिर भी मेरा मानस अपने आप में स्पष्ट था और निश्चय कर चुका था, कि मैं अपने जीवन में इन दसों महाविद्याओं को सिद्ध करूंगा ही और इसके लिए अभी से क्रोध, मोह आदि पर पूरी तरह से नियन्त्रण प्राप्त करने का प्रयत्न करूंगा।

परन्तु इसी समय मुझे बगलामुखी साधना सिद्ध करने की धुन सवार हुई और मैंने यह निश्चय किया, कि पहले भगवती बगला की साधना को सम्पन्न कर उनके साक्षात् दर्शन प्राप्त करूं।

इसके लिए मैंने प्राचीन ग्रंथ टटोले, मंत्र महार्णव, मंत्र महोदधि आदि ग्रंथ सुलभ हैं और इन ग्रंथों में बगलामुखी साधना का विस्तार से विवेचन किया हुआ है, मैंने मंत्र महार्णव ग्रंथ में बताई हुई विधि के अनुसार साधना सम्पन्न करने का निश्चय किया।

साधना का मुझे ज्ञान और पूर्ण आत्मविश्वास था, इसलिए मुझे यह पक्का विश्वास था, कि मैं पहली बार में ही बगला साधना सम्पन्न कर लूंगा, परन्तु साधना की समाप्ति पर मुझे कुछ भी हाथ नहीं लगा।

मेरे लिए यह आश्चर्यजनक तथ्य था, फिर भी मैंने दूसरी बार मंत्र महोदधि ग्रंथ में बताई हुई विधि के अनुसार बगला साधना सम्पन्न करने का निश्चय किया और पूरी विधि के साथ साधना सम्पन्न की; परन्तु मेरा घोर दुर्भाग्य था, कि मैं दूसरी बार भी किंचित मात्र भी सफल नहीं हो सका और इससे मेरा सारा दर्प और घमण्ड चकनाचूर हो गया।

परन्तु मैं प्रारम्भ से ही हठी स्वभाव का हूं और दो बार की असफलता के बाद मेरा निश्चय और अधिक मजबूत हो गया, कि मुझे हर हालत में इस साधना को सम्पन्न करना ही है। सौभाग्य से इन्हीं दिनों एक तांत्रिक स्वामी से मेरी भेंट हो गयी, जो कि तंत्र के अच्छे मर्मज्ञ थे, मैंने उनसे बगलामुखी साधना के बारे में जानकारी चाही और उन्होंने पहली बार में ही मुझे इसकी पूरी विधि समझा दी।

स्वामी जी स्वयं बगलामुखी साधना सम्पन्न कर चुके थे, यह उनके शरीर के चिन्हों से ही स्पष्ट हो रहा था, मैंने उनकी बताई हुई विधि के अनुसार साधना करने का विचार किया और जंगल में स्थित अपनी गुफा में इस साधना को प्रारम्भ किया।

परन्तु तीसरी बार भी मुझे साधना में सफलता नहीं मिली, यद्यपि

साधना के मध्य काल में मुझे अनुभव अवश्य हुए, परन्तु अनुभव होना एक अलग बात है और पूर्णता दूसरी बात।

तीन बार की असफलता से मैं मन ही मन टूट चुका था, परन्तु मैंने हिम्मत नहीं हारी थी और मैंने किसी अघोरी से सम्पर्क स्थापित करने का निश्चय किया, जिससे कि मैं इस बार साधना को पूर्णता दे सकूं।

घूमते–घूमते उन्हीं दिनों मैं बनारस पहुंचा और वहां श्मशान के पास सौभाग्य से एक अघोरी से भेंट हो गयी, वह इस तंत्र विद्या का जानकार था। उसने कहा, कि मैं अघोर पद्धति से बगलामुखी साधना सम्पन्न करवा सकता हूं।

मुझे हर हालत में यह साधना सम्पन्न करनी ही थी, मैंने उन्हीं के साथ रह कर अघोर विधि से इस साधना को पूरा करने का निश्चय कर लिया, मेरा निवास श्मशान हो गया था और वहीं पर मैंने यह साधना प्रारम्भ कर दी।

दूसरे दिन भोर में ही वह अघोरी वहां से जा चुका था, पर मैंने साधना खण्डित नहीं होने दी तथा मैं उसी विधि से साधना सम्पन्न करता रहा; परन्तु यह मेरा घोर दुर्भाग्य था, कि चौथी बार इस अघोर पद्धति के द्वारा भी मुझे बगलामुखी साधना में सफलता नहीं प्राप्त हुई और पहली बार मुझे अपनी आंखों के सामने अंधेरा अनुभव हुआ।

मेरी हिम्मत भी जबाब दे गयी थी और मन के किसी कोने में यह विचार भी आने लग गया था, कि बगलामुखी साधना ही आधारहीन है, यह साधना सम्पन्न हो ही नहीं सकती; परन्तु मैंने ऐसे साधु और योगी देखे थे, जिन्होंने इस प्रकार की साधनाएं सम्पन्न की थीं और उनके शरीर पर बगला साधना के चिन्ह विद्यमान थे। अतः मेरी इस बात में कोई वजन नहीं था, कि बगलामुखी साधना व्यर्थ है या आधार हीन है।

इस प्रकार लगभग तीन–चार महीने बीत गये। एक दिन अचानक एक और योगी देहरादून के पास मिले, जो कि बगला के परम भक्त थे और उन्होंने तीनों विधियों से यह साधना सम्पन्न की थी।

मैंने जब अनुरोध किया, तो वे मान गये और पहले तांत्रोक्त विधि से बगलामुखी साधना सम्पन्न करवाई, पर मेरे लिए यह घोर आश्चर्य था, कि इस बार भी मुझे इस साधना में सफलता प्राप्त नहीं हुई।

स्वामी जी वहां से चले गये थे और मैं अपनी असफलता किसको कहता? मेरे सामने आत्महत्या के अलावा और कोई रास्ता नहीं था, मैंने एक दिन पक्का निश्चय कर लिया था, कि मुझे अब इस जीवन में रहने का कोई अधिकार नहीं है।

इसी बीच इलाहाबाद के आगे एक सद्गृहस्थ ब्राह्मण मिले और एक दिन चर्चा के दौरान मैंने अपनी व्यथा उनके सामने रख दी। उन्होंने अपने जीवन में बगलामुखी साधना सिद्ध की हुई थी। उन्होंने पहली बार बताया, कि जब तक बगला साधना में तुम विनियोग और न्यास नहीं करोगे, तब तक यह साधना सफल हो ही नहीं सकती, तुम्हें इसकी विधि के साथ ही साधना करनी चाहिए और तभी इसमें सफलता मिल सकेगी।

जब मैंने उन्हें बताया, कि मैं पांच बार इस साधना में असफल हो चुका हूं, तो उन्होंने कहा, कि चाहे तुम हजार बार असफल हो चुके हो, पर इस बार तुम मेरे घर पर रहकर इस साधना को सम्पन्न करो; मुझे पक्का विश्वास है, इस बार तुम अवश्य ही सफलता प्राप्त कर सकोगे।

मैं उनके घर पर ठहर गया, उन्होंने इस साधना की पूर्णता के लिए तीन महत्वपूर्ण नियम बताए, जो कि इस प्रकार हैं –

1. साधना काल में पीले वस्त्र ही धारण करने चाहिए।
2. ब्रह्मचर्य व्रत पूर्णता के साथ पालन हो और भूमि शयन करें तथा दिन में एक समय भोजन करें।
3. पीले रंग की हकीक माला या हल्दी की माला का ही प्रयोग करें।

मैंने शुभ मुहूर्त में साधना प्रारम्भ की, अपने सामने बगलामुखी देवी का चित्र और बगलामुखी यंत्र स्थापित किया और विधि–विधान के साथ उन्हें मंत्र सिद्ध प्राणप्रतिष्ठा युक्त किया।

मैं पाठकों की जानकारी के लिए, नित्य किये जाने वाले विनियोग और न्यास स्पष्ट कर रहा हूं, यह प्रयोग नित्य किए जाने आवश्यक हैं।

यह साधना रात्रि को दस बजे के बाद ही प्रारम्भ करनी चाहिए, सामने घी का दीपक लगा हो अगरबत्ती आवश्यक नहीं है, साधक का मुंह पश्चिम या दक्षिण दिशा की तरफ हो।

सबसे पहले हाथ में जल लेकर विनियोग करें, फिर ऋष्यादि न्यास, कर न्यास, षडंग न्यास करे, इसके बाद व्यापक न्यास करते हुए

पीठ शक्तियों का पूजन यंत्र पर ही करें, तत्पश्चात् बगलामुखी देवी का ध्यान करते हुए दस बार बगला गायत्री और दस बार महारुद्र मंत्र स्मरण करें, अन्त में बगलामुखी मूल मंत्र की इक्यावन मालाएं फेरें।

नित्य इक्यावन मालाएं पूरी होने के बाद बगलामुखी को ही जप समर्पण कर दें।

इस प्रकार का यह प्रयोग इक्कीस दिन का है, बीसवें या इक्कीसवें दिन निश्चय ही भगवती बगला प्रत्यक्ष स्पष्ट होती हैं और साधक के पास ही उसके सामने मोहक रूप में बैठ कर वरदान मांगने को कहती हैं।

ऐसी स्थित आने पर साधक उन्हें दोनों हाथों से प्रणाम करें और वरदान मांगें, कि मैं जब भी आपको स्मरण करूं, आप प्रत्यक्ष दर्शन दें और जिस प्रकार से भी अपने शत्रु का संहार चाहूं उसी प्रकार से शत्रु संहार हो और जिस किसी के लिए भी मैं कार्य करूं, उस व्यक्ति का भी कार्य सम्पन्न हो। ऐसी प्रार्थना करने पर भगवती बगला 'तथास्तु' कहती हुई अन्तर्ध्यान हो जाती हैं।

यह साधना मंत्रात्मक है, अतः उसका सौम्य रूप ही सामने प्रगट होता है, यदि तामसी या तांत्रोक्त साधना सम्पन्न की जाय, तब भगवती का विकराल रूप सामने प्रत्यक्ष होता है।

इस बार पूज्य ब्राह्मण देवता के घर में रहकर उनकी बताई हुई विधि के अनुसार साधना करने पर मुझे भगवती बगलामुखी के प्रत्यक्ष दर्शन हुए और मेरे जीवन की एक बहुत बड़ी साध या इच्छा पूरी हुई। मैं पूज्य ब्राह्मण देवता के अनुरोध को रखता हुआ उनका नाम यहां स्पष्ट नहीं कर रहा हूं, पर उन्होंने जो विधि बताई थी, वह इस प्रकार है –

विनियोग

ॐ अस्य श्री ब्रह्मास्त्र विद्या बगलामुखी महामन्त्रस्य नारद ऋषिः अनुष्टुप् छन्दः। श्री बगलामुखी देवता। ह्रीं बीजं। स्वाहा शक्तिं। ॐ कीलकं। श्री बगलामुखी

देवता प्रसाद सिद्धयर्थे जपे विनियोगः।

ऋष्यादि न्यास

ॐ नारद ऋषये नमः शिरसि।
त्रिष्टुप् छन्दसे नमः मुखे।
श्री बगलामुखी देवतायै नमः हृदि।
ह्रीं बीजाय नमः गुह्ये।
स्वाहा शक्तये नमः पादयोः।
ॐ कीलकाय नमः नाभौ।
श्री बगलामुखी वर प्रसाद सिद्धयर्थे नमः सर्वांगेषु।।

कर न्यास

ॐ ह्रीं अंगुष्ठाभ्यां नमः।
बगलामुखी तर्जनीभ्यां नमः।
सर्वदुष्टानां मध्यमाभ्यां नमः।
वाचं मुखं पद स्तम्भय अनामिकाभ्यां नमः।
जिह्वां कीलय कनिष्ठिकाभ्यां नमः।
बुद्धिं विनाशय ह्रीं ॐ स्वाहा
करतल कर पृष्ठाभ्यां नमः।।

षडंग न्यास (हृदयादि न्यास)

ॐ ह्रीं हृदयाय नमः।
बगलामुखी शिरसे स्वाहा।
सर्वदुष्टानां शिखायै वषट्।
वाचं मुखं पदं स्तम्भय कवचाय हुं।
जिह्वां कीलय नेत्र त्रयाय वौषट्।
बुद्धिं विनाशय ह्रीं ॐ स्वाहा अस्त्राय फट्।

व्यापक न्यास

श्री बगलामुखी देवी के निम्न मंत्र से तीन बार व्यापक न्यास करें –

ॐ ह्रीं बगलामुखि सर्वदुष्टानां वाचं मुखं पदं स्तम्भय जिह्वां कीलय बुद्धि विनाशय ह्रीं ॐ स्वाहा।।

पीठ शक्तियों का पूजन

ॐ जयायै नमः।। ॐ विजयायै नमः।। ॐ अजितायै नमः।। ॐ अपराजितायै नमः।। ॐ स्तम्भिन्यै नमः।। ॐ जृम्भिण्यै नमः।। ॐ मोहिन्यै नमः।। ॐ आकर्षिण्यै नमः।। ॐ मंगलायै नमः।। ॐ ह्रीं सर्वशक्ति कमलासनाय श्री पीताम्बरायाः योग पीठात्मने नमः।।

ध्यान

मध्ये सुधाब्धि मणि मण्डप रत्न वेद्यां,
सिंहासने परिगतां परिपीत वर्णाम्।
पीताम्बराभरण माल्य विभूषितांगीम्;
देवीं भजामि धृतमुद्गर वैरि जिह्वां।।
जिह्वाग्र मादाय करेण देवी वामेन शत्रून् परिपीडयन्तीम्,
गदाभिघातेन च दक्षिणेन पीताम्बराढ्यां द्विभुजां नमामि।
चलत्कनक कुण्डलोल्लासित चारु गण्डस्थलीं;
लसत्कनक चम्पक द्युतिमदिन्दु बिम्बाननाम्।।
गदाहत विपक्षाकां कलित लोलजिह्वांचलां।
स्मरामि बगलामुखी विमुख वाग् मुखस्तम्भिनीम्।।

मंत्र जप

बगला गायत्री दस बार जप करें –

।।ॐ ह्रीं बगलामुखि विद्महे दुष्टस्तम्भिनि धीमहि तन्नो शक्तिः प्रचोदयात्।।

महारुद्र मंत्र दस बार जप करें –

॥ ॐ नमो भगवते महारुद्राय हुं फट् स्वाहा॥

पीली हकीक माला से 51 माला जप करें –

॥ॐ ह्लीं बगलामुखि सर्व दुष्टानां वाचं मुखं पदं स्तम्भय जिह्वां कीलय बुद्धिं विनाशय ह्लीं ॐ स्वाहा॥

जप समर्पण

जपोपरान्त निम्न मंत्र से देवी को जप समर्पण करें –

ॐ गुह्यातिगुह्य गोप्त्री त्वं गृहाणाऽस्मत्कृतं जपं। सिद्धि र्भवतु मे देवि त्वत्प्रसादान्महेश्वरि॥ ॐ इतः पूर्ण प्राण बुद्धि देह धर्माधिकारतो जाग्रत स्वप्न सुषुप्त्यवस्थासु मनसा वाचा कर्मणा हस्ताभ्यां उदरेण शिश्ना यत्स्मृतं यदुक्तं यत्कृतं तत्सर्वं ब्रह्मार्पणं भवतु स्वाहा। मां मदीयं च सकलं इष्ट देवता श्री पीताम्बरायाः चरण कमलेषु समर्पयामि नमः॥

इस विधि से मैंने बगला साधना सम्पन्न की और अपने जीवन में इस साधना में सफल हो सका, इसके लिए मैं पूज्य ब्राह्मण देवता का कृतज्ञ हूं, कि उन्होंने शिष्य भाव देते हुए मुझे यह साधना सम्पन्न करवाई।

यह साधना कोई भी साधक सम्पन्न कर सकता है, परन्तु कई बार साधना के बीच में भयानक दृश्य भी दिखाई दे जाते हैं या भंयकर अनुभव होने लगते हैं, इसलिए प्रत्येक साधक को चाहिए, कि वह योग्य गुरु के निर्देशन में या उनकी आज्ञा लेकर ही इस साधना को सम्पन्न करें।

वास्तव में ही इस कलिकाल में भगवती बगलामुखी की साधना श्रेष्ठ एवं उच्चकोटि की है, जिसके माध्यम से हम सभी प्रकार के शत्रुओं

पर पूर्णता के साथ विजय प्राप्त कर सकते हैं और किसी व्यक्ति के लिए यह साधना सम्पन्न कर उसके जीवन की समस्या मिटा सकते हैं।

शत्रु वशीकरण प्रयोग

यह प्रयोग महत्वपूर्ण है और इससे शत्रु वश में हो जाता है, फिर जैसा कहा जाता है, वैसा ही वह करता है।

रविवार के दिन 'नाग मुष्टिका' लाकर काले कपड़े में बांध कर अपने सामने रख दें और तेल का दीपक लगा लें, फिर काली धोती पहन कर काले आसन पर बैठ कर दक्षिण दिशा की ओर मुंह कर काली हकीक माला से निम्न मंत्र की 11 माला मंत्र जप करें–

मंत्र

॥ ॐ श्रां धुं धुं ठः ठः हुं हुं ॐ॥

इस प्रकार पांच दिन करें। छठे दिन पोटली में बंधी हुई 'नाग मुष्टिका' शत्रु के घर में या दुकान में डाल दें, तो शत्रु का मन बदल जाता है और वह पूरी तरह वश में हो जाता है। माला को निर्जन स्थान में डाल दें।

यह प्रयोग आजमाया हुआ है और शीघ्र सिद्धिप्रद है।

वशीकरण प्रयोग

किसी भी शनिवार को काली मिर्च और काली सरसों से निम्न मंत्र की 108 आहुतियां देने से विरोधी विचारधारा का व्यक्ति भी साधक के अनुकूल आचरण करने लगता है –

मंत्र

॥ ॐ ह्रीं गं ह्रीं वशमानाय स्वाहा ॥

अगले दिन यज्ञ कुण्ड की समस्त राख एकत्र कर किसी नदी में विसर्जित कर दें।



भैरव साधना

कलियुग में भैरव साधना अत्यन्त महत्वपूर्ण मानी गयी है, क्योंकि इससे कार्य सिद्धि तुरन्त होती है और बहुत ही कम प्रयास में भैरव के प्रत्यक्ष दर्शन हो सकते हैं।

यों तो भैरव से सम्बन्धित कई साधनाएं प्रचलित हैं, परन्तु एक गोपनीय और महत्वपूर्ण साधना आगे के पृष्ठों में दे रहा हूं, जिससे कि भैरव तुरन्त प्रसन्न होकर साधक को मनोवांछित वरदान प्रदान करते हैं।

यह साधना किसी भी माह की कृष्ण पक्ष की पंचमी को प्रारम्भ की जाती है। प्रातः काल उठकर साधक पूर्ण ब्रह्मचर्य का पालन करता हुआ मन में यह विचार करे, कि मैं भैरव की साधना सम्पन्न करने जा रहा हूं, मैं भैरव के प्रत्यक्ष दर्शन करना चाहता हूं।

साधक पूरे साधना काल में काले वस्त्रों का ही प्रयोग करे, काली धोती और ऊपर काला कुर्ता पहन सकता है। साधना समाप्त होने के बाद ही वह दूसरे रंग के वस्त्रों का प्रयोग करे।

यह साधना यदि जंगल में, शिवालय में, नदी के तट पर या श्मशान में करें, तो ज्यादा उचित रहता है, घर पर इस प्रकार की साधना का प्रयोग नहीं करना चाहिए। भैरव अत्यन्त रौद्र और भयानक देवता हैं, वे जल्दी ही प्रसन्न होते हैं, तो जल्दी ही नाराज भी हो जाते हैं, अतः साधक को सावधानी के साथ इस प्रकार की साधना को सम्पन्न करना चाहिए।

जिस दिन साधना प्रारम्भ करे, उस दिन प्रातः मसूर, चने, मूंग और मोठ इन चारों धान्यों को बराबर मात्रा में लेकर पकावें और फिर

इसके सोलह भाग कर, सोलह पलाश के पत्तों पर अपने सामने रख दें, प्रत्येक पत्ते पर तेल का दीपक लगावें और फिर सोलह पत्तों से पहले अपने सामने **भैरव यंत्र** स्थापित कर, उसका गन्ध, अक्षत, पुष्प, धूप–दीप से पूजन करें।

इसके बाद साधक हाथ में अक्षत लेकर, उसे चारों तरफ बिखेरता हुआ आत्म रक्षा मंत्र पढ़े –

आत्म रक्षा मंत्र

ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं नमः पूर्वे।
ॐ ह्रीं ह्रूं ह्रौं नमः आग्नेये।
ॐ ह्रीं श्रीं नमः दक्षिणे।
ॐ ग्लूं ब्लं नगनग नमः नैऋत्ये।
ॐ प्रूं प्रूं संसः नमः पश्चिमे।
ॐ मां मां नमः वायव्ये।
ॐ क्षां बं सं फट् नमः ऐशान्यै।
ॐ ग्लौं ब्लं नमः ऊर्ध्वे।
ॐ घां घं घं नमः अधो देशे।।

ध्यान

इसके बाद हाथ जोड़ कर भैरव का ध्यान करे –

ॐ करकलित कपालः कुण्डली दण्डपाणि,
स्तरुण तिमिर नीलो व्यालयज्ञोपवीती।
ऋतुसमयसपर्या विघ्नविच्छेदहेतु,
र्जयति बटुकनाथः सिद्धिदः साधकानाम्।।

ध्यान के बाद साधक ईशान दिशा की तरफ मुंह करके भैरव मंत्र का जप करें, एक लाख मंत्र जप से यह मंत्र सिद्ध हो जाता है और भैरव प्रत्यक्ष दर्शन देते हैं।

ऊपर मैंने बताया है, कि भैरव का स्वरूप अत्यन्त विकराल और रौद्र होता है, अतः साहसी और दृढ़ निश्चयी व्यक्ति ही अपनी इन

आंखों से उनके दर्शन करने में समर्थ हो पाते हैं, इसलिए स्त्रियां वृद्ध, बालक या कमजोर एवं दुर्बल चित्त वाले व्यक्तियों को भैरव साधना नहीं करनी चाहिए।

भैरव की इस साधना में **काली हकीक माला** का प्रयोग किया जाता है।

भैरव मंत्र

ॐ हां हीं हूं हः क्षां क्षीं क्षूं क्षः हां हीं हूं हः ध्रां ध्रीं ध्रूं ध्रः म्रां म्रीं म्रूं म्रः म्रों म्रों म्रों म्रों क्लों क्लों क्लों क्लों श्रीं श्रीं श्रीं श्रीं ज्रों ज्रों ज्रों ज्रों हुं हुं हुं हुं हुं हुं हुं हुं हुं फट्। सर्वतो रक्ष रक्ष रक्ष रक्ष भैरव नाथ हुं फट्।।

यह मंत्र अत्यन्त शक्तिशाली है और एक लाख मंत्र जप करते ही भैरव के दर्शन हो जाते हैं।

यह साधना रात्रि को ही सम्पन्न की जाती है और इसमें किसी प्रकार की अगरबत्ती या दीपक निरन्तर लगाने की आवश्यकता नहीं है, पहले दिन जो पलास के पत्तों पर भोग लगाया जाता है, उसे मंत्र जप के बाद वहीं छोड़कर आ जाना चाहिए, क्योंकि भैरव का वाहन श्वान है और सही अर्थों में वह खाद्य पदार्थ श्वान को ही समर्पित होता है।

यदि साधना स्थल में श्वान उपस्थित न हो, तो उस पके हुए धान को एकत्र कर किसी श्वान के सामने रख दें।

इसके बाद नित्य इस प्रकार का विधान करने की आवश्यकता नहीं है।

यह मंत्र जप चालीस दिन में या बीस दिन में पूरा हो जाना चाहिए, जब यह विधान या मंत्र जप पूरा होने को होता है, तो उससे तीन दिन पहले भैरव के आने की अनुभूति स्पष्ट रूप से हो जाती है, साथ ही साथ उनके पैरों में बंधे हुए घुंघरू की आवाज स्पष्ट सुनाई देते हैं और भैरव की अस्पष्ट आकृति भी दिखाई देने लगती है।

जिस दिन ऐसी आकृति दिखाई दे, उसके दूसरे दिन उस भैरव की मूर्ति या भैरव यंत्र को नीले रंग का वस्त्र समर्पित करें, तेल और

सिंदूर लगावें, धूप, अगरबत्ती के साथ गुग्गुल की धूप भी समर्पित करें, उसी दिन नैवेद्य के साथ तेल में पकाये हुए गुड़, आटा द्वारा निर्मित पुवा, मीठे पकौड़े, तेल में चुपड़ी हुए आटे की रोटी पर गुड़ रखकर और मोठ या उड़द की दाल भिगोकर, उसे पीस कर, मसाले मिला कर बड़े बना कर नैवेद्य समर्पित करें।

यदि उस दिन भैरव प्रत्यक्ष न हों, तो दूसरे दिन भी ऐसा ही करें, यदि किसी कारण वश दूसरे दिन भी भैरव के दर्शन न हों, तो तीसरे दिन भी वैसा ही विधान करें, उस रात्रि को निश्चय ही भैरव के दर्शन हो जाते हैं।

यह हो सकता है, कि भैरव विकराल रूप में अथवा सौम्य रूप में दर्शन दें, साधक किसी भी हालत में डरे नहीं और नम्रता से मंत्र जप करता रहे।

जब भैरव प्रसन्न होकर वरदान मांगने को कहें, तब साधक उनके सामने तेल का दीपक लगाकर, जो प्रसाद बनाया हुआ है, वह उनके दाहिने हाथ में दे दे, ऐसा करने से भैरव अत्यन्त प्रसन्न होते हैं और मनोवांछित वरदान देते हैं।

यह साधना रात्रि को ही सम्पन्न की जाती है और यदि श्मशान में या नदी तट पर साधना की जाय, तो ज्यादा उचित रहता है, साधक इस बात का ध्यान रखे, कि वह स्थान सामान्यतः निर्जन हो।

साधना के सम्बन्ध में जो भी अनुभव हों, वे किसी को बतावे नहीं और पूर्ण ब्रह्मचर्य का पालन करें तथा काले वस्त्र धारण किये रहें।

भैरव प्रसन्न होने के बाद नित्य साधक को स्वर्ण प्रदान करते हैं और आर्थिक दृष्टि से उसकी जो भी इच्छा होती है, वह पूर्ति करते हैं, यही नहीं अपितु जब भी साधक किसी प्रकार की कोई इच्छा भैरव के सामने रखते हैं, तो भैरव उस इच्छा की पूर्ति अवश्य ही करते हैं।

देश के कई विशिष्ट योगी और साधक भैरव साधना सम्पन्न कर चुके हैं और इसी प्रकार उन्होंने जीवन की पूर्णता प्राप्त की है। इस बात का ध्यान रखें, कि यह साधना किसी योग्य गुरु या साधक की देख–रेख में ही सम्पन्न होनी चाहिए अन्यथा कुछ विपरीत होने की स्थिति में साधक ही पूर्ण रूप से जिम्मेदार होता है।

इस साधना की पूर्णता के बाद व्यक्ति शत्रुओं पर हावी रहता है, किसी भी घटना को जानने के लिए उसे एक बार मंत्र का उच्चारण करना पड़ता है, तो भैरव उसके कान में कह देते हैं, दूर स्थित सामान को लाकर देने में सहायक होते हैं; हजारों मील दूर की घटनाओं को प्रत्यक्ष देखा जा सकता है और किसी भी व्यक्ति के भूतकाल या भविष्य काल को जाना जा सकता है; इसके साथ ही साथ जब साधक किसी खाद्य पदार्थ की इच्छा करता है, तो उसे तुरन्त वह खाद्य पदार्थ प्राप्त हो जाते हैं, इसी प्रकार धन–धान्य, स्वर्ण आदि की प्राप्ति भी भैरव के द्वारा सम्भव है।

वस्तुतः यह भैरव साधना कलियुग में महत्वपूर्ण एवं शीघ्र फलदायक है।



विजय प्रयोग

अमावस्या की रात्रि को काली धोती पहन कर दक्षिण दिशा की ओर मुंह कर बैठ जायें, सामने सात गोमती चक्र रख दें और उस पर कुंकुम की बिंदियां लगावें। फिर हकीक माला से निम्न मंत्र का 11 माला मंत्र जप करें।

मंत्र

*॥ ॐ नमो वीर वैताल धरती कांपे गगन गरजे मेरे शत्रु **'अमुक'** को नाश करे मेरे मन को शूल दूर करे **'अमुक'** कार्य में सफलता दे जो न दे तो रुद्र को त्रिशूल खावे*

ग्यारह माला मंत्र जप होने के बाद वे सातों गोमती चक्र हकीक माला के साथ घर के बाहर जमीन में गाड़ दें, तो निश्चय ही उसे इच्छित कार्य में प्राप्त होती है। इस मंत्र में पहले 'अमुक' के स्थान पर शत्रु का नाम लें और दूसरे 'अमुक' के स्थान पर उस कार्य का उल्लेख करें, जो कार्य जल्दी से जल्दी सम्पन्न करना चाहते हैं।

यह प्रयोग आजमाया हुआ है। गोमती चक्र पूर्ण शत्रु स्तम्भन मंत्र से मंत्र सिद्ध हो और मंत्र जप में हकीक माला का ही प्रयोग हो।

भुवनेश्वरी साधना

पराम्बा मां जगतजननी भुवनेश्वरी दस महाविद्याओं में से एक हैं, इसकी साधना धर्म, अर्थ काम, मोक्ष चारों पुरुषार्थों को प्रदान करने वाली है। महाकाली,महालक्ष्मी, महासरस्वती का सम्यक त्रिगुणात्मक रूप भुवनेश्वरी में समाहित है, इसीलिए इस साधना को सम्पन्न करना जीवन का सौभाग्य माना जाता है।

भुवनेश्वरी साधना

संसार में जितनी भी साधनाएं और सिद्धियां हैं, उनमें दस महाविद्या साधना सबसे अधिक महत्वपूर्ण, प्रभावयुक्त और कलियुग में शीघ्र फलदायक है।

1. काली, 2. तारा, 3. षोडशी, 4. भुवनेश्वरी, 5. छिन्नमस्ता,
6. त्रिपुर भैरवी, 7. धूमावती, 8. बगलामुखी, 9. मातंगी, 10. कमला।

ये दस महाविद्याएं शीघ्र फलदायक, असम्भव बाधाओं को दूर करने वाली और जीवन की समस्त इच्छाओं की पूर्ति करने वाली हैं, इनमें भी भुवनेश्वरी महाविद्या का नाम प्रमुख है।

विश्व के सभी साधकों ने एक स्वर में स्वीकार किया है, कि प्रत्येक गृहस्थ को जीवन में एक बार अवश्य ही भुवनेश्वरी देवी की साधना या आराधना कर लेनी चाहिए, इससे उसके जीवन के सभी पाप समाप्त हो जाते हैं, पूर्व जन्मकृत दोष दूर हो जाते हैं और साधक इस जीवन में सभी प्रकार के भौतिक पदार्थों को भोगता हुआ पूर्ण सुख और सम्मान प्राप्त करता हुआ, अन्त में महाविद्या में लीन होकर मोक्ष प्राप्त कर लेता है।

वस्तुतः भुवनेश्वरी साधना भोग और मोक्ष दोनों को समान रूप से देने वाली उच्चकोटि की साधना है। इसके बारे में संसार के कई तांत्रिक–मांत्रिक ग्रन्थों में विशेष रूप से उल्लेख है। 'शाक्त प्रमोद' में बताया गया है, कि भुवनेश्वरी साधना समस्त साधनाओं में श्रेष्ठ है और इस साधना से जीवन की समस्त इच्छाएं पूर्ण होती हैं। वस्तुतः जो साधक अपने जीवन में सभी प्रकार की समस्याओं का समाधान चाहते हैं, उन्हें भुवनेश्वरी साधना अवश्य ही सम्पन्न करनी चाहिए।

वस्तुतः भुवनेश्वरी साधना अत्यन्त महत्वपूर्ण है, क्योंकि मात्र भुवनेश्वरी साधना से ही जीवन के सभी कार्य सहज, सम्भव हो सकते हैं।

तीनों महाशक्तियों का समन्वित रूप

शास्त्रों के अनुसार भुवनेश्वरी तीनों महाशक्तियों का समन्वित रूप है, यह सरस्वती, लक्ष्मी और काली का पर्याय है अर्थात् जो साधक इन तीनों की साधना करना चाहता है, उसको अलग–अलग तीनों की साधना करने की अपेक्षा मात्र भुवनेश्वरी साधना ही सम्पन्न कर लेनी चाहिए, जिससे कि वह तीनों महाशक्तियों का फल प्राप्त कर सके।

'महालक्ष्मी' जहां व्यापार वृद्धि, आर्थिक उन्नति और भौतिक समृद्धि देने में समर्थ है, 'महासरस्वती' जहां विद्या, मान, प्रतिष्ठा, सम्मान, वाक्सिद्धि, कला, संगीत आदि क्षेत्रों में समर्थता देने में सहायक है, वहीं पर 'महाकाली' शत्रु संहार, रोग निवारण, अकाल मृत्यु आदि पर विजय प्राप्त करने, दरिद्रता, अभाव और बाधाओं को मिटाने तथा विरोधियों पर विजय प्राप्त करने और जीवन की समस्त विपरीतताओं को दूर कर अनुकूल बनाने में समर्थ है।

अतः जीवन में इन तीनों महाशक्तियों की साधना से ही पूर्णता आ पाती है, परन्तु शास्त्रों और प्रामाणिक ग्रन्थों के अनुसार भुवनेश्वरी इन तीनों महाशक्तियों का समन्वित रूप है, **अतः केवल मात्र भुवनेश्वरी की साधना करने से ही इन तीनों महाशक्तियों की साधना सम्पन्न हो जाती है तथा साधक के जीवन में किसी प्रकार का कोई अभाव या बाधा नहीं रह पाती।**

मेरे अनुभव

मैंने और विश्व के कई साधकों ने कई प्रकार की साधनाएं सम्पन्न की हैं और उन साधनाओं में उन्हें पूर्णता तथा सफलता भी प्राप्त हुई है; परन्तु यह निश्चित है, कि अन्य सभी साधनाएं जहां एकांगी हैं, केवल मात्र एक विशेष प्रकार की पूर्णता देने में समर्थ हैं, वहां भुवनेश्वरी समस्त साधनाओं का समन्वित रूप है; अतः केवल मात्र भुवनेश्वरी साधना से ही जीवन के अभाव दूर होते हैं तथा जीवन में पूर्णता प्राप्त हो जाती है।

जिन साधकों ने और गृहस्थ स्त्री–पुरुषों ने इस साधना को सम्पन्न किया है, यदि उनके अनुभवों को लिखा जाय, तो पूरा एक ग्रन्थ बन सकता है। समग्र रूप से समस्त साधकों का यही अनुभव रहा है, कि भुवनेश्वरी साधना सुगम है, सरल है और प्रत्यक्ष दर्शन देने वाली है, साथ ही साथ इस साधना से तुरन्त फल प्राप्त होता है।

वस्तुतः भुवनेश्वरी साधना कलियुग में कल्पवृक्ष के समान है और इसकी साधना से जीवन के सभी अभाव दूर होकर पूर्णता और सम्पन्नता आ पाती है। भुवनेश्वरी साधना का नवरात्रि से विशेष सम्बन्ध है, अतः नवरात्रि में इस साधना को अवश्य ही सम्पन्न करना चाहिए, जिससे कि साधक अपने जीवन में सभी दृष्टियों से सम्पन्नता एवं अनुकूलता प्राप्त कर सकें।

साधना समय

भुवनेश्वरी साधना के लिए सबसे श्रेष्ठ समय नवरात्रि का होता है। यह समय महाशक्तियों की साधना और अनुष्ठान के लिए महत्वपूर्ण माना गया है और इस अवधि में किसी प्रकार की महाशक्ति साधना और विशेष कर भुवनेश्वरी साधना सम्पन्न की जाय, तो निश्चय ही अनुकूल फल प्राप्त होता है।

सरल साधना

यद्यपि भुवनेश्वरी साधना महाशक्ति साधना है और दस महाविद्याओं में से एक महाविद्या है, फिर भी यह साधना अन्य सभी साधनाओं की

अपेक्षा सुगम और सरल है, साथ ही साथ यह सौम्य साधना है, अतः इसका कोई विपरीत परिणाम नहीं होता।

यह साधना पुरुष या स्त्री कोई भी कर सकता है, यह साधना कोई भी गृहस्थ कर सकता है, योगी और संन्यासी कर सकता है, जो थोड़ा–बहुत भी पढ़ा–लिखा है, जो अपने जीवन के अभावों को दूर करना चाहता है, उसके लिए यह स्वर्णिम अवसर है और उसे चाहिए, कि वह इस अवसर का लाभ उठा कर भुवनेश्वरी साधना सम्पन्न करे।

प्रत्यक्ष दर्शन

सबसे बड़ी बात यह है, कि नवरात्रि में भुवनेश्वरी साधना करने पर इसके प्रत्यक्ष दर्शन सम्भव होते हैं। कई साधकों ने इस बात को अनुभव किया है, कि साधना प्रारम्भ करने के पांचवे या छठे दिन अनुभूति होने लगती है और साधना सम्पन्न होते–होते भगवती के दर्शन हो जाते हैं। मेरी राय में कलियुग में हम लोगों का सौभाग्य है, कि इस प्रकार की साधनाएं हमारे बीच में हैं, जिससे कि हम देवी के प्रत्यक्ष दर्शन कर अपने जीवन को धन्य कर सकें।

शीघ्र प्रभाव

कई साधकों ने एक स्वर में स्वीकार किया है, कि यदि भुवनेश्वरी यंत्र तथा भुवनेश्वरी चित्र सामने रख कर भुवनेश्वरी मंत्र जप किया जाय, तो निश्चय ही अनुकूल परिणाम प्राप्त होते हैं और जिस उद्देश्य से कार्य किया जाय वह कार्य निश्चित रूप से सम्पन्न होता है।

इस बात का ध्यान रखा जाना चाहिए, कि इस प्रकार का यंत्र पूर्ण रूप से चैतन्य, मंत्र सिद्ध, प्राण प्रतिष्ठा युक्त होना चाहिए, साथ ही साथ भुवनेश्वरी देवी का चित्र भी पूर्ण रूप से चैतन्य, मंत्र सिद्ध प्राण प्रतिष्ठा युक्त होना चाहिए।

यदि साधना न की जाय और केवल मात्र घर में इस प्रकार का चैतन्य यंत्र और चित्र स्थापित हो जाता है, तो भी निश्चय ही उसी दिन से अनुकूल परिणाम प्राप्त होने लगते हैं और शीघ्र ही वह साधक प्रभाव अनुभव करने लगता है।

यह साधना संन्यासियों, साधुओं और गृहस्थ व्यक्तियों के लिए समान रूप से उपयोगी है, जो गृहस्थ अपने जीवन में पूर्णता और सम्पन्नता चाहते हैं, उन्हें अवश्य ही इस प्रकार की साधना करनी चाहिए।

साधक प्रातः स्नान कर शुद्ध वस्त्र धारण कर अपने घर में किसी एकान्त स्थान में अथवा पूजा कक्ष में चैतन्य, मंत्र सिद्ध, प्राण प्रतिष्ठा युक्त भुवनेश्वरी यंत्र एवं भुवनेश्वरी देवी का चित्र स्थापित करे और सर्वप्रथम गणपति तथा गुरु ध्यान कर अगरबत्ती व दीपक लगा ले।

साधक अकेला या अपनी पत्नी के साथ बैठ कर भगवती भुवनेश्वरी का पूजन करे, पूजन के लिए कोई विशेष विधि–विधान आवश्यक नहीं है, पुष्प चढ़ाकर सामने दूध का बना प्रसाद रख कर तथा इत्र यंत्र एवं चित्र पर लगाकर ध्यान करें।

ध्यान के बाद साधक अकेला भुवनेश्वरी मंत्र का जप प्रारम्भ करे, भुवनेश्वरी मंत्र सबसे छोटा और बीज युक्त है, अतः नित्य दस से पन्द्रह हजार तक मंत्र जप हो सकता है, कुल एक लाख मंत्र जप करने से साधक को सिद्धि एवं अनुकूल फल प्राप्त होता है।

साधना काल में ध्यान रखने योग्य तथ्य

जो साधक या गृहस्थ भुवनेश्वरी साधना करना चाहे, उसे निम्न तथ्यों का पालन करना चाहिए, जिससे कि वह अपने उद्देश्यों में सफलता प्राप्त कर सके –

1. भुवनेश्वरी साधना किसी भी समय से प्रारम्भ की जा सकती है, परन्तु नवरात्रि में इस साधना का विशेष महत्व है। नवरात्रि के प्रथम दिन से इस साधना को प्रारम्भ करना चाहिए और अष्टमी को इसका समापन करना चाहिए।
2. इस साधना में कुल एक लाख मंत्र जप किया जाता है; यह नियम नहीं है, कि नित्य निश्चित संख्या में ही मंत्र जप हो, परन्तु यदि नित्य पन्द्रह हजार मंत्र जप होता है, तो इससे अनुकूलता रहती है।
3. यह साधना पुरुष या स्त्री कोई भी कर सकता है, परन्तु यदि स्त्री साधना काल में रजस्वला हो जाय, तो यह साधना उसी दिन समाप्त कर देनी चाहिए।

4. साधना काल में स्त्री संग वर्जित है तथा साधक शराब आदि न पिये, न जुआ खेले और न स्त्री संग करे।
5. साधना प्रातः या रात्रि को कभी भी की जा सकती है, यदि साधक चाहे तो प्रातःकाल और रात्रिकाल दोनों ही समय इस साधना को सम्पन्न कर सकता है।
6. मंत्र जप के लिए **कमलगट्टे की माला** या **मूंगे की माला** का ही उपयोग किया जाता है, रुद्राक्ष माला का निषेध है।
7. आसन ऊनी होना चाहिए और वह सफेद रंग का होना चाहिए, साधक को नित्य पूर्व या उत्तर दिशा की तरफ मुंह करके बैठना चाहिए, सामने घी का दीपक लगाना चाहिए, यदि साधक चाहे तो अखण्ड दीपक लगा सकता है अन्यथा जब तक मंत्र जप चले तब तक दीपक जलते रहना चाहिए, अगरबत्ती लगाना अनिवार्य नहीं है।
8. साधक के सामने पूर्ण चैतन्य भुवनेश्वरी यंत्र रहना चाहिए और उसके साथ ही साथ भुवनेश्वरी देवी का चित्र भी स्थापित करना चाहिए, जो कि मंत्र सिद्ध प्राण प्रतिष्ठा युक्त हो।
9. प्रथम दिन भुवनेश्वरी देवी का पूजन कर, उनका ध्यान कर मंत्र जप प्रारम्भ कर देना चाहिए, पूजन में कोई जटिल विधि–विधान नहीं है, मानसिक या पंचोपचार पूजन कर सकते हैं।
10. यदि केवल भुवनेश्वरी देवी का दर्शन करना हो, तो मात्र भुवनेश्वरी मंत्र का जप करना चाहिए, पर यदि कोई इच्छा हो, तो इस मंत्र से पूर्व और अंत में सम्बन्धित बीज लगाना चाहिए। उदाहरण के लिए रोग निवारण हेतु 'वं' बीज है और 'ह्रीं' भुवनेश्वरी देवी का मंत्र है, अतः यदि रोग मुक्ति के लिए मंत्र जप करना हो, तो 'वं ह्रीं वं' मंत्र जप होना चाहिए। इस प्रकार भुवनेश्वरी देवी के मंत्र के दोनों ओर सम्बन्धित बीज लगाकर मंत्र पढ़ने से एक मंत्र माना जाता है, इस प्रकार एक लाख मंत्र जप विधान है।
11. प्रातः स्नान कर शुद्ध स्वच्छ वस्त्र धारण कर साधक को मंत्र जप में बैठना चाहिए, यदि साधक को दूसरी बार रात्रि को भी पुनः साधना में बैठना हो, तो उसे पुनः स्नान कर सफेद वस्त्र धारण कर बैठना चाहिए। यदि सर्दी हो तो सफेद कम्बल या ऊनी वस्त्र ओढ़ सकता

है, सिले हुए वस्त्र पहनना निषेध है, रेशमी वस्त्र दूसरी बार पहना जा सकता है, परन्तु यदि सूती वस्त्र हो, तो एक बार पहिनने के बाद धोकर सुखा लेना चाहिए और फिर उसका पुनः प्रयोग करना चाहिए।
12. रात्रि को भूमि शयन करना चाहिए, खाट या पलंग का प्रयोग नहीं करना चाहिए।
13. भोजन एक समय एक स्थान पर बैठ कर जितना भी चाहे किया जा सकता है, पर शराब, मांस, लहसुन, प्याज आदि का निषेध है, इसके अलावा वह दिन में दो बार फल आदि ले सकता है, पेय पदार्थ वह जितनी भी बार चाहे ले सकता है।
14. भुवनेश्वरी देवी के यंत्र और चित्र को कांच के फ्रेम में मढ़वा कर सामने बैठ कर ही मंत्र जप किया जाता है, बिना यंत्र के या चित्र के मंत्र जप निरर्थक होता है।

भुवनेश्वरी ध्यान

चंचन्मौक्तिक हेम मण्डन युता माताऽति रक्ताम्बरा,
तन्वंगी नयनत्रयातिरुचिरा बालर्कवद् भासुरा।
या दिव्यांकुशपाश भूषितकरा देवी सदा भीतिहा,
चित्तस्था भुवनेश्वरी भवतु नः सेयं मुदे सर्वदा।।

इस ध्यान को मंत्र जप करने से पूर्व एक बार उच्चारण करना चाहिए।

भुवनेश्वरी साधना

यद्यपि भुवनेश्वरी मंत्र एक ही है, परन्तु अलग–अलग कार्यों के लिए अलग–अलग बीज हैं, मंत्र जप से पूर्व तथा उस दिन के मंत्र जप की समाप्ति पर एक माला बीज मंत्र की जपनी चाहिए, इस प्रकार मंत्र बीज सम्पुटित हो जाता है, जो साधक जिस कामना से साधना करना चाहे वह सम्बन्धित बीज का ही उपयोग करे।

निष्काम भावना के लिए	**श्रीं**	प्रत्यक्ष दर्शन के लिए	**यं**
आर्थिक उन्नति के लिए	**ह्रीं**	व्यापार वृद्धि के लिए	**आं**

सुख समृद्धि के लिए	**हं**	शत्रु संहार के लिए	**टं**
मुकदमे में सफलता के लिए	**दं**	रोग निवारण के लिए	**वं**
ऋण मोचन के लिए	**गं**	भाग्योदय के लिए	**अं**
सुख–शान्ति के लिए	**जं**	पुत्र प्राप्ति के लिए	**तं**
पत्नी या पति के लिए	**नं**	मोक्ष प्राप्ति के लिए	**लं**
कीर्ति, यश एवं सम्मान के लिए	**क्षं**	राज्य के पद के लिए	**इं**
विद्या प्राप्ति के लिए	**एं**		
खोए व्यक्ति को प्राप्त करने हेतु	**ओं**		
तांत्रिक प्रभाव को दूर करने हेतु	**कं**		
समस्त प्रकार के अभ्युदय के लिए	**ठं**		

जैसा कि मैंने ऊपर बताया है, कि यह मंत्र जप कुल मिला कर एक लाख होना चाहिए, अतः साधक नित्य गणना रखे और नौ दिन में एक लाख मंत्र जप पूरा कर ले।

नौ दिन में यह साधना सम्पन्न होती है, साधक चाहे तो मंत्र जप दिन में करे या रात में करे, यदि वह चाहे तो इसके लिए दिन और रात दोनों का उपयोग कर सकता है।

आसन पर बैठने के बाद वह इक्कीस मालाएं फेरने के बाद कुछ समय के लिए विश्राम ले सकता है, इस प्रकार प्रत्येक इक्कीस मालाओं के बाद कुछ समय का विश्राम लेकर पुनः मंत्र जप में बैठ सकता है।

मंत्र जप करते समय सामने दीपक लगा रहना आवश्यक है, अगरबत्ती निरन्तर जलती रहना आवश्यक नहीं है।

अनुभव

साधक जब साधना में बैठता है, तो तीसरे दिन उसे साधना कक्ष में सुगंध अनुभव होती है, वह सुगंध अपने आप में अवर्णनीय होती है, पांचवे दिन उसे मधुर घुंघरुओं की आवाज सुनाई देती है और आठवें दिन उसे जगज्जननी मां भुवनेश्वरी के दर्शन हो जाते हैं, इसके लिए अखण्ड श्रद्धा, पूर्ण विश्वास, एकाग्रता और निष्ठा से मंत्र जप की आवश्यकता है। यदि साधक कामना पूर्ति के लिए साधना करता है, तो साधना पूरी होने के बाद जल्दी ही उसकी कामना पूर्ति हो जाती है।

ध्यान रखने योग्य तथ्य

यदि साधना काल में परिवार या परिजन में किसी की मृत्यु हो जाय या बालक का जन्म हो जाय, तो साधना काल में कोई अन्तर नहीं पड़ता, साधक चाहे तो बीच में ही साधना समाप्त कर सकता है और वह चाहे तो साधना को निरन्तर जारी रखता हुआ उसे पूर्ण कर सकता है।

यदि साधना काल में नींद आ जाय या झपकी आ जाय या हाथ से माला गिर जाय, तो वह माला पुनः प्रारम्भ करनी चाहिए, यदि बीच में दीपक बुझ जाय, तो माला पूरी होने पर उस दीपक को पुनः जला लेना चाहिए।

प्रयोग

प्रथम दिन स्नान कर, शुद्ध श्वेत वस्त्र धारण कर, सफेद आसन पर पूर्व या उत्तर दिशा की तरफ मुंह कर सामने दीपक लगाकर तथा **भुवनेश्वरी यंत्र व चित्र** को स्थापित कर, यंत्र व चित्र की केसर, अक्षत, रोली, इत्र और पुष्प से पूजा करनी चाहिए। केसर लगा कर हिन्दी भाषा में ही निवदेन किया जा सकता है, कि मैं आपको केसर समर्पित कर रहा हूं, इस प्रकार पांचों वस्तुएं समर्पित की जा सकती हैं। यंत्र व चित्र को जल से स्नान कराना उचित नहीं है।

इसके बाद दाहिने हाथ में जल लेकर हिन्दी में ही संकल्प लिया जा सकता है, कि मैं इस तारीख तक एक लाख मंत्र जप अमुक कार्य के लिए कर रहा हूं और मुझे आप शक्ति दें, जिससे कि मैं अपनी साधना में सफलता प्राप्त कर सकूं, ऐसा कहकर हाथ में लिया हुआ जल छोड़ देना चाहिए, इसके बाद नित्य संकल्प करने की जरूरत नहीं है।

जब आठवें या नवें रोज एक लाख मंत्र जप पूरा हो जाय, तो भूमि पर अग्नि लगाकर भुवनेश्वरी मंत्र की सौ आहुतियां घी की देनी चाहिए तथा अपने परिजनों को बुलाकर भोजन कराना चाहिए, यदि ब्राह्मण हो तो उसे भी भोजन कराना चाहिए।

इसके बाद यह साधना सम्पन्न मानी जाती है और उस यंत्र व चित्र को पूजा स्थान में स्थापित कर देना चाहिए।

भुवनेश्वरी मंत्र

"ह्रीं"

भुवनेश्वरी मंत्र एक अक्षर का बीज है, जो कि अपने आप में चैतन्य है, इसी मंत्र का एक **'भुवनेश्वरी माला'** से लाख जप किया जाना चाहिए।

समापन

वस्तुतः भुवनेश्वरी महादेवी कलियुग में कल्प वृक्ष के समान शीघ्र फल देने वाली है और इसकी साधना सरल होने के साथ-साथ शीघ्र प्रभावयुक्त है। इससे भी बड़ी बात यह है, कि इस प्रकार की साधना करने से साधक को किसी प्रकार की हानि नहीं होती अपितु उसे लाभ ही होता है और वह एक महाविद्या साधना सिद्ध कर लेता है।

आकस्मिक धन प्राप्ति प्रयोग

शुक्ल पक्ष की प्रतिपदा की रात्रि में साधक लाल रंग के वस्त्र धारण कर बाजोट पर लाल वस्त्र बिछाकर उस पर चावल से चतुर्दल पुष्प ( ) का निर्माण करें, उसके मध्य में **'भुवनेश्वरी यंत्र'** का स्थापन करें। यंत्र का पूजन निम्न मंत्र का उच्चारण करते हुए **'कुंकुमं समर्पयामि'** कह कर इस प्रकार से कुंकुम, अक्षत, पुष्प, धूप, दीप, नैवेद्य समर्पित करें। यंत्र पूजन के पश्चात् संकल्प लें, कि मैं धन प्राप्ति हेतु यह प्रयोग सम्पन्न कर रहा हूं, भगवती मेरी कामना पूरी करें।

इसके पश्चात् निम्न मंत्र का जप ग्यारह माला नित्य **'भुवनेश्वरी माला'** से करें –

मंत्र

॥ ॐ शं शत्रुस्तंभनाय फट् ॥

यह प्रयोग 21 दिन का है, 21 दिन के बाद यंत्र तथा माला नदी में प्रवाहित कर दें।

साबर साधनाओं के कुछ नये करिश्मे

कहते हैं, कि साबर मंत्र भगवान शंकर के द्वारा निकले हुए विशेष मंत्र हैं, जो सरल भाषा में उन्होंने पार्वती को सुनाये थे, ये ऐसे मंत्र हैं, जो शिव मुख से निकलने की वजह से अत्यधिक प्रामाणिक, अचूक और शीघ्र सफलतादायक बन गये।

दिखने में ये मंत्र सामान्य प्रतीत होते हैं, परन्तु इन मंत्रों में जो क्षमता और ताकत है, उसका कोई मुकाबला नहीं किया जा सकता। पिछले दिनों मुझे एक अत्यन्त प्राचीन भोजपत्रों पर लिखित पुस्तिका प्राप्त हुई थी, जिसमें आश्चर्यजनक साबर मंत्र और उनकी विधियां अंकित थीं, यह छोटी पुस्तिका ही नहीं थी, अपितु हीरे-मोतियों की खान थी। मैंने इसमें वर्णित मन्त्रों का प्रयोग किया है और उसके आश्चर्यजनक अचूक प्रभावों को देख कर आश्चर्यचकित रह गया हूं।

पाठकों के लिए पहली बार इस महत्वपूर्ण पुस्तक में वर्णित साबर मंत्र और उसकी साधना विधियां प्रस्तुत हैं – महायोगी स्वामी महत्तानन्द जी के द्वारा।

साबर मंत्र समस्त मंत्रों में सर्वश्रेष्ठ, अचूक, प्रभावयुक्त और महत्वपूर्ण माने गये हैं, क्योंकि इन मंत्रों के द्वारा जल्दी सफलता और सिद्धि प्राप्त होती है। मुझे पिछले दिनों ही एक महत्वपूर्ण प्राचीन हस्तलिखित ग्रंथ प्राप्त हुआ था, जो कि भोजपत्रों पर लिखा हुआ था। पिछले दिनों मैं हरिद्वार के आगे कुम्भक नामक गांव में चतुर्मास करने गया था, वहां मुझे चार महीने रहने का अवसर मिला। मुझे किसी ने बहुत पहले बताया था, कि यह भारत के अद्वितीय साबर मंत्राचार्य

कुम्भक का गांव है, जो कि गुरु गोरखनाथ के समान ही विद्वान थे, उन्होंने कुछ ऐसी अद्वितीय साबर मंत्र साधनाएं सम्पन्न की थीं, जो विश्व में दुर्लभ और अद्वितीय मानी गयी हैं, परन्तु उनसे सम्बन्धित कोई साहित्य या साधना पद्धति का ज्ञान नहीं हो सका था। कई साबर मंत्र साधनाओं से सम्बन्धित ग्रंथों में तो महर्षि कुम्भक का नाम तो आदर के साथ लिया गया है और उन्हें भगवान शिव का ही अवतार माना गया है, परन्तु उनके द्वारा प्रणीत मंत्रों के बारे में कोई प्रामाणिक जानकारी नहीं मिल पा रही थी।

कुम्भक ऋषि के वर्तमान वंशधर स्वामी रामदास आचार्य हैं, जो कि कुम्भक गांव में ही रहते हैं, इस चतुर्मास के दौरान इनसे मेरा सम्पर्क बढ़ा, तो एक दिन बातचीत के दौरान उन्होंने बताया, कि हम महर्षि कुम्भक की सन्तान हैं और यह हमारी 82वीं पीढ़ी है। बातचीत के क्रम में उन्होंने कहा, कि महर्षि कुम्भक ने एक ग्रंथ की रचना की थी, जो कुम्भक साबर सिद्धि के नाम से प्रसिद्ध रही है। सम्पूर्ण विश्व में उनकी एकमात्र कृति, जो कि भोज पत्रों पर लिखित है, मेरे पास सुरक्षित है।

मेरे लिए यह अप्रत्याशित और आश्चर्यजनक सूचना थी। मैंने स्वयं अपने जीवन में पिछले पचास वर्षों से साबर साधनाएं सिद्ध की हैं, इसके आधार पर मैं आज यह कहने में समर्थ हूं, कि विश्व में साबर साधनाओं के मंत्र सरल होने के साथ–साथ अचूक प्रामाणिक और महत्वपूर्ण हैं, यदि कोई साधक ये मंत्र सिद्ध कर लेता है, तो अन्य मंत्रों और साधनाओं की अपेक्षा शीघ्र सफलता प्राप्त करने में सक्षम हो जाता है।

जब उनके पास महर्षि कुम्भक द्वारा लिखित ग्रंथ का पता चला, तो मेरी उत्सुकता जरूरत से ज्यादा बढ़ गयी और मैंने उस ग्रंथ को देखने का निश्चय किया। करीब सप्ताह भर बाद रामदास आचार्य ने वह प्रति मेरे सामने लाकर रखी, वह भोजपत्रों पर अंकित प्रति थी, काफी वर्ष हो जाने की वजह से पन्ने जीर्ण हो गए थे और स्याही धुंधली सी हो गयी थी, परन्तु फिर भी अक्षर अत्याधिक सुन्दर, सुवाच्य और पठनीय थे, यह पुस्तिका 118 पृष्ठों की है। मैंने इन साबर मंत्रों का गहराई के साथ अध्ययन किया और इनमें से कुछ साधनाएं भी की। मैंने यह देखा, कि ये

मंत्र और साधनाएं विश्वस्तरीय हैं और इनका प्रभाव अपने आप में अद्वितीय और अचूक है।

आज भी वह ग्रंथ मेरे पास सुरक्षित है, मैं रामदास आचार्य महोदय का अभारी हूं, कि उन्होंने यह महत्वपूर्ण ग्रन्थ बिना स्वार्थ और बिना लाग–लपेट के मुझे भेंट कर दिया, अब यह मेरे पुस्तकालय का अमूल्य खजाना है, क्योंकि विश्व में यह महर्षि कुम्भक की लिखी एकमात्र प्रति है, जिसमें उनके द्वारा प्रणीत सिद्ध मंत्रों का संग्रह है।

अपने पाठकों को इस प्रकार के दुर्लभ मंत्र स्पष्ट कर रहा हूं, जो कि निश्चय ही उनके लिए लाभदायक और जीवन को सुखमय बनाने में सहायक होंगे।

नित्य स्वर्ण प्राप्ति के लिए

यह भद्राक्षी साधना है और इसमें भद्राक्षी को सिद्ध किया जाता है। सिद्ध भद्राक्षी साधक के साथ जीवन भर सहयोगी बनी रहती है और साधक जितना स्वर्ण नित्य चाहता है, उतना स्वर्ण भद्राक्षी उसे प्रदान करती रहती है।

यह साधना मैंने स्वयं सिद्ध की है और इसका प्रभाव अचूक अनुभव किया है, इसमें भद्राक्षी प्रेमिका के रूप में जीवन भर साधक के साथ छाया की तरह बनी रहती है और प्रत्येक प्रकार से उसकी सेवा कर सन्तुष्टि प्रदान करती है। सिद्ध हो जाने के बाद साधक नित्य जितने स्वर्ण की मांग करता है, भद्राक्षी उसकी पूर्ति करती है और बदले में कुछ भी नहीं चाहती।

यह गोपनीय और परम दुर्लभ साधना पाठकों के लिए पहली बार प्रस्तुत है।

यह केवल पांच दिन का प्रयोग किसी भी महीने की त्रयोदशी को प्रारम्भ किया जाता है। साधक त्रयोदशी के दिन प्रातःकाल पांच हकीक पत्थर अपने सामने रख ले और उन पांचों पत्थरों पर कुंकुम से 'ह्रीं' अंकित करे, इसके बाद आगे लिखा यंत्र किसी प्लेट में या थाली में बनावे और उस पर ये पांचों हकीक पत्थर रख कर मूंगे की माला से ''ह्रीं' मंत्र का उच्चारण करे, नित्य पांच मालाएं फेरनी आवश्यक है।

इसके बाद पांचों हकीक पत्थर किसी लाल पोटली में बांध कर घर में रख दे, तो उसे निरन्तर आर्थिक उन्नति होती रहती है और उसके जीवन में जो न्यूनता रहती है, वह दूर हो जाती है तथा आर्थिक दृष्टि से समृद्धि एवं पूर्णता प्राप्त होती रहती है।

यंत्र

	१५	६	७
११	५	१०	४
९	१	१३	११
१४	१३	२	

वस्तुतः यह प्रयोग अधिकारिक प्रयोग है और इसका लाभ प्रत्येक साधक को जीवन में उठाना चाहिए, दरिद्रता मिटाने और आर्थिक सम्पन्नता प्राप्त करने के लिए यह अचूक प्रयोग है।

गृहस्थ में पूर्ण सुख-शान्ति के लिए

यह प्रयोग किसी भी शुक्ल पक्ष की पंचमी को सम्पन्न किया जाता है और आगे तीन महीनों तक प्रत्येक पंचमी को करना आवश्यक होता है। उदाहरण के लिए यदि पौष मास के शुक्ल पक्ष की पंचमी को यह प्रयोग किया गया है, तो माघ शुक्ल पक्ष की पंचमी और फाल्गुन शुक्ल पक्ष की पंचमी को मात्र एक दिन प्रयोग करने से इसमें अनुकूलता प्राप्त होती है।

घर में किसी प्रकार का कलह, मतभेद, समस्याएं, परेशानियां, पति-पत्नी में मतभेद, कौटुम्बिक कलह, पुत्र का विपरीत विचार रखना,

पुत्रवधू की तरफ से परेशानियां या सास की दुष्टता आदि गृहस्थ की किसी भी समस्या के निराकरण के लिए यह प्रयोग विशेष रूप से लाभदायक और महत्वपूर्ण है।

प्रयोगकर्त्ता शुक्ल पक्ष की पंचमी को सफेद आसन बिछाकर पूर्व की तरफ मुंह करके बैठ जाय और सामने भोजपत्र पर निम्नलिखित यंत्र कुंकुम से अंकित कर उस पर **'गृहस्थ सुख प्राप्ति यंत्र'** स्थापित कर दे।

फिर यंत्र की पूजा करे और **'हकीक माला'** से निम्नलिखित मंत्र का जप करे, इसमें पांच माला के जप का विधान है। साधना समाप्ति के बाद वह भोजपत्र तथा यंत्र किसी सुरक्षित स्थान पर रख दे, इस प्रकार तीन पंचमी तक करे। जब तीनों बार प्रयोग सम्पन्न हो जाय, तब उस भोजपत्र को शीशे के फ्रेम में मढ़वा कर घर के पूजा स्थान में या किसी अन्य स्थान पर टांग दे, तो घर का कलह और समस्या मिट जाती है। गृहस्थ सुख प्राप्ति यंत्र व माला को नदी में प्रवाहित कर दें।

यंत्र

४	३	१	६
२	६	७	७
८	१	८	४
८	४	२	६

वस्तुतः यह प्रयोग अत्यधिक अनुकूल है और घर में पूर्ण सुख-शान्ति के लिए इस प्रयोग को महत्वपूर्ण माना गया है।

किसी भी प्रकार की रोग मुक्ति के लिए

यदि स्वयं को या परिवार के किसी सदस्य को कोई बीमारी हो या कोई रोग ऐसा हो, जो असाध्य हो और उनका निदान या निराकरण नहीं हो रहा हो, तो यह प्रयोग अचूक, लाभदायक और महत्वपूर्ण माना गया है।

किसी भी अमावस्या को यह प्रयोग सम्पन्न किया जाता है। अमावस्या के दिन ही पीपल के 108 पत्ते लावें, जो डण्ठल युक्त हों और प्रत्येक पीपल के पत्ते पर निम्न यंत्र अंकित करें, जब 108 पत्ते तैयार हो जाएं, तब उनकी पूजा करें और '**धनवन्तरी माला**' से निम्न मंत्र की एक माला उन पत्तों के सामने फेरें।

मंत्र

॥ ॐ रोगानशेषा (अमुकं) फट् स्वाहा ॥

ऊपर मैंने जिस यंत्र का जिक्र किया है, वह यंत्र निम्न प्रकार से है, जो कि पीपल के पत्तों पर स्याही से अंकित किया जाना चाहिए।

यंत्र

१२	३	१	३०
२१	२५	५	६
४	२६	२	२७
८	७	२४	३१

जब मंत्र जप पूरा हो जाय, तब उन पीपल के पत्तों को रोगी पर सात बार फेर कर माला के साथ जल में (कुएं, तालाब या समुद्र में) बहा दें, ऐसा करने पर वह रोग हमेशा-हमेशा के लिए समाप्त हो जाता है और उसी दिन से रोगी अनुकूल स्थिति प्राप्त करने लग जाता है।

यह प्रयोग स्वयं के लिए, पारिवारिक सदस्यों अथवा परिचितों के लिए सम्पन्न किया जा सकता है और इस प्रयोग से आशातीत सफलता प्राप्त होती है।

शत्रु बाधा निवारण प्रयोग

किसी भी प्रकार की शत्रुता हो, शत्रु परेशान न करे, उनकी तरफ से किसी प्रकार की परेशानी न आवे और राज्य भय या अन्य कोई बाधाएं उपस्थित न हों, इसके लिए यह प्रयोग सम्पन्न किया जाता है।

इसके अलावा यदि आप पर या आपके परिवार पर किसी ने कोई तांत्रिक प्रयोग कर दिया हो, जिससे घर में बराबर कोई न कोई अड़चन या बाधा आती हो, वह भी इस प्रयोग से दूर हो जाती है।

व्यापार पर या घर पर यदि किसी ने कोई तांत्रिक क्रिया सम्पन्न करवा दिया हो, तब भी यह प्रयोग अनुकूल रहता है और इससे जीवन में उस समस्या से मुक्ति पाकर सुख और सन्तोष प्राप्त होता है।

यह मात्र एक दिन का प्रयोग है और इसे किसी भी महीने की कृष्ण पक्ष की चतुर्थी को सम्पन्न किया जाता है।

इसके लिए साधक को चाहिए, कि वह चतुर्थी के दिन काले वस्त्र में मुट्ठी भर तिल, सात कोयले के टुकड़े और सात लोहे की कीलें बांध दे तथा उसे अपने सामने रखकर उस पर काजल से निम्नलिखित यंत्र बनावे।

काला कपड़ा होने की वजह से यह यंत्र स्पष्ट दिखाई न दे, तो भी चिन्ता करने की जरूरत नहीं है, मगर यह यंत्र उस काले कपड़े पर बना देना चाहिए

यंत्र

३०	२७	१२	१३
११	१७	३२	१२
१०	२४	१४	३४
३५	१०	३१	१८

यंत्र बन जाने के बाद **'काली हकीक माला'** से निम्न मंत्र की तीन मालाएं फेरें।

मंत्र

॥ ॐ क्रीं मम समस्त शत्रुणां शत्रुभय चौर्यभय निवृत्त क्रीं फट्॥

जब तीन मालाएं सम्पन्न हो जायें, तो इस पोटली माला के साथ को नदी या तालाब में विसर्जित कर दे अथवा चतुर्थी की रात्रि को जमीन में गाड़ दे। ऐसा करने से वह समस्त प्रकार के उपद्रवों से बच जाता है और जीवन में किसी प्रकार की कोई परेशानी या समस्या व्याप्त नहीं होती।

वस्तुतः यह प्रयोग अपने आप में महत्वपूर्ण और प्रत्येक गृहस्थ के लिए उपयोगी है।

पूर्ण पौरुषता प्राप्ति के लिए

यह **'अनंग साधना'** या 'अनंग मंत्र' है। व्यक्ति चाहे कमजोर हो, काम–कला में शक्तिहीन हो, इस मंत्र के द्वारा वह पूर्ण पौरुषवान बन

जाता है। बुढ़ापे में चुस्ती–स्फूर्ति और पूर्ण पौरुषता प्राप्त करने में यह मंत्र बेजोड़ है।

होली, दीपावली, कृष्ण जन्माष्टमी अथवा शुक्ल पक्ष के किसी भी शुक्रवार की रात्रि को भोजपत्र पर चन्दन, कस्तूरी, कपूर और कुंकुम इन चारों चीजों को बराबर लेकर उसकी स्याही से यह मंत्र लिखें और फिर उस भोजपत्र पर **'अनंग यंत्र'** रख कर उसी रात्रि को निम्न मंत्र का पचास माला मंत्र जप **'मूंगे की माला'** से करना चाहिए, जब मंत्र जप पूरा हो जाय, तब इस भोजपत्र को किसी ताबीज में रखकर दाहिनी भुजा में बांध ले, तो वह व्यक्ति आगे पूरे जीवन भर पौरुषवान बना रहता है।

इस साधना में दीपक या अगरबत्ती लगाने की आवश्यकता नहीं है और न किसी विशिष्ट वस्तु की अनिवार्यता है।

मंत्र

॥ ॐ क्लीं ऐं सौं ग्लौं हुं ईं कं कंदर्पशक्ति सकलकलाकलापनिपुणे इक्षु शरासनपन्च वाणान्विते, सकल रोग विनाशिने, खगान् मारय मारय, क्लीं रसाम्बायै एहि एहि स्वाहा॥

साधना सम्पन्न होने के पश्चात् यंत्र व माला को नदी में विसर्जित कर दें।

प्रत्यक्ष वीर प्रयोग

यह साधना होली, शिवरात्रि, नवरात्रि, वीर सिद्धि दिवस (फाल्गुन शुक्ल तृतीया), सर्वसिद्धि दिवस (कृष्ण जन्माष्टमी), किसी भी रविवार या शुक्रवार की रात्रि को एकान्त में बैठकर की जा सकती है। काले रंग का वस्त्र बिछा कर उस पर **'वीर सिद्धि यंत्र'** को स्थापित कर दीपक और अगरबत्ती लगा कर निम्न मंत्र का **'हकीक माला'** के द्वारा मंत्र जप करें। तीन हजार मंत्र जप पूरा होते ही वीर प्रत्यक्ष होता है, तब अपने पास रखी हुई खीर का भोग दें, ऐसा करने से वीर वश में हो जाता है, और भविष्य में साधक उसे जो भी कार्य सौंपता है, वह पूरा करता है।

मंत्र

॥ ॐ नमो भगवती काल रात्रि कर्मम निलये कांधेश्वरी वीरभद्र वीरमानयात्र आगच्छ आगच्छ हुं॥

यह मंत्र सिद्ध है, परन्तु मजबूत छाती वाले हिम्मतवान साधक को ही यह साधना करनी चाहिए।

प्रयोग समाप्त होने पर साधना सामग्री को वहीं पर छोड़ कर घर आ जायें।

इस पुस्तक में और भी सैकड़ों प्रयोग हैं, जो कि एक दूसरे से बढ़–चढ़ कर हैं, परन्तु मैंने इस लेख में परिवार से सम्बन्धित उन प्रयोगों का ही वर्णन, विवरण और जानकारी दी है, जो कि अत्यधिक आवश्यक हैं। इन प्रयोगों से साधक या गृहस्थ–पाठक चाहें, तो अपनी समस्याओं का समाधान स्वतः प्राप्त कर सकते हैं, इसके लिए किसी अन्य पण्डित या जानकार की आवश्यकता नहीं है।

ये प्रयोग अत्यधिक अनुकूल, और प्रामाणिक हैं, परन्तु प्रयोगों के प्रति श्रद्धा और विश्वास होना आवश्यक है, ऐसा होने पर ही साधक इसमें सफलता प्राप्त कर अपनी समस्याओं का निराकरण कर सकता है।

शत्रु स्तम्भन प्रयोग

"समझ में नहीं आता मैं क्या करूं, उसने तो इस प्रकार की बाधा उत्पन्न कर दी, कि सारा काम रुक गया।" इस प्रकार के वाक्य आपके द्वारा तभी कहे जाते हैं, जब आप किसी कार्य को अत्यन्त मनोयोग से करना चाहते हैं, परन्तु कोई न कोई उसमें रोड़ा बन जाता है। आप कार्य को जितनी ही सरलतापूर्वक सम्पन्न करना चाहते हैं, आपके सामने उतनी ही मुश्किलें खड़ी हो जाती हैं। तब आप सोचते हैं, कि क्या कोई ऐसा उपाय है, जो आपके इस कार्य को निर्विघ्न रूप से पूर्ण कराने में सहायता प्रदान करे, जो आपके मार्ग में आने वाली बाधाओं को हटा दे और आप आसानी से कार्य को पूर्ण कर सकें। इसके लिए '**हरक्षत**' पर नियमित रूप से प्रातः निम्न मंत्र का 11 बार 11 दिन तक जप करें –

॥ ॐ शं शत्रुस्तंभनाय फट् ॥

आप स्वयं अनुभव करेंगे, कि आपके सभी कार्य बिना किसी रुकावट के पूरे हो रहे हैं। 12वें दिन **हरक्षत** को नदी या नहर के जल में विसर्जित कर दें।

तारा साधना

संसार में जितनी भी साधनाएं हैं, उनमें मां तारा की साधना महत्वपूर्ण और प्रमुख मानी गयी है, जो अपने जीवन में तारा साधना सम्पन्न करता है, उसे आर्थिक दृष्टि से किसी प्रकार का कोई अभाव नहीं रहता।

तारा साधना कोई भी साधक कर सकता है। इसमें पुरुष या स्त्री का कोई भेद नहीं माना जाता, नवरात्रि में इस साधना को सम्पन्न करने पर साधक की जो इच्छाएं होती हैं, वे पूर्ण हो जाती हैं।

कई साधकों ने यह अनुभव किया है, कि तारा साधना सम्पन्न करने के बाद आर्थिक और व्यापारिक दृष्टि से उन्हें विशेष सफलता मिलने लगी है और कुछ साधकों को तो मां तारा स्वयं उनके सिरहाने नित्य दो तोला स्वर्ण रख देती है, जिससे कि उसके जीवन में कभी भी दरिद्रता व्याप्त न हो।

तारा साधना करने पर मां तारा के साक्षात् दर्शन करना भी सुलभ होता है और इस प्रकार वह साधक अपने जीवन में पराम्बा मां के दर्शन कर अपने आपको कृतकृत्य अनुभव करता है।

साधना समय

तारा साधना किसी भी महीने की शुक्ल पक्ष की प्रतिपदा से प्रारम्भ की जा सकती है, साधना को प्रारम्भ करने का शुभ समय अमृत काल है, ज्योतिष की दृष्टि से भी यह समय सफलतादायक है।

उपकरण

साधना में गुलाबी रंग को प्रधानता दी गयी है, अतः साधक साधना–काल में गुलाबी रंग की धोती पहने तथा गुलाबी रंग की ही धोती ओढ़ ले; यदि महिला साधिका हो, तो उसे भी गुलाबी साड़ी धारण करना चाहिए। इसके अलावा साधक को कच्छा या बनियान आदि का प्रयोग नहीं करना चाहिए।

साधना से पूर्व ही रूई गुलाबी रंग में रंगकर तथा उसे सुखा कर रख देनी चाहिए, साधक को उत्तर दिशा की तरफ मुंह करके बैठ जाना चाहिए, अपने सामने एक लकड़ी का बजोट रख देना चाहिए और उस पर गुलाबी कपड़ा बिछाना चाहिए, इस बजोट पर गुलाबी रंगे हुए चावलों की सात ढेरियां बना देनी चाहिए, ढेरियां बाएं से दाएं एक ही सीध में हों, प्रत्येक ढेरी पर एक–एक लौंग रख देना चाहिए।

इसके बाद सामने ढेरियों के पीछे मां भगवती तारा का चित्र एवं यंत्र स्थापित करना चाहिए, ढेरियों की तरफ दीपक लगा लेना चाहिए, इसमें शुद्ध घी का ही प्रयोग किया जाना चाहिए।

साधक गुलाबी रंग का आसन बिछा कर बैठे, आसन सूती या ऊनी किसी भी प्रकार का हो सकता है।

एक बात का ध्यान रखें, कि साधना प्रारम्भ करने से पूर्व जिस कमरे में साधना कर रहे हों, उस कमरे की दीवारों को गुलाबी रंग से रंगवा देनी चाहिए, कमरे की छत और फर्श भी गुलाबी रंग से रंगा हो, यदि ऐसा सम्भव न हो, तो कमरे की चारों तरफ की दीवारों पर गुलाबी रंग का कागज चिपका देना चाहिए, यदि कमरे में बिजली की रोशनी हो, तो बल्ब भी गुलाबी रंग का होना चाहिए।

मेरे कहने का तात्पर्य यह है, कि पूरा कमरा गुलाबी रंग से ही पुता होना चाहिए, यह कार्य साधना प्रारम्भ करने के एक या दो दिन पहले सम्पन्न कर लेना चाहिए।

साधना विधि

सर्वप्रथम साधक गुरु के चित्र या उनकी मूर्ति की पूजा करे और उनसे प्रार्थना करे, कि साधना में सफलता प्राप्त हो। इसके बाद गणपति

के चित्र, मूर्ति को प्रणाम कर याचना करे, कि उसकी साधना निर्विघ्न सम्पन्न हो।

इसके बाद हाथ में जल लेकर संकल्प करे, कि मैं (अपना नाम उच्चारण करे) भगवती तारा साधना सम्पन्न करना चाहता हूं, और अष्टमी पर्यन्त सवा लाख मंत्र जप सम्पन्न करूंगा। मैं यह साधना घर में सुख–शान्ति एवं आर्थिक उन्नति के लिए कर रहा हूं, मुझे भगवती तारा प्रत्यक्ष दर्शन दें, ऐसा बोलकर हाथ का जल पात्र में छोड़ दे।

पूजन

इसके बाद साधक भगवती तारा के चित्र व यंत्र का पूजन करे, पूजन में कोई विशेष जटिलता या विधि–विधान नहीं है, यंत्र को जल से स्नान करा कर उस पर कुंकुंम लगावे, गुलाबी पुष्प समर्पित करे तथा मां तारा का भी इसी प्रकार गुलाबी पुष्पों से पूजन करे।

मंत्र जप

आठ दिन में सवा लाख मंत्र जप करने होते हैं, इसलिए नित्य सोलह हजार मंत्र जप होना चाहिए, इस प्रकार आठ दिन में एक लाख अट्ठाइस हजार जप हो जायेगा। इसमें सवा लाख आवश्यक है ही, तीन हजार अतिरिक्त इसलिए हो जाता है, जिससे कि कोई भूल–चूक हो गयी हो तो क्षम्य हो।

इसमें **'तारा माला'** का प्रयोग श्रेष्ठ माना गया है, यदि मोतियों की माला हो तो भी शुभ है, माला में 108 दाने होने चाहिए।

तारा ध्यान

सर्वप्रथम मां तारा को दोनों हाथ से प्रणाम कर निम्नलिखित ध्यान का उच्चारण करें –

प्रत्यालीढ़ पदार्प्पिताङ्घ्रिशवहृद् घोराट्टहासापरा।
खड्गेन्दीवर कर्त्रिखर्प्परभुजा हुंकार बीजोद्भवा।।
खर्व्वा नीलविशालपिंगल जटाजूटैकनागैर्य्युता।
जाड्यन्न्यस्य कपालकर्त्तृजगतां हन्त्युग्रतारा स्वयम्।।

अर्थात् मां तारा महाविद्या हैं, जो नरमुण्डों को धारण किये हुए हैं, जिन्होंने सिर पर नरमुण्डों का ताज पहना हुआ है, उनके चार हाथ हैं, कलाइयों पर सर्प लपेटे हुए हैं और वे दरिद्रता रूपी शत्रु पर पांव रखकर खड़ी हैं, ऐसी ही तारा को मैं भक्ति–भाव से प्रणाम करता हूं।

इसके बाद बेसन की बनी हुई मिठाई का भोग लगा दिया जाए, यह मिठाई नित्य घर पर ही बनी हो, बाजार की बनी हुई मिठाई या प्रसाद का उपयोग न किया जाय।

तारा मंत्र

॥ ऐं ओं ह्रीं क्रीं हुं फट् ॥

यह मंत्र अपने आप में चैतन्य एवं प्राणदायक है, साधक को निरन्तर इस मंत्र का जाप करते रहना चाहिए, मंत्र जप करते समय दीपक लगा रहना चाहिए।

साधना काल में ध्यान रखने योग्य तथ्य

1. यह साधना दिन को या रात्रि को सम्पन्न की जा सकती है, यदि प्रातः पूजन करे, तो दिन भर में सोलह हजार मंत्र जप कर लेना चाहिए। यदि साधक चाहे, तो प्रातः संक्षिप्त पूजन कर अपने काम पर जा सकता है, परन्तु साधक को यह ध्यान रखना चाहिए, कि वह दिन या रात्रि को किसी एक समय ही सम्पूर्ण मंत्र जप करे।
2. नित्य सोलह हजार मंत्र जप आवश्यक है, गिनती के लिए किसी भी वस्तु का प्रयोग किया जा सकता है।
3. यह साधना पुरुष या स्त्री कोई भी कर सकता है, पर यदि स्त्री साधना काल में रजस्वला हो जाय, तो उसे यह साधना बन्द कर देनी चाहिए।
4. साधना काल में स्त्री–संग, शराब, जुआ, व्यसन आदि सर्वथा वर्जित है। चौबीस घण्टे में एक समय शुद्ध शाकाहारी भोजन करे, बाजार की बनी हुई किसी भी वस्तु या पदार्थ का सेवन वर्जित है।
5. साधना में बैठने के बाद यदि साधक चाहे, तो इक्कीस मालाओं के बाद पांच या दस मिनट का विश्राम ले सकता है, इस प्रकार प्रत्येक इक्कीस माला के बाद वह थोड़ा–थोड़ा विश्राम चाहे, तो ले सकता है, पर बीच में उठे नहीं, यदि मल–मूत्र विसर्जन का दबाव हो जाय, तो साधक इक्कीस मालाओं के बाद ऐसा कर सकता है, पर इसके बाद पुनः स्नान करके ही साधना में बैठ सकता है।

अनुभव

साधक जब साधना में बैठता है, तो तीसरे दिन साधना कक्ष में सुगन्ध सी अनुभव होने लगती है, यह सुगन्ध अपने आप में अवर्णनीय होती है, पांचवे दिन उसे कक्ष में किसी की उपस्थिति का एहसास होता है और आठवें दिन जगद्जननी मां तारा के साक्षात् दर्शन हो जाते हैं, इसके लिए अखण्ड श्रद्धा, पूर्ण विश्वास और विधि–विधान आवश्यक है।

साधना समाप्त होने के बाद जल्दी ही साधक की कामना पूर्ण हो जाती है।

समापन

आठवें दिन सवा लाख मंत्र जप पूरे होने पर नौवें दिन जमीन में या किसी पात्र में अग्नि जलाकर तारा मंत्र से बारह हजार पांच सौ आहुतियां देनी चाहिए, इसमें मात्र शुद्ध घी का ही प्रयोग किया जाता है, प्रत्येक आहुति के साथ तारा मंत्र का उच्चारण करना आवश्यक है।

मंत्र जप में जोरों से चिल्ला कर मंत्र बोलना आवश्यक नहीं और न मन ही मन मंत्र जप होना चाहिए, होठों से धीमी आवाज में मंत्र उच्चारण होता रहना चाहिए।

यज्ञ की समाप्ति के बाद अपने परिजनों, मित्रों, सम्बन्धियों को बुला कर भोजन कराना चाहिए और इसके बाद ही स्वयं भोजन करना चाहिए, तभी साधना सम्पन्न मानी जाती है। यंत्र और चित्र को पूजा घर में स्थापित कर लेना चाहिए तथा लकड़ी के बाजोट पर, जो चावल की ढेरियां व लौंग को माला के साथ किसी नदी अथवा तालाब में विसर्जित कर दें।

वस्तुतः यह अपने आप में श्रेष्ठ एवं अद्वितीय साधना है तथा आज के युग में प्रत्येक साधक के लिए वरदान स्वरूप भी। अतः प्रत्येक पाठक तथा साधक इस साधना को सम्पन्न कर अपने जीवन को अधिक सुखी, सम्पन्न एवं आनन्ददायक बना कर पूर्णता प्रदान कर सकते हैं।

लक्ष्मी प्राप्ति की विशेष साधनाएं

दीपावली जन जीवन का एक महत्वपूर्ण और विशेष पर्व है, इन दिनों गृहस्थ कुछ ऐसी साधनाएं सिद्ध करना चाहते हैं, जो कि आर्थिक तथा व्यापारिक दृष्टि से अत्यधिक अनुकूल हों। नीचे लक्ष्मी प्राप्ति की कुछ विशिष्ट साधनाएं दी जा रही हैं, जो वर्ष में कभी भी सम्पन्न की जा सकती हैं, परन्तु नवरात्रि के प्रारम्भ से लगा कर कार्तिक शुक्ल पंचमी तक का समय लक्ष्मी से सम्बन्धित महत्वपूर्ण समय कहलाता है। नवरात्रि से कार्तिक शुक्ल पंचमी तक के समय में लक्ष्मी से सम्बन्धित साधनाएं करने पर सफलता मिलती ही है।

साधकों को चाहिए, कि वे इस समय का सदुपयोग करें और निम्न साधनाओं में से एक या दो साधनाएं तो अवश्य ही सम्पन्न करें, जिससे कि वे अपने जीवन में इन मंत्रों का प्रभाव अनुभव कर सकें और साथ ही साथ ऐसी साधनाएं सम्पन्न कर लाभ उठा सकें।

स्वर्णावती साधना

आकस्मिक धन प्राप्ति के लिए यह तीन दिन का बेजोड़ प्रयोग है और किसी भी बुधवार को यह साधना प्रारम्भ की जा सकती है। जो साधक इस प्रयोग को करना चाहता है। उसे चाहिए, कि वह बुधवार की रात्रि को लगभग 9 बजे उत्तर दिशा की ओर मुंह कर, पीले रंग का आसन बिछा कर और स्वयं भी पीली धोती पहिन कर बैठ जाय।

सामने लक्ष्मी का चित्र और मंत्र सिद्ध प्राण प्रतिष्ठा युक्त '**सियारसिंगी**' रख दे, यह अपने आप में एक अद्वितीय वस्तु होती है, जो कि इस प्रकार

के प्रयोग के लिए अत्यधिक महत्वपूर्ण होती है।

'**सियारसिंगी**' किसी भी पात्र में रख कर उस पर केसर का तिलक करे और फिर सामने अगरबत्ती व तेल का दीपक लगाकर '**स्फटिक माला**' से निम्नलिखित मंत्र की 21 मालाएं फेरे।

यह पूर्ण प्रभाव युक्त और अपने आप में अद्वितीय मंत्र है तथा कई साधकों ने इसका प्रयोग किया है।

मंत्र

॥ ॐ ह्रीं ह्रीं ह्रीं स्वर्णावति मम गृहे आगच्छ आगच्छ ह्रीं ह्रीं ह्रीं ॐ नमः ॥

जब मंत्र जप पूरा हो जाय, तब वह माला सियारसिंगी पर पहना दे, दूसरे दिन भी इसी प्रकार रात्रि को मंत्र जप करे, तीन दिन तक ऐसा प्रयोग करने पर साधना सिद्ध हो जाती है, तब उस सियारसिंगी तथा माला को नदी में विसर्जित कर दे।

कनकावती साधना

यह व्यापार वृद्धि के लिए आश्चर्यजनक साधना है और नवरात्रि के प्रारम्भ से दीपावली तक इस प्रयोग को किया जा सकता है। जो भी आदमी व्यापार करता हो या व्यापार में रुचि रखता हो अथवा मन में व्यापार करने की इच्छा हो, उसे अवश्य ही इस प्रयोग को सम्पन्न करना चाहिए।

इस प्रयोग से व्यापार से सम्बन्धित बाधाएं दूर होती हैं तथा निकट भविष्य में व्यापार में सफलता मिलने की सम्भावना बढ़ जाती है। यह तीन दिन का प्रयोग है और किसी भी बुधवार से इस प्रयोग को प्रारम्भ किया जा सकता है।

प्रातःकाल उठकर स्नान कर पीले आसन पर पीले वस्त्र धारण कर अपने सामने पात्र में '**कनकावती यंत्र**' रख दे, जो कि मंत्र सिद्ध प्राण प्रतिष्ठायुक्त हो, केसर से तिलक करे, सामने अगरबत्ती और दीपक लगावे तथा '**स्फटिक माला**' से या '**शंख माला**' से निम्न मंत्र की 11 मालाएं फेरे।

यह मंत्र अपने आप में बेजोड़ है और इसके माध्यम से व्यापारियों को आश्चर्यजनक सफलता मिली है।

मंत्र

।। ॐ दारिद्र्य विनाशिनी अष्टलक्ष्मी कनकावती सिद्धिं देहि देहि नमः ।।

इस प्रकार तीन दिन तक मंत्र जप करे, तत्पश्चात् यंत्र को दुकान में या फैक्ट्री में स्थापित कर दे और दीपावली तक नित्य इसके सामने अगरबत्ती व दीपक लगावे तो निश्चय ही उसे व्यापार में सफलता मिलती है और निरन्तर उन्नति होती रहती है। प्रयोग समाप्त होने के पश्चात् माला को नदी में प्रवाहित कर दे।

भाग्य लक्ष्मी प्रयोग

यह प्रयोग समस्त प्रकार से भाग्योदय के लिए अतुलनीय प्रयोग है, एक महत्वपूर्ण और सफलतादायक साधना है तथा प्रत्येक साधक के लिए यह आवश्यक है, क्योंकि इस साधना को सम्पन्न करने पर जीवन में जो इच्छा होती है, वह पूर्ण हो जाती है तथा उसे प्रत्येक क्षेत्र में सफलता मिलती है, नौकरी, प्रमोशन, भाग्योदय, आर्थिक उन्नति आदि अनेक कार्यों में यह प्रयोग सफलतादायक कहा गया है।

नवरात्रि के प्रारम्भ से दीपावली तक किसी भी दिन इस प्रयोग को प्रारम्भ किया जा सकता है। यह केवल तीन दिन का प्रयोग है और साधक को चाहिए, कि पीले वस्त्र पहन कर प्रातःकाल साधना के लिए बैठ जाय और सामने किसी पात्र में '**सियारसिंगी**' रख कर उसका केसर से तिलक कर, सामने तेल का दीपक व अगरबत्ती लगाकर '**स्फटिक माला**' से निम्न मंत्र की नौ मालाएं जप करें –

मंत्र

।। ॐ नमः भाग्यलक्ष्मी च विद्महे अष्टलक्ष्मी च धीमहि तन्नो लक्ष्मी प्रचोदयात्।।

इस प्रकार तीन दिन प्रयोग सम्पन्न करने के बाद उस सियारसिंगी

को किसी पवित्र स्थान पर रख दे और नित्य उसके दर्शन करे, उसके बाद ही काम पर जावे, ऐसा करने से शीघ्र ही भाग्योदय होता है और उसे प्रत्येक कार्य में सफलता मिलती है।

तीन महीने बाद सियारसिंगी तथा माला को नदी में प्रवाहित कर दे। वस्तुतः यह प्रयोग सर्वसिद्धिदायक एवं पूर्ण प्रभावयुक्त माना गया है।

फेत्कारिणी प्रयोग

यह प्रयोग किसी भी प्रकार के तन्त्रिक प्रयोग आदि को दूर करने की सफल साधना है। शत्रु और ईर्ष्यालु दूसरों की उन्नति नहीं देख सकते, जब वे परिश्रम से उस प्रकार की सफलता प्राप्त करने में सफल नहीं हो पाते, तब वे किसी अन्य उपाय से उन्हें नुकसान पहुंचाने की चेष्टा करते हैं। इसमें वे तंत्र–मंत्र का सहारा लेते हैं और इसके माध्यम से व्यक्ति को बीमार बना देना, घर में निरन्तर कलह रहना, पति–पत्नी में मतभेद, परिवार के सदस्यों की अकाल मृत्यु, व्यापार में हानि होना, समय पर कार्य सम्पन्न न होना, भाग्योदय में बाधाएं आदि प्रयोगों से व्यक्ति का जीवन छिन्न–भिन्न हो जाता है।

ऐसी स्थिति में यह प्रयोग रामबाण की तरह कार्य करता है। इस प्रयोग को करने से यदि उस पर या उसके घर के सदस्यों पर अथवा व्यापार पर किसी प्रकार का कोई प्रयोग किया हुआ होता है, तो वह दूर हो जाता है और उसकी पुनः उन्नति होने लग जाती है।

मेरी राय में तो यह प्रयोग प्रति वर्ष साधकों को कर लेना चाहिए, जिससे कि किसी प्रकार की कोई विपत्ति या बाधा न रहे। यह प्रयोग मात्र तीन दिन का है। किसी भी शनिवार से इस प्रयोग को प्रारम्भ करना चाहिए, प्रातःकाल उठ कर स्नान, सन्ध्या आदि से निवृत होकर सामने मंत्र सिद्ध प्राणप्रतिष्ठा युक्त '**हत्थाजोड़ी**' रख दे और उस पर कुंकुंम से तिलक करे और फिर हाथ में जल लेकर कहे, कि मैं यह साधना सम्पन्न कर रहा हूं, मुझ पर मेरे घर पर या मेरे परिवार अथवा व्यापार पर किसी प्रकार का दोष, तांत्रिक प्रयोग या पितृ दोष आदि हो, तो वह समाप्त हो जाय और मेरी पुनः उन्नति प्रारम्भ हो।

तत्पश्चात् '**मूंगे की माला**' से निम्न मंत्र की 11 मालाएं फेरे –

मंत्र

॥ ॐ क्लीं मम समस्त शत्रूणां दोषात् निवारय
क्लीं फट् स्वाहा ॥

इस प्रकार तीन दिन तक मंत्र प्रयोग करे और उसके बाद वह माला और हत्थाजोड़ी घर के बाहर किसी स्थान पर गड्ढा खोद कर जमीन में गाड़ दे।

अखण्ड लक्ष्मी प्रयोग

यह जीवन में समस्त प्रकार की उन्नति के लिए श्रेष्ठ साधना है, जीवन में स्वस्थ शरीर, बैंक बैलेन्स, साहस, शक्ति, भवन, सन्तान, पत्नी, सुख, दीर्घायु, भाग्योदय, व्यापार वृद्धि, नौकरी में उन्नति, विदेश यात्रा और अन्य कई प्रकार की इच्छा पूर्ति को ''अखण्ड लक्ष्मी प्रयोग'' कहा जाता है।

यह प्रयोग प्रत्येक साधक को करना चाहिए, क्योंकि इस प्रकार का प्रयोग सम्पन्न करने से जीवन में साधक सभी प्रकार की उन्नति करने में सक्षम हो पाता है तथा पूर्ण भौतिक सुख प्राप्त करता है।

नवरात्रि के प्रारम्भ से दीपावली तक यह प्रयोग सम्पन्न किया जा सकता है। यह प्रयोग मात्र तीन दिन का है और अपने आप में आश्चर्यजनक सफलता देने में सहायक है।

किसी भी बुधवार से इस प्रयोग को सम्पन्न किया जा सकता है, प्रातःकाल उठकर साधक स्नान आदि कर सामने किसी पात्र में '**अखण्ड लक्ष्मी यंत्र**' रखे, जो कि मंत्र सिद्ध, प्राणप्रतिष्ठा युक्त हो। फिर जल से स्नान कराकर, यंत्र को पोंछ कर, उस पर केसर से तिलक करने के बाद '**कमलगट्टे की माला**' से निम्न मंत्र का जप करे –

मंत्र

॥ ॐ ह्रीं अष्ट लक्ष्म्यै नमः॥

नित्य 11 मालाएं फेरनी आवश्यक हैं, इस प्रकार तीन दिन तक

इस मंत्र का जप करे। जब साधना सम्पन्न हो जाय, तो इस यंत्र को अपने घर में अच्छे स्थान पर या अपनी तिजोरी में रख दे तथा माला को विसर्जित कर दे। ऐसा करने पर यह साधना सम्पन्न हो जाती है और उसे जीवन में पूर्ण भौतिक तथा सभी प्रकार के सुख प्राप्त होने लगते हैं।

वास्तव में ही यह साधना उच्चकोटि की साधना है और प्रत्येक साधक को इसे सम्पन्न करना चाहिए और इसका लाभ उठाना चाहिए।

ऊपर मैंने पाठकों के हितार्थ कुछ साधनाएं प्रस्तुत की हैं, जो मेरे जीवन का अनुभव रहा है और मैंने यह महसूस किया है, कि ये साधनाएं व्यक्ति के जीवन को उन्नति की ओर ले जाने में पूर्ण सहायक हैं।

साधकों को चाहिए, कि वे नवरात्रि के प्रारम्भ से दीपावली तक के समय का पूरा–पूरा उपयोग करें, इतने महत्वपूर्ण समय को हाथ से नहीं जाने देना चाहिए। इनमें से कोई भी साधना सम्पन्न कर जीवन को सुखदायक, यशस्वी, उच्च एवं पूर्ण सफलतायुक्त बनावें। 

स्थिर लक्ष्मी प्रयोग

किसी भी बुधवार की रात्रि को स्नानादि से निवृत्त होकर स्वच्छ वस्त्र धारण कर लें। साधक अपने सामने लकड़ी के बाजोट पर लाल वस्त्र बिछा दें, उस एक पात्र में '**कमला सिद्धि गुटिका**' को स्थापित कर गुटिका का पूजन अष्टगंध, अक्षत, पुष्प से करें। यंत्र पूजन के पश्चात् घी का दीपक जला दें। इसके पश्चात् ध्यान करें –

कान्त्या कांचन सन्निभां हिमगिरी प्रख्यैश्चतुर्भिर्गजैः।
हस्तोत्क्षिप्त हिरण्यमयामृतघटै रासिच्यमानां श्रियम्॥
बिभ्राणां वरमब्ज युग्ममभयं हस्ते किरीटोज्ज्वम्।
क्षौमाबद्धनितम्बबिम्बलसितां वन्देरविन्द स्थिताम॥

इसके पश्चात् गुटिका के समक्ष नित्य 50 मिनट तक निम्न मंत्र उच्चारण करें –

यह प्रयोग 40 दिन तक करें। 40 दिन के बाद गुटिका नदी में प्रवाहित कर दें। इस प्रयोग के माध्यम से घर में लक्ष्मी का स्थायित्व रहेगा। 

महाकाली साधना

दस महाविद्याओं में सर्वश्रेष्ठ महाकाली कलियुग में कल्पवृक्ष के समान शीघ्र फलदायक एवं साधक की समस्त कामनाओं की पूर्ति में सहायक हैं। जब जीवन के पुण्य जाग्रत होते हैं, तभी साधक ऐसी प्रबल शत्रुहन्ता, महिषासुर मर्दिनी, वाक् सिद्धि प्रदायक महाकाली की साधना में रत होता है।

जो साधक इस साधना में सिद्धि प्राप्त कर लेता है, उसके जीवन में किसी प्रकार का कोई अभाव नहीं रहता और भोग तथा मोक्ष दोनों में समान रूप से सम्पन्नता प्राप्त कर वह जीवन में सभी दृष्टियों से पूर्णता प्राप्त कर लेता है।

संसार में सैकड़ों–हजारों साधनाएं हैं, परन्तु हमारे महर्षियों ने इन सभी साधनाओं में दस महाविद्याओं की साधना को प्रमुखता और महत्व दिया है। जो साधक अपने जीवन में जितनी ही महाविद्या साधनाएं सम्पन्न करता है, वह उतना ही श्रेष्ठ साधक बन सकता है, परन्तु बिना भाग्य के इस प्रकार की महत्वपूर्ण साधनाओं को सिद्ध करने का अवसर नहीं मिलता।

दस महाविद्याओं में भी काली महाविद्या सर्वप्रमुख, महत्वपूर्ण और अद्वितीय कही गई है, क्योंकि यह त्रिवर्गात्मक महादेवियों – महाकाली, महालक्ष्मी और महासरस्वती में प्रमुख है। शास्त्रों के अनुसार मात्र महाकाली साधना से ही जीवन की समस्त कामनाओं की पूर्ति और मनोवांछित फल प्राप्ति सम्भव होती है। इस सम्बन्ध में हम साधनात्मक ग्रंथों को टटोल कर देखें, तो लगभग सभी योगियों, संन्यासियों, विचारकों, साधकों और

महर्षियों ने एक स्वर से महाकाली साधना को प्रमुखता और महत्व प्रदान किया है।

महत्व

दस महाविद्याओं में प्रमुख और शीघ्र फलदायक होने के कारण पिछले हजारों वर्षों में हजारों–हजारों साधक इस साधना को सम्पन्न करते आये हैं और उच्चकोटि के साधकों के मन में भी यह तीव्र लालसा रहती है, कि अवसर मिलने पर किसी प्रकार से महाकाली साधना सम्पन्न कर ली जाय। फिर भी जिन साधकों ने काली साधना को सिद्ध किया है, उनके अनुसार निम्न तथ्य तो साधना सम्पन्न करते ही प्राप्त हो जाते हैं।

अथ कालीमन्वक्ष्ये सद्योवाक्सिद्धिपायकान्।
आराविततैर्यः सर्वेष्टं प्राप्नुवन्ति जना भुवि।।

1. अर्थात् काली साधना से तुरन्त वाक् सिद्धि (जो भी कहा जाय, वह सत्य हो जाय) तथा इस लोक में समस्त मनोवांछित फल प्राप्त करने में सक्षम हो पाता है।
2. इस साधना को सिद्ध करने से व्यक्ति समस्त रोगों से मुक्त होकर पूर्ण स्वस्थ, सबल एवं सक्षम होता है।
3. यह साधना जीवन के समस्त भोगों को दिलाने में समर्थ है, साथ ही काली साधना से मृत्यु के उपरान्त मोक्ष प्राप्ति होती है।
4. शत्रुओं का मान मर्दन करने, उन पर विजय पाने, मुकदमे में सफलता और पूर्ण सुरक्षा के लिए इससे बढ़कर कोई साधना नहीं है।
5. इस साधना से दस महाविद्याओं में से एक महाविद्या सिद्ध हो जाती है, जिससे सिद्धाश्रम जाने का मार्ग प्रशस्त होता है।
6. इस साधना की सिद्धि से तुरन्त आर्थिक लाभ और प्रबल पुरुषार्थ प्राप्ति सम्भव होती है।
7. *'काली पुत्रे फलप्रदः'* के अनुसार काली साधना योग्य पुत्र की प्राप्ति व पुत्र की उन्नति, उसकी सुरक्षा और उसे पूर्ण आयु प्रदान करने के लिए श्रेष्ठ साधना कही गई है।

वस्तुतः काली साधना को संसार के श्रेष्ठ साधकों और विद्वानों ने अद्भुत और शीघ्र सिद्धि देने वाली साधना कहा है, इस साधना से साधक अपने जीवन के सारे अभाव को दूर कर अपने भाग्य को बनाता हुआ पूर्ण सफलता प्राप्त करता है।

समय

महाविद्या साधनाओं में नवरात्रि का तो विशेष महत्व रहता है, क्योंकि ये दिन इस प्रकार की साधनाओं के लिए सर्वोपरि हैं। फिर आश्विन शुक्ल प्रतिप्रदा से जो नवरात्रि प्रारम्भ होती है, वह तो महत्वपूर्ण है ही, इसलिए साधक को चाहिए, कि वे नवरात्रि का चयन इस प्रकार की साधना के लिए विशेष रूप से करें। जो साधक अपने गृहस्थ जीवन में सभी प्रकार की उन्नति चाहते हैं, जो निष्काम भाव से काली की साधना सम्पन्न कर साक्षात् दर्शन करना चाहते हैं, जो अपने जीवन में भोग और मोक्ष दोनों फल समान रूप से प्राप्त करना चाहते हैं, उन्हें अवश्य ही महाकाली साधना सम्पन्न करनी चाहिए, जिससे कि वे अपने जीवन में सभी दृष्टियों से पूर्णता, श्रेष्ठता और अपने भाग्य को मनोनुकूल बना सकें।

सरल साधना

यद्यपि महाकाली साधना महाविद्या साधना है और महाशक्ति की आधारभूत महाविद्या है, फिर भी अन्य साधनाओं की अपेक्षा सुगम और सरल है, साथ ही साथ यह सौम्य साधना है, इसका कोई विपरीत प्रभाव या परिणाम प्राप्त नहीं होता।

सही अर्थों में देखा जाय, तो महाकाली साधना सरल और गृहस्थों के करने के लिए ही है तथा मंत्रात्मक साधना होने के कारण अनुकूल, शीघ्र प्रभावी और श्रेष्ठ साधना है। इस साधना को पुरुष या स्त्री कोई भी कर सकता है, योगी और संन्यासी कर सकता है, जो अपने जीवन के अभावों को दूर करना चाहता है, उसके लिए यह स्वर्णिम अवसर है, कि वह इन अवसरों का लाभ उठाकर महाकाली साधना सम्पन्न करे।

प्रत्यक्ष दर्शन

सबसे बड़ी बात यह है, कि नवरात्रि में महाकाली साधना करने पर भगवती के प्रत्यक्ष दर्शन सम्भव होते हैं। यदि साधक पूर्ण श्रद्धा के साथ इस साधना को सम्पन्न करे। कई साधकों ने इस बात को अनुभव किया है, कि श्रद्धा और विश्वास के साथ यह साधना सम्पन्न होते ही भगवती महाकाली के दर्शन हो जाते हैं। मेरी राय में यह कलियुग में हम लोगों का सौभाग्य है, कि इस प्रकार की साधना हमारे बीच में है, जिससे कि हम भगवती काली के प्रत्यक्ष दर्शन कर अपने जीवन को धन्य कर सकें।

शीघ्र प्रभाव

साधनात्मक दृष्टि से यह साधना यदि पूर्ण मनोनुकूल अवस्था में सम्पन्न की जाय, तो इसके शुभ एवं शीघ्र प्रभाव दृष्टिगोचर होते हैं। इसके लिए मंत्र सिद्ध प्राण प्रतिष्ठा युक्त महाकाली यंत्र और पूर्ण चैतन्य महाकाली चित्र सामने रख कर साधना करनी चाहिए, इसके अभाव में साधना पूर्ण सफलतादायक नहीं होती।

यदि साधना न की जाय और केवल मात्र घर में ही इस प्रकार का चैतन्य यंत्र और चित्र स्थापित हो जाता है, तो निश्चय ही उसी दिन से अनुकूल परिणाम प्राप्त होने लगते हैं, जिसका अनुभव साधक शीघ्र ही करने लगता है।

साधना विधि

साधक प्रातः स्नान कर शुद्ध वस्त्र धारण कर अपने घर में किसी एकान्त स्थान अथवा पूजा कक्ष में चैतन्य मंत्र सिद्ध प्राण प्रतिष्ठा युक्त '**महाकाली यंत्र**' एवं '**महाकाली चित्र**' स्थापित करे। यदि वह चाहे, तो अकेला या अपनी पत्नी के साथ बैठकर पूजन कार्य कर सकता है, पूजन के लिए कोई जटिल विधि–विधान नहीं है। यंत्र व चित्र पर कुंकुम, अक्षत, पुष्प व प्रसाद चढ़ाकर संकल्प करें, कि मैं समस्त कामनाओं की पूर्ति, सिद्धि के लिए महाकाली साधना कर रहा हूं।

सर्वप्रथम गणपति पूजन व गुरु ध्यान कर इस साधना में साधक

को प्रवृत्त होना चाहिए। साधक को चाहिए, कि वह नित्य लगभग पन्द्रह हजार मंत्र जप सम्पन्न करे अर्थात् 150 मालाएं यदि नित्य साधक सम्पन्न करता है, तो आठ दिन में एक लाख मंत्र जप पूर्ण कर सकता है, जिससे कि उसे सिद्धि एवं अनुकूलता प्राप्त हो जाती है।

साधना काल में ध्यान रखने योग्य तथ्य

जो साधक या गृहस्थ महाकाली साधना सम्पन्न करना चाहे, उसे निम्न तथ्यों का पालन करना चाहिए, जिससे कि वह अपने उद्देश्य में सफलता प्राप्त कर सके –

1. महाकाली साधना किसी भी समय से प्रारम्भ की जा सकती है, परन्तु नवरात्रि में इस साधना का विशेष महत्व है। नवरात्रि के प्रथम दिन से ही इस साधना को प्रारम्भ करना चाहिए और अष्टमी को इसका समापन किया जाना शास्त्र सम्मत है।
2. इस साधना में कुल एक लाख मंत्र जप किया जाता है। यह नियम नहीं है, कि नित्य निश्चित संख्या में ही मंत्र जप हो, परन्तु यदि नित्य पन्द्रह हजार मंत्र जप होता है, तो उचित है।
3. यह साधना पुरुष या स्त्री कोई भी कर सकता है, परन्तु यदि स्त्री साधना काल में रजस्वला हो जाय, तो उसी समय उसे साधना बंद कर देनी चाहिए।
4. साधना काल में स्त्री संसर्ग वर्जित है, साधक शराब आदि न पिये और न जुआ खेले।
5. साधना प्रातः या रात्रि दोनों समय में की जा सकती है, यदि साधक चाहे, तो प्रातःकाल और रात्रि दोनों ही समय का उपयोग कर सकता है।
6. साधना काल में रुद्राक्ष की माला का प्रयोग ज्यादा उचित माना गया है।
7. आसन सूती या ऊनी कोई भी हो सकता है, पर वह काले रंग का हो। यदि घर में साधना करे, तो साधक पूर्व दिशा की तरफ मुंह करके बैठे, सामने घी का दीपक लगा ले, अगरबत्ती लगाना अनिवार्य नहीं है।

8. साधक के सामने पूर्ण चैतन्य महाकाली यंत्र और महाकाली चित्र फ्रेम में मढ़ा हुआ स्थापित होना चाहिए, जो कि मंत्र सिद्ध व प्राण प्रतिष्ठा युक्त हो।
9. प्रथम दिन महाकाली देवी का पूजन कर उसका ध्यान कर मंत्र जप प्रारम्भ कर देना चाहिए, पूजन में कोई जटिल विधि–विधान नहीं है, साधक मानसिक या पंचोपचार पूजन कर सकता है।
10. रात्रि में भूमि शयन करना चाहिए, खाट या पलंग का प्रयोग नहीं किया जाना चाहिए।
11. भोजन एक समय एक स्थान पर बैठ कर जितना भी चाहे, किया जा सकता है, पर शराब, मांस, लहसुन, प्याज आदि का निषेध है।

अनुभव

साधक जब साधना आरम्भ करता है, तो तीसरे दिन ही उसे घर के साधना कक्ष में सुगन्ध का एहसास होता है। यह सुगन्ध अपने आप में अवर्णनीय होती है, चौथे या पांचवें दिन उसे कमरे में किसी की उपस्थिति का एहसास होता है और आठवें दिन उस जगज्जननी महाकाली के प्रत्यक्ष या बिम्बात्मक रूप में दर्शन हो जाते हैं, इसके लिए अखण्ड श्रद्धा और विश्वास के साथ साधना आवश्यक है। साधना के मध्य कुछ अप्रिय स्थितियां आ सकती हैं, लेकिन साधक को चाहिए, कि वह अविचलित भाव से साधना को नियमित रखे।

प्रयोग

प्रथम दिन स्नान कर शुद्ध वस्त्र धारण कर आसन पर पूर्व की ओर मुंह कर सामने शुद्ध घृत का दीपक लगाकर तथा **'महाकाली यंत्र व चित्र'** को स्थापित कर उसकी पूजा करें, इसके पूर्व गणपति और गुरु पूजन आवश्यक हैं।

इसके बाद दाहिने हाथ में जल लेकर हिन्दी में ही संकल्प लिया जा सकता है, कि मैं अमुक तिथि तक एक लाख मंत्र जप अमुक कार्य के लिए कर रहा हूं, आप मुझे शक्ति दें, जिससे कि मैं अपनी साधना में सफलता प्राप्त कर सकूं ऐसा कह कर हाथ में लिया हुआ

जल जमीन पर छोड़ देना चाहिए, इसके बाद नित्य संकल्प करने की आवश्यकता नहीं है।

फिर निम्नलिखित महाकाली ध्यान करें–

शवारूढाम्महाभीमां घोरदंष्ट्रां हसन्मुखीम्।
चतुर्भुजां खड्गमुण्डवराभयकरां शिवाम्।।
मुण्डमालाधरान्देवीं लोलजिह्वान्दिगम्बरां।
एवं संचिन्तयेत्कालीं श्मशानालयवासिनीम्।।

ध्यान के बाद निम्नलिखित मंत्र का जप प्रारम्भ करें, जैसा कि ऊपर बताया जा चुका है, इस मंत्र की '**रुद्राक्ष माला**' से नित्य एक सौ पचास मालाएं सम्पन्न होनी चाहिए –

मंत्र

।। क्रीं क्रीं क्रीं ह्रीं ह्रीं हुं हुं दक्षिण कालिके
क्रीं क्रीं क्रीं ह्रीं ह्रीं हुं हुं स्वाहा।।

वस्तुतः यह मंत्र अपने आप में अद्वितीय महत्वपूर्ण, शीघ्र सिद्धिप्रद और साधक की समस्त मनोकामना की पूर्ति में सहायक है।

महाकाली साधना कलियुग में कल्प वृक्ष के समान शीघ्र फल देने वाली है। इसकी साधना सरल होने के साथ ही साथ प्रभाव युक्त है, इससे भी बड़ी बात यह है, कि इस प्रकार की साधना करने से साधक को किसी प्रकार की हानि नहीं होती अपितु उसे लाभ ही होता है।

उच्चाटन प्रयोग

किसी भी व्यक्ति का मन यदि गलत कार्यों में उलझ गया है, तो सही दिशा की ओर लाने के लिए यह उच्चाटन प्रयोग करें, इसके माध्यम से व्यक्ति का मन उस कार्य से उचट जाएगा और वह पुनः सही मार्ग पर अग्रसर हो जाएगा।

किसी भी शनिवार को '**काल भैरव गुटिका**' को पीपल के पत्ते पर स्थापित कर सिन्दूर से पूजन करें, तेल का दीपक लगा दें, उस व्यक्ति का नाम लिखें जिसका उच्चाटन करना है। निम्न मंत्र का 101 बार उच्चारण करते हुए गुटिका को नदी में विसर्जित कर दें –

।। ॐ हूं अमुकं (नाम जिसका उच्चाटन करना है) *हन हन स्वाहा ।।*

ग्रहण काल की गोपनीय साधनाएं

ग्रहण काल किसी भी कार्य के लिए शुभ नहीं माना जाता, परन्तु साधनात्मक दृष्टि से अत्यन्त ही श्रेष्ठ और शीघ्र सफलतादायक समय होता है। सामान्य समय में की गई साधना की अपेक्षा ग्रहण काल में की गई साधना में सफलता शीघ्र और अचूक होती है।

आगे मैं पाठकों के लाभार्थ कुछ विशिष्ट साधनाएं दे रहा हूं, जो कि अपने आप में प्रामाणिक, महत्वपूर्ण और शीघ्र सफलतादायक हैं। साधकों को साधना प्रारम्भ करने से पहले ही सम्बन्धित उपकरण यंत्र आदि प्राप्त कर रख लेना चाहिए।

वशीकरण प्रयोग

ग्रहण के समय किया जाने वाला यह महत्वपूर्ण प्रयोग है और इसके माध्यम से संसार में किसी को भी वश में किया जा सकता है। इसमें प्रेमी या प्रेमिका, पति या पत्नी, अधिकारी, शत्रु या मित्र किसी को भी पूर्ण वश में करने और जीवन भर वश में बनाये रखने के लिए प्रयोग सम्पन्न किया जाता है। इस प्रयोग में '**सर्वजन वशीकरण यंत्र**' और '**वशीकरण माला**' तथा काजल की डिबिया की आवश्यकता पड़ती है।

विधि

ग्रहण के समय साधक को चाहिए, कि वह ऊनी आसन बिछाकर पश्चिम दिशा की ओर मुंह कर बैठ जाय और सामने '**सर्वजन वशीकरण यंत्र**' स्थापित कर दे, इसके बाद ठीक ग्रहण के समय काजल की डिबिया को बाईं मुट्ठी में बंद रखे और दाहिने हाथ से '**वशीकरण माला**' द्वारा 21

माला मंत्र जप सम्पन्न करें –

मंत्र

॥ ॐ ऐं ह्रीं क्लीं कान्हेश्वरि सर्वजन वश्यं करि सर्वमुख स्तम्भनी हृदयाय स्वाहा॥

यह मंत्र पूर्ण प्रभावयुक्त और शीघ्र सफलतादायक है, पूरे मंत्र जप के बाद काजल की डिब्बी को सम्हाल कर रख दें। बाद में जिस किसी को भी वश में करना हो, मंगलवार के दिन यदि उसी डिब्बी से काजल का थोड़ा सा भी भाग उसके कपड़ों पर लगा दिया जाय, तो वह सामने वाला पुरुष या स्त्री वश में हो जाते हैं और मनोनुकूल कार्य सम्पन्न करते हैं।

इस प्रयोग को सम्हल कर करना चाहिए और नैतिक नियमों के विरुद्ध कार्य सम्पन्न नहीं करना चाहिए।

कालरात्रि प्रयोग

अपने शत्रु को समूल नष्ट करने का यह सर्वोत्तम मंत्र प्रयोग है। इसको तभी सम्पन्न करना चाहिए, जब प्राणों पर बन आयी हो। इस प्रयोग में **'कालरात्रि गुटिका'** तथा **'काल भैरव यंत्र'** और **'काली हकीक माला'** की आवश्यकता पड़ती है, ग्रहण के समय किया जाने वाला यह अद्वितीय प्रयोग है।

विधि

साधक ग्रहण के समय स्नान कर काली धोती पहन पर दक्षिण दिशा की ओर मुंह करके बैठ जाय, सामने तेल का दीपक लगा कर यंत्र तथा गुटिका स्थापित कर देनी चाहिए, फिर हकीक माला के द्वारा निम्न मंत्र की तीन मालाएं मंत्र जप होना चाहिए –

मंत्र

॥ ॐ ऐं ह्रीं क्लीं श्रीं कान्हेश्वरि सर्वजनमनोहरि शत्रुमुख स्तम्भनि शत्रु निर्दलनि त्रोटय भंजय निर्दलय स्तम्भय मोहय उच्चाटय उच्चाटय मारय मारय फट्॥

मंत्र जप सम्पन्न होने पर हाथ में काली मिर्च के दाने लेकर शत्रु का नाम लेकर पांच बार मंत्र जप करे और फिर तेल के दीपक में बचे हुए तेल को उन काली मिर्च के दानों पर चुपड़ दे और फिर वे काली मिर्च के दाने यंत्र और माला के साथ दक्षिण दिशा की ओर जाकर गाड़ दे।

स्वार्थ सिद्धि के लिए यह प्रयोग नहीं करना चाहिए, नैतिक नियमों के अनुकूल जब प्राणों पर बन आयी हो, तभी इस प्रयोग को सम्पन्न करना चाहिए।

अभय नृसिंह साधना

राज्य कार्य में सफलता पाने, मुकदमे में विजय तथा शत्रुओं से अभय और निडरता पाने के लिए यह साधना अत्यन्त महत्वपूर्ण कही गई है। किसी भी प्रकार की समस्या हो, मुकदमे में सफलता नहीं मिल रही हो, शत्रु परेशान कर रहा हो या सरकारी कोई अड़चन या तकलीफ आ रही हो, तो इस साधना को सम्पन्न किया जा सकता है, ग्रहण के समय इस साधना का विशेष महत्व है।

सामग्री

इस साधना में दो हकीक पत्थर तथा नृसिंह यंत्र की आवश्यकता होती है। इसके अलावा जल पात्र, सरसों तथा काली मिर्च साधना काल में अपने पास रख लेनी चाहिए, लगभग एक मुट्ठी भर काली मिर्च तथा मुट्ठी भर सरसों पर्याप्त है।

विधि

ग्रहण के समय साधक स्नान कर सफेद धोती पहन कर बैठ जाय, यदि सम्भव हो, तो काले रंग का आसन बिछा दे और हकीक की माला से निम्न मंत्र की इक्कीस मालाएं फेरें –

मंत्र

॥ ॐ नमो भगवते नृसिंहस्य वज्र नख दंष्ट्र कर्माशयानंधय रंधय तमो ग्रसग्रस स्वाहा॥

एक माला पूरी होने पर हाथ में कुछ सरसों के तथा कुछ काली मिर्च के दाने लेकर जिस कार्य की सिद्धि चाहते हैं, उसका उल्लेख कर दक्षिण दिशा की ओर फेंक देना चाहिए, इस प्रकार प्रत्येक माला के बाद करें।

जब 21 माला जप सम्पन्न हो जाय, तब उन बिखरे हुए काली मिर्च तथा सरसों के दानों को झाडू से एकत्र कर लें और दक्षिण दिशा में जाकर हाथ भर गहरे गड्ढे में यंत्र, माला और हकीक पत्थर सहित गाड़ दें।

इसके बाद घर आकर स्नान कर लें और शुद्ध वस्त्र धारण कर लें, प्रातः काल भिखारियों को दान आदि दें। ऐसा करने से निश्चय ही उसके मनोरथ की पूर्ति होती है और वह जैसा चाहता है, उस प्रकार से कार्य सम्पन्न होता है। यह तेजस्वी मंत्र है और इसका उपयोग साधना में अवश्य करना चाहिए।

काम्य प्रयोग

काम्य प्रयोग का तात्पर्य इच्छित कार्य को पूर्ण करना है। आपके मन की जो भी इच्छा हो, इस प्रयोग को सम्पन्न करने पर एक महीने के भीतर वह इच्छा अवश्य ही पूर्ण होती है। इसके अन्तर्गत गृहस्थ में सुख–शांति, पति सुख, शीघ्र विवाह, व्यापार में सफलता या कोई भी ऐसा कार्य हो सकता है, जो कि आपको कठिन और असम्भव प्रतीत हो रहा हो, उस कार्य की पूर्ति के लिए इस साधना का प्रयोग किया जाता है।

सामग्री

इस साधना में एक **'हत्थाजोड़ी'** तथा **'सर्वकाम्य सिद्धि यंत्र'** की आवश्यकता पड़ती है। ग्रहण के समय इसको सामने रख कर और फिर लोहे के पात्र में लकड़ियां जलाकर घृत और सरसों से निम्न मंत्र के द्वारा एक हजार आहुतियां दें, प्रत्येक आहुति के बाद घी की एक बूंद 'सर्वकाम्य सिद्धि यंत्र' पर डालें। इस प्रकार मात्र एक हजार आहुतियां देने पर काम्य प्रयोग सिद्ध होता है और व्यक्ति जिस इच्छा या भावना को लेकर काम्य प्रयोग करता है, उसमें सफलता मिलती है।

मंत्र

॥ क्लीं॥

यह एकाक्षी मंत्र अद्भुत सफलतादायक और पूर्ण सिद्धिदायक है। साधक को चाहिए, कि ठीक ग्रहण के समय इस प्रयोग को सम्पन्न करे, ऐसा करने पर वह विशेष अनुकूलता प्राप्त कर सकता है।

रुक्मिणी वल्लभ प्रयोग

ग्रहण के समय किया जाने वाला यह महत्वपूर्ण प्रयोग है। यह समस्त संसार को सम्मोहित करने वाला तथा विशेष रूप से पति या पत्नी को अपने मनोनुकूल बनाने के लिए श्रेष्ठ प्रयोग है। यदि घर में अशांति, कलह, लड़ाई–झगड़े, मतभेद हों, तो इस प्रयोग को अवश्य ही करना चाहिए। इस प्रयोग से मनोवांछित पति या पत्नी प्राप्त हो जाती है, इच्छानुसार प्रेमी या प्रेमिका के सम्बन्ध दृढ़ होते हैं और पूर्ण गृहस्थ सुख प्राप्त होता है। यह अद्वितीय प्रयोग है, जो ग्रहण काल में सम्पन्न किया जाता है।

विधि

इस प्रयोग में **'रुक्मणी वल्लभ यंत्र'** तथा **'मूंगे की माला'** की आवश्यकता पड़ती है। ग्रहण के समय साधक स्नान करके पूर्वाभिमुख होकर बैठ जाय और हाथ में जल लेकर उस कार्य को स्पष्ट करे, जिसके लिए यह प्रयोग सम्पन्न किया जा रहा है। इसके बाद किसी पात्र में **'रुक्मिणी वल्लभ यंत्र'** स्थापित करें तथा उसका पूजन कर **'मूंगे की माला'** से निम्न मंत्र की 21 माला मंत्र जप करने पर यह प्रयोग सिद्ध हो जाता है –

मंत्र

॥ ॐ नमो भगवते रुक्मिणी वल्लभाय नमः॥

प्रयोग समाप्त होने पर यंत्र तथा माला को नदी में प्रवाहित कर दें। इस प्रकार यह प्रयोग सम्पन्न करने पर साधक अपने गृहस्थ जीवन

में पूर्ण अनुकूलता एवं सफलता प्राप्त कर सकता है, वास्तव में ही यह मंत्र अपने आप में अद्वितीय है।

दरिद्रता नाशक प्रयोग

ग्रहण के समय यह सर्वाधिक महत्वपूर्ण प्रयोग है, इस प्रयोग को सम्पन्न करने पर रोग और ऋण से मुक्ति मिलती है, दरिद्रता समाप्त होती है तथा जीवन में आर्थिक सम्पन्नता प्रारम्भ होती है। चाहे जीवन में कितना ही ऋण हो, हानि हो रही हो या व्यापार में असफलताएं मिल रही हों, इस प्रयोग को सम्पन्न करने से वह शीघ्र ही आर्थिक उन्नति करने लगता है और ऋण एवं रोग से मुक्त हो जाता है।

विधि

इस प्रयोग में **'दरिद्रता नाशक यंत्र'** और **'स्फटिक माला'** की आवश्यकता होती है। ग्रहण के समय साधक स्नान कर शुद्ध सफेद धोती धारण कर पूर्व की ओर मुंह कर बैठ जाय, सामने दरिद्रता नाशक यंत्र स्थापित कर पूजन करें और निम्न मंत्र की ग्यारह मालाएं फेरे –

मंत्र

॥ ॐ ह्रीं घृणिः सूर्य आदित्यः श्रीं॥

इसके बाद जब मंत्र जप समाप्त हो जाय, तब उस यंत्र तथा माला को नदी में प्रवाहित कर दे, ऐसा करने पर व्यक्ति निश्चय ही रोग एवं ऋण से मुक्त हो जाता है।

संकल्प शक्ति में वृद्धि के लिए

व्यक्ति डरपोक स्वभाव का हो और किसी कार्य को सम्पन्न करने से कतराता हो, तो वह हिम्मत प्राप्त करने के लिए अपने दाहिने हाथ में **'आर्जुनी'** लेकर उसे एकटक देखते हुए निम्न मंत्र को 21 बार बोले –

॥ ॐ क्लीं ह्रीं सिद्धये फट् ॥

ऐसा सात दिन तक करे। सात दिन पश्चात् **आर्जुनी** को पीपल के पेड़ की जड़ में डाल दे।

छिन्नमस्ता साधना

जो पंक्तियां पढ़ने में आश्चर्यचकित कर देने वाली लगती हैं, हकीकत में वे सही होती हैं। आवश्यकता है, उस आश्चर्य को हकीकत में बदला जाय और हवा में उड़ना एक ऐसी ही कल्पना है, पर योगियों के लिए असम्भव या कठिन नहीं है।

छिन्नमस्ता साधना एक ऐसी ही साधना है, जिसको सम्पन्न कर सामान्य गृहस्थ भी योगी का पद प्राप्त कर सकता है, वायु वेग से शून्य के माध्यम से एक स्थान से दूसरे स्थान पर जा सकता है, जमीन से उठ कर हवा में स्थिर हो सकता है, एक शरीर को कई शरीरों में बदल सकता है और अनेक ऐसी सिद्धियों का स्वामी बन सकता है, जो आश्चर्य की गणना में आती हैं।

'छिन्नमस्ता भवेत्सुखी' अर्थात् जो छिन्नमस्ता साधना सम्पन्न कर लेता है, वह साधक जीवन में सभी दृष्टियों से सुखी रहता है। पूज्य गुरुदेव के प्रिय शिष्य अरविन्द के द्वारा प्रस्तुत एक महत्वपूर्ण साधना विधि, जो प्रामाणिकता के साथ प्रस्तुत है।

मैं अपने जीवन में साधना का अनुगामी रहा हूं, मैंने बचपन से ही निश्चय कर लिया था, कि जीवन में एक–एक करके दसों महाविद्याओं को सिद्ध करूंगा और एक ऐसा आदर्श उपस्थित करूंगा, जिससे कि साधक लाभान्वित हो सकें।

मैंने सुना था, कि अन्य साधनाएं फिर भी सम्पन्न की जा सकती हैं, परन्तु छिन्नमस्ता साधना अपने आप में इतनी सूक्ष्म और संवेदनशील है, कि थोड़ी सी गलती भी अनर्थ कर देती है, इसलिए छिन्नमस्ता साधना

करने से पूर्व साधक को शारीरिक और मानसिक दोनों ही दृष्टियों से सक्षम और तत्पर होना चाहिए।

मैं अपने गुरु के सान्निध्य में छः साधनाएं सिद्ध कर चुका था, यद्यपि इन महाविद्या साधनाओं को सम्पन्न करने में मुझे काफी कठिनाईयां उठानी पड़ी थीं, परन्तु फिर भी मैं इन सभी महाविद्या साधनाओं को सम्पन्न कर सका, इसके पीछे जहां मेरी लगन और परिश्रम था, एकात्म भाव और पूर्णता के प्रति ललक थी, वहीं अपने गुरुजी का साहचर्य और उनकी कृपा भी थी, कि जिनकी वजह से मैं इन सभी साधनाओं को सिद्ध कर सका।

परन्तु छिन्नमस्ता साधना का अनुभव तो अपने आप में विचित्र था, इस साधना का प्रारम्भ ही नहीं हो पा रहा था, मैं जब भी इस साधना के लिए तैयार होता, तभी कोई न कोई बाधा या परेशानी उपस्थित हो जाती, जिसकी वजह से मैं प्रयत्न करके भी साधना में बैठ नहीं पा रहा था।

कहा जाता है, कि साधक जिस दिन से छिन्नमस्ता साधना सम्पन्न करने का विचार करता है, तभी से उसकी कसौटी की परीक्षा प्रारम्भ हो जाती है और कोई विरला ही इस साधना को सम्पन्न कर सकता है।

परन्तु आज जब मैं इस साधना को भली प्रकार से सम्पन्न कर चुका हूं, मैं यह स्वीकार करता हूं, कि इससे बढ़कर और कोई अन्य श्रेष्ठ साधना नहीं है। शास्त्रों में इस साधना के बारह गुण बताये गये हैं, जो कि निम्न प्रकार से हैं –

1. छिन्नमस्ता साधना सम्पन्न करने पर साधक आर्थिक दृष्टि से पूर्ण समर्थ और सुदृढ़ बन जाता है, मां छिन्नतस्ता स्वयं उसका मनोरथ पूरा करती जाती हैं, वह जिस सन्दूक या तिजोरी में धन रखता है, उसमें से वह दोनों हाथों से चाहे जितना भी खर्च करे, उसमें न्यूनता नहीं आती।
2. इस साधना मंत्र में **'क्लीं'** बीज लगता है, जो कि समस्त पापों का नाश करने वाला है, इसलिए यह साधना जीवन के समस्त पापों का नाश कर मुक्ति देने में समर्थ है।

3. इसमें त्रैलोक्य विजयिनी देवी का बीज है, फलस्वरूप साधक जीवन में प्रत्येक क्षेत्र में सफलता प्राप्त करता जाता है, वह राजनीति आदि के क्षेत्र में विशेष पूर्णता प्राप्त कर सकता है।
4. इस साधना के बाद अन्य साधनाएं सुगम और सरल हो जाती हैं, फलस्वरूप उन साधनाओं में जल्दी ही सफलताएं मिलती रहती हैं।
5. इस मंत्र में माया बीज होने की वजह से साधक का शरीर स्वस्थ, सुन्दर और आकर्षक बन जाता है, फलस्वरूप वह जीवन में पूर्णतः यौवनवान बना रहता है।
6. इस साधना के द्वारा साधक लाखों मील दूर के दृश्य को बखूबी देख सकता है और यदि वह चाहे, तो उस दृश्य में हस्तक्षेप कर अनुकूल या प्रतिकूल बना सकता है।
7. इससे साधक सशरीर एक स्थान से दूसरे स्थान पर जा सकता है, एक ही क्षण में वह वायुवेग से दूसरे स्थान पर जा सकता है या दूसरे स्थान पर प्रकट होकर मनोवांछित कार्य सम्पन्न कर सकता है।
8. यह साधना सम्पन्न होने पर साधक अपने ही समान कई रूप धारण कर सकता है, ऐसी साधना से सिद्ध व्यक्ति एक ही क्षण में कई स्थानों पर देखा जा सकता है। कहते हैं, कि भगवान श्रीकृष्ण ने छिन्नमस्ता साधना सिद्ध की थी, जिसके फलस्वरूप रासलीला में प्रत्येक गोपी के साथ कृष्ण बन कर रास खेल सके थे।
9. छिन्नमस्ता साधना आठों सिद्धियों और ऋद्धियों को देने में समर्थ है, जो इस साधना को सिद्ध कर लेता है, उसके जीवन में धन, धान्य, पृथ्वी, विलासमय भवन, कीर्ति, दीर्घायु, ख्याति, यश, वाहन, पुत्र, पौत्र और अन्य सभी भौतिक सुख स्वतः ही प्राप्त होते रहते हैं तथा जीवन में किसी प्रकार का अभाव देखने को नहीं मिलता।
10. छिन्नमस्ता साधना से सिद्ध व्यक्ति का शरीर लोहे के समान दृढ़ हो जाता है, बर्फ में वह नंगा बैठ कर साधना कर सकता है, अग्नि में प्रवेश कर सकुशल बाहर निकल सकता है और किसी भी प्रकार की विपत्ति को सहन कर सकता है।
11. छिन्नमस्ता साधना में त्रिपुर सुन्दरी साधना समाहित है, फलस्वरूप वह इच्छानुसार देवी–देवताओं के साक्षात् दर्शन कर सकता है।

12. इसके माध्यम से व्यक्ति को वाक् सिद्धि प्राप्त हो जाती है और वह जो भी कहता है, वह सफल होता है।

एकमात्र यही ऐसी साधना है, जिसमें सभी साधनाओं का समावेश है, इस एक साधना को सम्पन्न करने पर उपरोक्त सभी साधनाएं स्वतः ही सम्पन्न हो जाती हैं और जीवन में किसी भी प्रकार का कोई अभाव नहीं रहता।

इस साधना को करने के बाद मैंने उपरोक्त सभी तथ्यों को अनुभव किया है और उस क्षण तो आश्चर्यचकित रह गया, जबकि मन में भाव लाते ही एक स्थान से दूसरे स्थान पर वायुवेग से पहुंच गया। मुझे स्वप्न में भी यह उम्मीद नहीं थी, कि यह साधना इतनी अधिक महत्वपूर्ण और श्रेष्ठ है।

छिन्नमस्ता साधना को शास्त्रों में गोपनीय साधना कहा गया है। कहा जाता है, कि गुरु चाहे तो अपने समस्त ज्ञान और असीम सिद्धियां शिष्य को दे दें, परन्तु बिना भली प्रकार से परखे उसे छिन्नमस्ता साधना नहीं सिखावें, क्योंकि इस साधना को सीखने के बाद शिष्य स्वयं गुरुवत् बन जाता है और जीवन में वह संसार के समस्त कार्यों को एक क्षण में सम्पन्न कर सकता है, प्रकृति उसके इशारे पर चलती है तथा समय को वह जिस ढंग से चाहे, उस ढंग से परिवर्तित कर सकता है।

मेरे पूज्य गुरुदेव दसों महाविद्याओं में सिद्ध रहे हैं, यद्यपि वे ऊपर से अत्यधिक सरल और सामान्य दिखाई देते हैं, परन्तु उनके पास जो सिद्धियां और ज्ञान है, वह अपने आप में अप्रतिम है। उनके पास एक पुस्तक थी, जो ताड़पत्रों पर अंकित थी, उसमें छिन्नमस्ता साधना को प्रामाणिक और सरल रूप में बताया गया है, उसी के द्वारा मैंने छिन्नमस्ता साधना सम्पन्न की थी। पाठकों के हित के लिए मैं उसी महत्वपूर्ण पुस्तक से साधना क्रम आगे की पंक्तियों में प्रस्तुत कर रहा हूं।

छिन्नमस्ता साधना

छिन्नमस्ता साधना को सम्पन्न करने से पूर्व निम्न तथ्यों का पूरी तरह से पालन करना चाहिए –

1. यह साधना रात्रि को सम्पन्न की जाती है, अतः मंत्र जप रात्रि को ही किया जाय, विशेषकर मंत्र में अर्द्धरात्रि ऊपर से व्यतीत हो, मेरे

कहने का तात्पर्य यह है, कि यह साधना रात्रि को दस बजे प्रारम्भ करके प्रातः लगभग तीन या चार बजे तक समाप्त करनी चाहिए।

2. इस साधना को पूरा करने के लिए सवा लाख मंत्र जप सम्पन्न करना चाहिए और यह साधना ग्यारह या इक्कीस दिनों में पूरी होनी चाहिए।
3. साधना काल में साधक अन्य कोई कार्य, नौकरी, व्यापार आदि न करें।
4. ब्रह्मचर्य व्रत का पालन करे, एक समय फलाहार लें, अन्न लेना वर्जित है।
5. साधना काल में साधक दृढ़ चित्त और सुस्थिर बना रहे, यदि उसे विशेष प्रकार का दृश्य दिखाई भी दे, तब भी घबराने की जरूरत नहीं है, यों यह साधना यदि गुरु के निर्देशन में की जाय, तो ज्यादा उचित है।
6. रात्रि को लगभग दस बजे स्नान कर काली धोती पहन लें, फिर साधना कक्ष में जाकर दक्षिण दिशा की ओर मुंह कर काले ऊनी आसन पर बैठ जायें और सामने **छिन्नमस्ता** यंत्र–चित्र रखकर उसकी सामान्य पूजा करें, उस पर कुंकुम, पुष्प और अक्षत चढ़ावें, उसके सामने दीपक और लोबान धूप लगा लें, इसके बाद मंत्र जप प्रारम्भ करें।
7. मंत्र जप की समाप्ति के बाद उसी स्थान पर सो जायें, नित्य कम से कम पांच हजार मंत्र जप आवश्यक है।
8. जब पूरे सवा लाख मंत्र जप हो जायें, तब पलाश पुष्प या बिल्व पुष्पों से दशांश हवन करें, ऐसा करने पर यह साधना सिद्ध हो जाती है।

साधना क्रम

विनियोग

ॐ अस्य शिरश्छन्ना मंत्रस्य, भैरव ऋषिः, सम्राट् छन्दः, छिन्नमस्ता देवता, ह्रीं ह्रीं बीजम्,

स्वाहा शक्तिः, अभीष्ट सिद्धये जपे विनियोगः।

ऋष्यादि न्यास

ॐ भैरव ऋषये नमः शिरसि।
सम्राट् छन्दसे नमः मुखे।
छिन्नमस्ता देवतायै नमः हृदये।
ह्रीं ह्रीं बीजाय नमः गुह्ये।
स्वाहा शक्तये नमः पादयोः।
विनियोगाय नमः सर्वांगे।

कर न्यास

ॐ आं खड्गाय स्वाहा अंगुष्ठयोः।
ॐ ईं सुखड्गाय स्वाहा तर्जन्यै।
ॐ ऊं वज्राय स्वाहा मध्यमाभ्योः।
ॐ ऐं पाशाय स्वाहा अनामिकाभ्योः।
ॐ औं अंकुशाय स्वाहा कनिष्ठिकाभ्योः।
ॐ अः सुरक्ष रक्ष ह्रीं ह्रीं स्वाहा करतल कर पृष्ठभ्योः।

अंग न्यास

ॐ आं खड्गाय हृदयाय नमः स्वाहा।
ॐ ईं सुखड्गाय वज्राय शिरवायै वषट् स्वाहा।
ॐ ऐं पाशाय कवचाय हुं स्वाहा।
ॐ औं अंकुशाय नेत्रत्रयाय वौषट स्वाहा।
ॐ अः सुरक्ष रक्ष ह्रीं ह्रीं अस्त्राय फट् स्वाहा।

इस प्रकार न्यास सम्पन्न करने के बाद हाथ जोड़कर भगवती छिन्नमस्ता का ध्यान करें –

ध्यान

भावन्मण्डल मध्यगांगिज शिरश्छिन्नंविकीर्णालकम्।
स्फोरास्यं प्रतिपद्गलात्स्व रुधिरं वामे करेविभ्रतीम्।।
याभासक्त रति स्मरोपरि गतां सरव्यो निजे डाकिनी।
वर्णिन्यौ परि दृश्य मोद कलितां श्रीछिन्नमस्तां भजे।।

मंत्र

।। श्रीं ह्रीं क्लीं ऐं वज्र वैरोचनीये हुं हुं फट् स्वाहा ।।

उपरोक्त सोलह अक्षरों का छिन्नमस्ता का मंत्र अत्यधिक महत्वपूर्ण है। इसका मंत्र समुच्चय इस प्रकार किया गया है –

श्रीं यह लक्ष्मी बीज है।
ह्रीं यह लज्जा बीज है, जो कि जीवन में सभी दृष्टियों से उन्नति में सहायक है।
क्लीं यह मनोभव बीज है, जो कि समस्त पापों का नाश करने वाला है।
ऐं यह जीवन में समस्त गुणों को देने वाला और संजीवनी विद्या प्रदान करने वाला बीज है।
वं यह वरुण देव का प्रतीक है, जिससे स्वयं के शरीर पर नियंत्रण रहता है और अपने स्वरूप को कई रूपों में विभक्त कर सकता है।
जं यह इन्द्र का प्रतीक है, जो कि एक स्थान से दूसरे स्थान पर एक ही क्षण में जाने में सहायक है।
रं यह रेफ युक्त है, जो कि अग्नि देव का प्रतीक है, यह बीज जीवन की पूर्णता का प्रतीक है।
वं यह पृथ्वी पति बीज है, जिससे कि साधक पूरी पृथ्वी पर नियंत्रण करने में समर्थ होता है।
ऐं यह त्रिपुरा देवी का प्रतीक है।
रं यह त्रिपुर सुन्दरी का बीजाक्षर है
ओं यह सदैव त्रैलोक्य विजयिनी देवी का आत्म रूप प्रतीक है।
चं चन्द्र का प्रतीक है, जो कि पूरे शरीर को नियंत्रित, सुन्दर व सुखी रखता है।

नं यह गणेश का प्रतीक है, जो कि ऋद्धि–सिद्धि देने में समर्थ है।

ईं यह साक्षात् कमला का बीजाक्षर है।

यं सरस्वती का बीज है, जिससे साधक को वाक् सिद्धि प्राप्त होती है।

हुं हुं यह माया युग्म बीज है, जो आत्म और प्रकृति का संगम है, इससे साधक सम्पूर्ण प्रकृति पर नियंत्रण स्थापित करता है।

फट् यह वैखरी प्रतीक है, जिससे साधक किसी भी क्षण मनोवांछित कार्य सम्पन्न कर सकता है।

स्वा यह कामदेव का बीज है, जिससे साधक का शरीर सुन्दर, स्वस्थ व आकर्षक बन जाता है।

हा यह रति बीज है, जो कि पूर्ण पौरुष प्रदान करने में समर्थ है।

इस प्रकार इन सोलह अक्षरों का विन्यास करने पर स्पष्ट होता है, कि मंत्र का प्रत्येक अक्षर एक विशेष प्रतीक युक्त है और इस एक ही मंत्र से भौतिक एवं आध्यात्मिक सभी प्रकार की सिद्धियां प्राप्त की जा सकती हैं।

जब सवा लाख मंत्र जप सम्पन्न हो जाय, तो इसका दशांश हवन पलाश पुष्पों से करना चाहिए, तत्पश्चात् ब्राह्मण भोजन करावें।

मैंने उपरोक्त विधि से ही साधना सम्पन्न की थी और पहली ही बार में मैं साधना में पूर्णता प्राप्त कर सका था, यह पूज्य गुरुदेव का आशीर्वाद ही कहा जा सकता है, इस साधना को सम्पन्न करते ही मैं उपरोक्त वर्णित सभी सिद्धियों का स्वामी बन सका तथा आज मैं जो कुछ हूं, उसमें छिन्नमस्ता का बहुत बड़ा योगदान है।

छिन्नमस्ता साधना सौम्य साधना है और आज के भौतिक युग में इस साधना की नितान्त आवश्यकता है। इस साधना के द्वारा साधक जहां पूर्ण भौतिक सुख प्राप्त कर सकता है, वहीं वह आध्यात्मिक क्षेत्र में भी पूर्णता प्राप्त करने में समर्थ होता है। साधक कई साधनाओं में स्वतः सफलता प्राप्त कर लेता है और इस साधना के द्वारा कई–कई जन्मों के पाप कट कर वह निर्मल हो जाता है। यह साधना अत्यधिक सरल, उपयोगी और आश्चर्यजनक सफलता देने में समर्थ है।



सिद्ध गोपनीय तिब्बती साधनाएं

यदि सही अर्थों में कहा जाय, तो तिब्बत के लामाओं ने तंत्र क्षेत्र में कुछ ऐसी साधना विधियां और सिद्धियां प्राप्त की हैं, जो विश्व विख्यात हैं और जिनके माध्यम से उन्होंने प्रकृति को पूर्णतः नियंत्रित करने में सफलता प्राप्त की। ये मंत्र और विधियां जहां एक ओर सुगम हैं, वहीं दूसरी ओर इनका प्रभाव अपने आप में अचूक और सिद्धिप्रद है।

राहुल सांस्कृत्यायन ने तिब्बत के इन तांत्रिक ग्रंथों को देखकर कहा था, कि तंत्र के क्षेत्र में जितने महत्वपूर्ण और अद्वितीय साधना रहस्य तिब्बत के लामाओं के पास हैं, उसकी कोई तुलना नहीं है, ये मंत्र सभी देशों में सभी स्थानों पर समान रूप से उपयोगी और महत्वपूर्ण हैं।

इनमें से कुछ तो ऐसे तंत्र हैं, जिनका प्रयोग होली, दीपावली के दिनों में किया जा सकता है। तंत्र में मारण, मोहन, वशीकरण, स्तम्भन और उच्चाटन क्रियाएं महत्वपूर्ण कही गई हैं।

मैं लगभग सत्रह वर्ष तक तिब्बत में और विशेषकर इन महत्वपूर्ण लामाओं के बीच रहा, यद्यपि वे अपने साधना रहस्य जल्दी स्पष्ट नहीं करते और इन सिद्धियों को प्राप्त करने के लिए मुझे जो कष्ट उठाने पड़े, वे मैं ही जानता हूं; परन्तु मुझे यह प्रसन्नता है, कि मैं उन साधना रहस्यों को प्राप्त कर सका, जो विश्व के उज्जवलतम रत्न हैं।

मोहन प्रयोग

किसी को भी अपने वश में कर लेना, पूरी भीड़ को और

उपस्थित समुदाय को अपने अनुकूल बना लेना इसकी विशेषता है। श्रीकृष्ण ने सैकड़ों गोपियों को और पूरे जन समुदाय को इसी के द्वारा वश में रखा था। नेताओं के लिए, प्रवचनकर्ताओं के लिए, भाषण देने वालों के लिए, यूनियन के लीडरों के लिए और नित्य उपस्थित व्यक्तियों को सम्मोहित करने के लिए यह प्रयोग अद्भुत सिद्धि प्रदायक है।

सामग्री

इसमें तेल का दीपक, 21 हकीक पत्थर (जो मोहन मंत्रों से सिद्ध हों), मोह्य माल्य, जलपात्र और 21 पीपल के पत्ते प्रयुक्त होते हैं।

विधि

रविवार को नारी का दुग्ध लेकर उसमें थोड़ी सी हल्दी मिलाकर स्याही बनावें और दक्षिण दिशा की ओर लाल आसन बिछाकर बैठ जायें, सामने 21 हकीक पत्थर एक ही पंक्ति में रख दें, फिर भोज पत्र पर "हुं मणिभद्रे फट्" लिखें और सामने रख दें। तत्पश्चात् 21 हकीक पत्थरों पर उस स्याही से बिन्दी लगावें और 21 पीपल के पत्तों पर निम्न मंत्र लिखें –

मंत्र

॥ ॐ क्लीं कामाय क्लीं कामिन्यै क्लीं॥

फिर बाद में उसी स्थान पर बैठकर **'मोह्य माल्य'** से 21 माला मंत्र जप करें और इस प्रकार मात्र पांच दिन तक करें।

तत्पश्चात् इसी मंत्र से अग्नि में गुग्गल के द्वारा 101 आहुतियां दें, तो मंत्र सिद्ध हो जाता है और जब भी मोहन प्रयोग करना हो, तो उन हकीक पत्थरों को एक छोटी सी पोटली में बांधकर अपनी जेब में रखें, तो सामान्य मनुष्य या उपस्थित लोगों को तो क्या, पूरे विश्व को मोहित कर सकते हैं। तिब्बती ग्रंथों के अनुसार यह प्रयोग किसी भी शुभ समय में किया जा सकता है।

वशीकरण प्रयोग

मोहन प्रयोग जहां अधिक लोगों या श्रोताओं या भीड़ को वश में

करने के लिए किया जाता है, वहीं वशीकरण प्रयोग किसी विशेष व्यक्ति पर कर इसके द्वारा उसे अपने अनुकूल बनाया जा सकता है।

यह एक अद्वितीय प्रयोग है, जिसे पुरुष या स्त्री कोई भी कर सकता है। अपने प्रेमिका को हमेशा के लिए अपने वश में करने के लिए, अपने प्रेमी को अनुकूल बनाने के लिए, अधिकारी को अपनी इच्छानुसार चलाने के लिए और किसी भी व्यापारी व्यक्ति या महत्वपूर्ण हस्ती को हमेशा–हमेशा के लिए अपने वश में करने के लिए इस विधि का प्रयोग किया जाता है।

सामग्री

वट वृक्ष के आठ पत्ते, जलपात्र, तेल का दीपक, आठ गोमती चक्र तथा हकीक माला।

विधि

किसी भी कृष्ण पक्ष की अष्टमी या चतुर्दशी से इस प्रयोग को प्रारम्भ किया किया जा सकता है। घर के किसी कोने में दक्षिण दिशा की ओर मुंह कर बैठ जायें, सामने आठ वट वृक्ष के पत्तों में केशर से उसका नाम लिखें, जिसे वश में करना हो, फिर उन पत्तों पर **'गोमती चक्र'** रख दें व केसर से उन **'गोमती चक्रों'** पर बिन्दी लगा लें, फिर **'हकीक माला'** से निम्न मंत्र का ग्यारह माला मंत्र जप करें।

मंत्र

॥ ॐ नमः कालिकायै सर्वाकर्षिण्यै अमुकीमाकर्षयाकर्षय शीघ्रमानय आं ह्रीं क्रां भद्रकाल्यै नमः ॥

इसमें जिसे वश में करना हो, उसका फोटो यदि सम्भव हो, तो सामने रखें, तो ज्यादा उचित रहता है। पांच दिनों के प्रयोग के बाद मात्र सौ आहुति अग्नि में घी और गुलाब पुष्पों से ऊपर लिखे मंत्र को पढ़कर दें, तो निश्चय ही जीवन भर के लिए व्यक्ति या स्त्री वश में रहती है और किसी भी स्थिति में जुदाई नहीं होती, अपितु जैसा हम चाहते हैं, वैसा ही वह करने के लिए बाध्य होता है।

उच्चाटन

किसी के प्रति प्रेम या आसक्ति समाप्त हो जाने की क्रिया को उच्चाटन कहते हैं। यदि पति किसी अन्य स्त्री के प्रेम में आसक्त है या प्रेमिका किसी अन्य पुरुष में रुचि लेने लगी है या प्रेमी का झुकाव किसी अन्य लड़की की तरफ होने लगा है या ऐसा कोई भी कारण हो, तो परस्पर मतभेद किये जाने वाले प्रयोग को उच्चाटन कहा जाता है।

सामग्री

इसमें बिल्ली की नाल, सियारसिंगी, जलपात्र, तेल का दीपक और मूंगे की माला का प्रयोग होता है।

यह प्रयोग वर्ष में किसी भी शुभ मुहूर्त में सम्पन्न किया जा सकता है। घर के एकान्त में नीली धोती या साड़ी पहन कर दक्षिण दिशा की ओर मुंह कर सिर के बाल खोल कर बैठ जायें और मूंगे की माला से ग्यारह माला मंत्र जंप करें, इस प्रकार तीन दिन तक करें। चौथे दिन काली मिर्च और तेल मिलाकर मात्र सौ आहुतियां अग्नि में दें, तो निश्चय ही उन दोनों में भयंकर झगड़ा हो जाता है और हमेशा-हमेशा के लिए उनका परस्पर उच्चाटन हो जाता है।

मंत्र

।। ॐ क्लूं स्लूं म्लूं क्ष्लूं कालरात्रि महाध्वांक्षि अमुकमाशूच्चाटयोच्चाटय छिंधि भिंधि स्वाहा हौं कामाक्षि क्रौं।।

साधना समाप्त होने के बाद बिल्ली की लाल, सियारसिंगी तथा मूंगे की माला को निर्जन स्थान में गड्ढा खोद कर गाड़ दें।

विद्वेषण

किन्हीं दो व्यक्तियों में भयंकर लड़ाई-झगड़ा करा देने को विद्वेषण कहते हैं। पति या पति, प्रेमी या प्रेमिका की किसी अन्य के प्रति आसक्ति हो, तो इन दोनों के बीच विद्वेषण इस प्रयोग के द्वारा सम्भव है।

सामग्री

गधे के पांच बाल, बिल्ली की नाल तथा छोटा दक्षिणावर्ती शंख।

इसे किसी रविवार को प्रारम्भ कर तीन दिन तक नित्य एक हजार मंत्र जप करने से यह प्रयोग सम्पन्न होता है।

विधि

किसी भी रविवार को दक्षिण दिशा की ओर मुंह कर नीली धोती या नीली साड़ी पहन कर बैठ जायें, बाल खोल दें, सामने बिल्ली की नाल व गधे के पांच बाल रख दें, शंख जो अंगूठे के आकार का हो, उल्टा रख दें, फिर मूंगे की माला से मात्र एक हजार मंत्र जप सम्पन्न करें। तीन दिन तक इस प्रकार करें, चौथे दिन इसी मंत्र से अग्नि में घी और काली मिर्च से सौ आहुतियां दें, तो निश्चय ही विद्वेषण सिद्ध हो जाता है।

मंत्र

।। ॐ ह्रौं ग्लौं ह्सौं भगवति दण्डधारिणि अमुकमामुकं शीघ्र विद्वेषय विद्वेषय रोधय रोधय भंजय भंजय श्रीं मायाराग्यै ॐ हुं हुं हुं।

मंत्र जप समाप्त होने के बाद समस्त सामग्री (गधे के बाल, बिल्ली की नाल, शंख व माला) काले रंग के वस्त्र में बांध कर पीपल के पेड़ में लटका दें।

मारण

शत्रु या दुष्ट को समाप्त कर देने की विधि या मंत्र प्रयोग को तांत्रिक ग्रंथों में मारण प्रयोग कहा गया है।

जब भी कृष्ण पक्ष की चतुर्दशी को मंगलवार हो, तो उस दिन गोशाला की मिट्टी और जहां चार रास्ते मिलते हों, वहां की मिट्टी द्वारा पुतला बनावें और उस पर शत्रु का नाम लिख लें, फिर उस पर सफेद कपड़ा ओढ़ा दें और सफेद कपड़े पर सियार सिंगी रख लें। फिर हकीक माला से नित्य एक हजार मंत्र जप तीन दिन तक करें, तो निश्चय ही

मारण प्रयोग सिद्ध होता है।

मंत्र

॥ॐ भ्रां भ्रीं भ्रूं मृतेश्वरि कृं कृत्ये अमुकं शीघ्रं मारय मारय क्रौं॥

तीन दिन बाद सरसों और काली मिर्च मिला कर इसी मंत्र की एक हजार आहुतियां दें, तो निश्चय ही शत्रु का मारण होता है।

प्रयोग समाप्त होने के बाद पुतले के साथ ही सियारसिंगी तथा हकीक माला को श्मशान में डाल दें।

वस्तुतः ये सारे प्रयोग अद्भुत और शीघ्र सफलतादायक हैं।

किसी को भी वश में करने का प्रयोग

अधिकारी, नेता, माता–पिता, व्यापारी, प्रेमी–प्रेमिका या कोई भी हो, इस प्रयोग से किसी को भी वश में किया जा सकता है और उससे मनोवांछित कार्य करवाया जा सकता है।

रविवार के दिन ठीक 12 बजे दिन को पूर्व दिशा की ओर मुंह कर बैठ जायें, सामने 'वशीकरण गुटिका' रख दें और वशीकरण माला से निम्न मंत्र की ग्यारह मालाएं फेरें।

मंत्र

॥ॐ भगवति विद्या मोहिनी 'अमुक' आकर्षय आकर्षय हुं॥

मंत्र जप पूरा होने पर वशीकरण माला गले में धारण कर लें और 'वशीकरण गुटिका' को जमीन में गाड़ दें, तो वह निश्चय ही वश में हो जाता है। मंत्र में जहां 'अमुक' शब्द आया है, वहां उस व्यक्ति का नाम लेना चाहिए, जिसे वश में करना हो।

मंत्र जप के बाद 'वशीकरण गुटिका' जमीन में गाड़ देनी चाहिए, वह गुटिका जब तक जमीन में गड़ी हुई रहेगी, तब तक वह व्यक्ति या स्त्री वश में रहेगी और जैसा कहेंगे, वैसा ही कार्य करेगी।

यह तीक्ष्ण प्रभावशाली और शीघ्र सिद्धिदायक प्रयोग है, इसका वार कभी भी खाली नहीं जाता।

सिद्ध गोपनीय हाजरात

प्राचीन पुस्तकों, पुरानी परतों, गुप्त और तिब्बत के लामाओं के पास छिपे हाजरात सरहदपादों के माध्यम से, जो महत्वपूर्ण गोपनीय प्रयोग प्राप्त हुए, वे पाठकों के लिए संसार में पहली बार प्रकाशित किये जा रहे हैं। इन प्रयोगों को प्राप्त करने के लिए मैं भारत में ही नहीं भारत के बाहर भी बहुत घूमा हूं और जरूरत से ज्यादा कठिनाइयां देखीं, तब जाकर ये हाजरात प्राप्त हुए हैं, जो सौ टंच सोने की तरह खरे हैं, प्रामाणिक हैं, तुरन्त फल देने में समर्थ हैं और कार्य करने में रामबाण की तरह हैं। पाठकों को चाहिए, कि वे स्वयं इन हाजरातों को आजमा कर देख लें, तब उन्हें भरोसा हो जायेगा, कि ये हाजरात कितने महत्वपूर्ण हैं।

लक्ष्मी हाजरात

इस हाजरात को पुरुष या स्त्री कोई भी कर सकता है। किसी भी शुक्रवार की रात्रि को यह हाजरात सम्पन्न हो सकता है या भौमवासरीय दशमी पड़े, तो उस दिन यह प्रयोग किया जाय, तो ज्यादा उचित रहेगा।

जिस दिन यह हाजरात सम्पन्न करना हो, उस दिन स्नान कर पीला वस्त्र धारण कर ठीक बारह बजे रात्रि को आसन पर बैठ जायें, सामने **'काकतुम्बी'** का टुकड़ा रख दें, उस पर सिंदूर से ग्यारह बिन्दियां लगावें और सामने खीर का भोग लगा दें, फिर **हकीक माला** से निम्न मंत्र का ग्यारह माला मंत्र जप **'काकतुम्बी'** के सामने करें –

मंत्र

॥ ॐ ऐं महालक्ष्मी आवे घर में गोड़मार बैठे हुं फट्॥

जब ग्यारह माला मंत्र जप पूरे हो जायें, तो वहीं पर अपने सामने किसी पात्र में अग्नि प्रज्ज्वलित कर इसी मंत्र की 108 आहुतियां खीर से दें, फिर वहीं पर ग्यारह आहुतियां घी की भी दें।

मंत्र जप करने के बाद प्रातःकाल वह काकतुम्बी और माला को नदी में प्रवाहित कर दें। धन, सम्पदा, आर्थिक उन्नति के लिए यह अचूक प्रयोग है।

लीलपरी हाजरात

जिस दिन चतुर्थी को मंगलवार हो, उस दिन यह हाजरात किया जाता है, हाजरात की रात को तहमद और बनियान पहन कर मस्तक पर मुसलमानी टोपी पहनें, एकान्त स्थान पर सवा हाथ चौड़ा तथा ढाई हाथ लम्बा सफेद कपड़ा बिछाकर उस पर इस प्रकार बैठे, जिस प्रकार मुसलमान नमाज पढ़ते समय बैठते हैं। कानों में हीना के इत्र का फाहा लगावें, सामने गुलाब के इत्र का फाहा, एक लगा हुआ मीठा पान, सफेद फूल, पानी का लोटा, लोबान धूप व '**अजीगोपा**' का टुकड़ा रखें।

फिर लोबान धूप लगा लें और हकीक माला से मंत्र जप प्रारम्भ करें, '**हकीक माला**' में अस्सी या इससे ज्यादा मनके हों, पर एक सौ से कम हों।

हाजरात प्रारम्भ करने से पहले कहें – लीलपरी, मैं तुम्हारी प्रेमिका के रूप में साधना कर रहा हूं, तुम्हें जीवन भर मेरे वश में होकर मेरा कहना मानना है, इसके बाद ग्यारह माला मंत्र जप करें।

मंत्र

।। विशमिल्लाहर्रहमान नीरहीम लाय जल्लल्लिहालेमत्ताइल्लाहू।।

उस रात को जब लील परी मंत्र जप के बाद सामने आवे, तो आधा पान उसे खिला दें और आधा पान स्वयं खा लें, ऐसा करने से लीलपरी प्रेमिका के रूप में वश में हो जाती है और जीवन भर रात को बहुत सा द्रव्य लाकर अपने प्रेमी अर्थात् साधक को देती है, उसे घर में किसी प्रकार की कोई कमी नहीं रहती।

साधना के दिन मांस, शराब, लहसुन, प्याज आदि नहीं खावे और एक समय शुद्ध भोजन कर रात को यह साधना पूरी कर ले।

हंडिया मूठ हाजरात

इस प्रयोग को किसी भी शुक्रवार को किया ज़ा सकता है, पर पुष्य नक्षत्र को यदि यह हाजरात किया जाय, तो ज्यादा अच्छा रहता है। प्रत्येक महीने में पुष्य नक्षत्र आता है, किसी भी पुष्य नक्षत्र को यह हाजरात पूरा किया जा सकता है।

जिस दिन हाजरात करना हो, उस दिन एक मिट्टी की हांडी ले, उस हंडिया में नागफनी का टुकड़ा रख दें, तेल का चौमुख दीपक बना कर हंडिया में रख दें और हंडिया के ऊपर लाल कपड़ा बांध लें।

फिर रात को अपने घर में या बाहर कहीं पर भी इस हाजरात को पूरा करें। सर्वथा नग्न होकर स्नान कर आसन पर बैठ जायें और सामने हंडिया रख दें, उसके पास ही दूसरा तेल का दीपक लगा दें और '**हकीक माला**' से ग्यारह माला मंत्र जप करें।

इसमें किसी भी प्रकार का आसन हो, किसी भी दिशा की ओर मुंह कर बैठ सकते हैं।

मंत्र

।। ॐ नमो महाकाय योगिनी योगिनी पार पार डाकिनी डाकिनी कल्पवृक्षाय दरिद्रनाशाय लक्ष्मी बन्धय-बन्धय साधय साधय ह्रीं ह्रीं फट् स्वाहा।।

हंडिया में जो तेल का दीपक है, वह बड़ा होना चाहिए और उसमें इतना तेल भर दिया जाना चाहिए, कि ग्यारह माला मंत्र जप करते समय तक तेल खत्म न हो।

जब मंत्र जप पूरा हो जाय, तो वह नागफनी का टुकड़ा बाहर निकाल कर हंडिया के मुंह पर जो लाल कपड़ा बंधा हुआ था, उसमें लपेट लें और दिये सहित हंडिया घर के पास के चौराहे पर फोड़ दें, इस बात का ध्यान रहे, कि चौराहे तक जाते समय और आते समय पीछे मुड़

कर नहीं देखें। हंडिया फेंकते ही उड़ जायेगी। इसके साथ ही जन्म–जन्म की दरिद्रता समाप्त हो जायेगी और घर में धन की वर्षा सी होने लगेगी।

वह लाल कपड़े में लपेटा हुआ नागफनी का टुकड़ा तिजोरी में सुरक्षित रूप से रख देना चाहिए, जब तक वह घर में रहेगा, धन की कमी नहीं रहती।

जिन्न परी हाजरात

इस हाजरात को किसी भी शुक्रवार को सम्पन्न किया जा सकता है। इसमें अत्यन्त सुन्दर यौवन भार से लदी हुई आकर्षक परी को प्रेमिका रूप में वश में किया जाता है, जिससे वह जीवन भर साधक के प्रत्येक कार्य को पूरा करती है और साथ ही साथ जो भी मांगो, वह लाकर देती है।

शुक्रवार की रात को लगभग दस बजे पानी में गुलाब जल मिलाकर स्नान करें, फिर बालों में सुगन्धित तेल लगावें, नीचे तहमद बांधें, बनियान पहनें और सिर पर मुसलमानी टोपी धारण करें, कानों में हीना का इत्र लगावें और हो सके, तो गले में गुलाब या चमेली का हार पहनें, आंखों में हल्का सा काजल लगावें।

फिर नीचे डेढ़ हाथ लम्बा और ढाई हाथ चौड़ा सफेद कपड़ा बिछाकर, उस पर बैठ जायें और सामने **'गुंजाफल'** रख दें, इसके साथ ही साथ एक कटोरी में सिन्दूर, पानी का लोटा, गुलाब के इत्र का फाहा, सुगन्धित फूलों का हार तथा लोबान धूप रख दें।

ठीक रात बारह बजे हाजरात शुरु करें, लोबान धूप लगा दें और सामने **'गुंजाफल'** रख कर सिंदूर से उस पर बिन्दी लगावें और फिर मुस्करा कर जिन्न परी को प्रार्थना करें, कि वह आज की रात को हाजिर हो, शरीर सुख दे, जो कहूं वैसा करे, प्रेमिका की तरह वश में रहे और जीवन भर जो मांगूं, वह लाकर दे।

फिर **'हकीक माला'** से निम्न मंत्र का ग्यारह माला मंत्र जप करें

मंत्र

॥ रव्चे इन्नी मगलूबुने फन्तसीर॥

जब मंत्र जप पूरा हो जाय, तो सामने सोलह शृंगार किये हुए जिन्न परी हाजिर हो, तो घबरावें नहीं, अपितु उसे अपने पास में बिठा दें और पहले से ही लाकर रखी हुई मिठाई अपने हाथों से खिलावें, उसके कानों में नीचे रखा हुआ गुलाब के इत्र का फोहा लगावें और पास में पड़ी हुई सुगन्धित फूलों की माला उसके गले में पहना दें। ऐसा करने पर जिन्न परी वश में हो जाती है और वचन देती है, कि मैं जिन्दगी भर जरखरीद बांदी की तरह हाजिर रहूंगी, शरीर सुख दूंगी और जो भी कहोगे, करूंगी।

तब अपने गले में पहना हुआ हार भी उसके गले में डाल दें और वह रात उसके साथ ही व्यतीत करें, सुबह उठने पर 'गुंजाफल' को किसी डिब्बी में बंद कर सुरक्षित स्थान पर रख दें। जब तक वह 'गुंजाफल' आपके पास रहेगा, जिन्न परी आपके वश में रहेगी और जो भी कहेंगे, करती रहेगी, यही नहीं अपितु धन–दौलत भी लाकर देती रहेगी। हकीक माला को नदी में प्रवाहित कर दें।

कज्जल हाजरात प्रयोग

इस हाजरात को मैंने कई बार आजमाया है और हर बार सफल हुआ है। मैंने ही नहीं, जिसने भी यह हाजरात आजमाया है, वह चमत्कृत होकर रह गया है।

इस हाजरात को शुक्रवार की रात को करना चाहिए। हाजरात की रात को सामग्री में काजल की एक डिबिया, कांसे की एक कटोरा, पानी का लोटा और **'भुरुकुटी की जड़'** रख देनी चाहिए।

फिर सफेद तहमद बांधकर सफेद कपड़ा बिछा कर पश्चिम की ओर मुंह कर उस प्रकार बैठ जायें, जिस प्रकार मुसलमान नमाज पढ़ते समय बैठते हैं और सामने काजल की डिबिया खोल कर रख दें, डिबिया के ऊपर भुरुकुटी की जड़ रख दें और तेल का दीपक लगाकर निम्न मंत्र का ग्यारह माला मंत्र जप **'हकीक माला'** से करें –

मंत्र

॥ नारसिंह नारी का जाया, मोहन करणी मेरी माया, पढ़त मंत्र

उलट देव, देव देव जाय चौखूंट हिलाया, तो सा वीर देखा न पाया, जल अग्नि न बांधे कार, नारी करे न घर सम्हार, डारूं ऐसी मोहनी तन कम्पे हलाय, वशीकरण न करे, तो धोबी के घर जाय, मेरी भक्ति गुरु की शक्ति, फुरो मंत्र ईश्वरो वाचा ॥

प्रत्येक माला मंत्र जप के बाद काजल की डिबिया में से काजल निकाल कर भुरुकुटी की जड़ पर बिन्दी सी लगा दें, इस प्रकार ग्यारह मालाएं पूरी कर लेनी चाहिए।

सुबह उठ कर काजल को सम्हाल कर रख दें और भुरुकुटी की जड़ को लाल कपड़े में लपेट कर किसी मजार पर चढ़ा दें।

यह काजल अत्यन्त ही शक्तिशाली होता है, इस काजल को उंगली पर लेकर जिसके भी वस्त्र पर लगा दिया जाता है, वह निश्चय ही वश में हो जाता है। इससे किसी भी स्त्री-पुरुष को, अधिकारी को, शत्रु को पूरी तरह से वश में किया जा सकता है।

इस काजल का प्रभाव एक वर्ष तक रहता है, एक वर्ष के बाद फिर इसी तरीके से काजल की नई डिबिया तैयार कर लेनी चाहिए।

सर्व साधना सिद्धि प्रयोग

प्रत्येक व्यक्ति जो कार्य सम्पन्न करता है, वह उसमें सफलता प्राप्त करना चाहता है। चाहे वह सामाजिक क्षेत्र हो, आर्थिक क्षेत्र हो या भौतिक क्षेत्र हो या साधना क्षेत्र हो। वास्तव में देखा जाए, तो असफलता जीवन की उच्चता नहीं है, असफलता न्यूनता है और हम जीवन में सफल हों, चाहे हम कोई भी साधना करें, हमें सफलता मिले और हम जीवन में पूर्ण हों। इस प्रयोग के माध्यम से हम साधनाओं की न्यूनताओं को समाप्त कर सफलता प्राप्त कर सकते हैं। प्रत्येक साधना सम्पन्न करने से पूर्व नित्य प्रातः निम्न मंत्र का 21 बार उच्चारण कर अपनी दैनिक साधना प्रारम्भ करें –

॥ ॐ ह्रीं कार्य साफल्य सिद्धये ॐ फट् ॥



प्रत्यक्ष भूत सिद्धि

कुछ साधनाएं कभी-कभी अनायास ही हाथ लग जाती हैं और जब उन्हें कसौटी पर कस कर देखते हैं, तो वे परीक्षण में पूर्णतः सफल उतरती हैं तथा कम से कम समय में जब वे पूरी सफलता देती हैं, तो मन उस साधना को ज्यादा से ज्यादा साधकों को देने की इच्छा रखता है।

यह साधना भी अचानक ही पिछले दिनों मुझे गंगोत्री यात्रा के अवसर पर एक योगी से प्राप्त हुई, पर जब मैंने गुरुदेव से इस सम्बन्ध में निवेदन किया, तो उन्होंने घर पर ही बैठ कर साधना सम्पन्न करने की आज्ञा दी। उस योगी के निर्देशानुसार मैंने साधना सम्पन्न की, तो 21वें दिन ही प्रत्यक्ष चमत्कार देख कर आश्चर्यचकित हो गया।

मनुष्य के अलावा अन्य योनियों का अस्तित्व भी संसार में विद्यमान है, बुद्धि की अनिवार्यता से ग्रस्त होकर भले ही मुट्ठी भर लोग सत्य को अनदेखा करें, परन्तु इससे सत्य छुप नहीं सकता। भूत योनि भी ऐसी ही एक प्रामाणिक योनि है, जिनका अपना संसार है, अपनी विचारधारा और मर्यादा है तथा उनकी स्वयं की कार्य करने की शैली है।

मनुष्य जीवन में भी कुछ मालिक ऐसे होते हैं, जिन्होंने धन रूपी साधना सम्पन्न की हुई होती है, वे व्यक्तियों को अपना सेवक बना कर रख सकते हैं और उससे मनोवांछित कार्य सम्पन्न करवाते हैं। इन सेवकों से घर की सफाई कराना, भोजन पकाना, शरीर की मालिश कराना, व्यापार में सहायता लेना, किसी वस्तु को एक जगह से दूसरी जगह भेजना-मंगवाना आदि कार्य सम्पन्न होते हैं और वे बिना कुछ अवज्ञा किये उस कार्य को सम्पादित करते हैं।

ठीक इसी प्रकार भूत योनि भी सेवक की तरह होती है, जिसे मंत्र से आबद्ध करने पर वह वश में रहता है और जो भी आज्ञा देते हैं, वह कार्य सम्पन्न करता है।

मनुष्य और भूत में अंतर

मनुष्य में कई विशेषताओं के साथ दो न्यूनताएं भी हैं, एक तो वह गुरुत्वाकर्षण शक्ति से आबद्ध है, इसीलिए जमीन से ज्यादा ऊपर नहीं उठ पाता, दूसरे वह पंचभूतात्मक – जल, अग्नि, वायु, आकाश और पृथ्वी – सम्पन्न होने के कारण ठोस होता है, सबको दिखाई देता है और पृथ्वी तत्त्व प्रधान होने के कारण वायुवेग से शून्य पथ द्वारा एक स्थान से दूसरे स्थान तक नहीं जा सकता।

इसके विपरीत भूत में न तो गुरुत्वाकर्षण होता है और न पृथ्वी तत्त्व प्रधान ही, इस वजह से वह अदृश्य रहकर कार्य कर सकता है, वह कुछ ही सेकेण्डों में वायुवेग से एक स्थान से दूसरे स्थान तक जा सकता है और कार्य सम्पादित कर कुछ ही क्षणों में वापिस आ सकता है।

क्या भूत भयप्रद एवं हानिकारक होते हैं

सही रूप से देखा जाय, तो भूत न तो हानिकारक होते हैं और न भयप्रद ही। वे मनुष्य की अपेक्षा ज्यादा सरल, सौम्य और विश्वासपात्र होते हैं। उन्हें जो भी कार्य करने के लिए दिया जाता है, निष्ठापूर्वक करते हैं। जीवन में कभी न तो क्रोधित होते हैं और न क्रोधातिरेक में अपने स्वामी को हानि पहुंचाने की चेष्टा करते हैं। सही अर्थों में तो भूत पूर्णतः विश्वासपात्र और मदद करने वाले स्वामिभक्त होते हैं, हर क्षण अदृश्य रूप में स्वामी के साथ रहते हैं और उनके प्राणों की रक्षा करने के साथ–साथ आज्ञा पालन करते हैं।

क्या–क्या कार्य करते हैं

भूत अत्यधिक बलशाली और शक्ति सम्पन्न होने के कारण असम्भव कार्यों को भी सम्भव कर दिखाते हैं और रक्षक की तरह रक्षा

करना, इच्छानुकूल धन लाकर देना, कितनी ही दूर से समाचार लाकर देना, सामान पहुंचाना या सैकड़ों मील दूर से सामान लाकर देना बिना नू–नच के करते रहते हैं। वे सर्वथा अदृश्य बने रहते हैं और किसी भी प्रकार से हानि पहुंचाने की चेष्टा नहीं करते, जब उन्हें स्मरण किया जाता है, तो वे आंखों के सामने प्रकट होते हैं और आज्ञा प्राप्त कर कार्य में जुट जाते हैं।

क्या इनकी साधना घर में की जा सकती है

मेरा अनुभव यह हुआ, कि अपने घर में रह कर भी यह साधना सम्पन्न की जा सकती है और मात्र इक्कीस दिनों में ही भूत वश में कर कार्य सम्पादित करवा सकते हैं। इस साधना को वर्ष में कभी भी शुक्रवार से प्रारम्भ किया जा सकता है।

साधना विधि

शुक्रवार की रात्रि को घर के किसी एकान्त कमरे में (ऐसा कमरा, जिसमें 21 दिनों तक आपके अलावा दूसरा कोई न जा सके) काला आसन बिछा कर, काली धोती पहन कर दक्षिण दिशा की ओर मुंह कर बैठें और सामने तेल का दीपक लगा लें, दीपक में किसी भी प्रकार का तेल प्रयोग में लाया जा सकता है।

सामने मिट्टी के एक पात्र में काजल से उंगली द्वारा 'महाभूताय नमः' लिखें और उस पर '**भूत डामर यंत्र**' रख दें। फिर हाथ जोड़कर निवेदन करें, कि मैं भूत सिद्धि प्रयोग कर रहा हूं, मुझे भूत सिद्ध हो, जो जीवन भर मेरे वशवर्ती रहे और आज्ञानुसार कार्य सम्पन्न करे।

फिर यक्ष निर्वाण तंत्र से सिद्ध '**हकीक माला**' से नित्य ग्यारह माला मंत्र जप करें, तेल का अखण्ड दीपक जलता रहे, इस प्रकार बिना नागा 21 दिन तक साधना करें। इक्कीसवें दिन निश्चय ही सौम्य स्वरूप में भूत प्रस्तुत होगा और स्वयं कहेगा, कि मैं काली का गण हूं और आपके वशवर्ती हूं, मेरा नाम लेकर पुकारेंगे, तब मैं हाजिर होऊंगा और आप जो भी आज्ञा देंगे, उसे पूरा करूंगा।

मंत्र

॥ ॐ क्लीं कालिके कालिकाय भूताय नमः॥

तब उसे इक्कीसवें दिन ही तैयार किये हुए पांच तिल के लड्डू (इक्कीसवें दिन सवा पाव काले तिलों में थोड़ा गुड़ मिलाकर मंत्र जप से पूर्व ही सामने रख देने चाहिए) का भोग लगावें, ऐसा करने पर वह लड्डू लेकर अदृश्य हो जायेगा और वह जीवन भर वश में रहेगा तथा कार्य सम्पन्न करेगा, जब भी उसे उस नाम से पुकारेंगे, तो वह आंखों के सामने प्रत्यक्ष होगा, जिसे केवल आप ही देख पायेंगे और आप जो भी आज्ञा देंगे, वह पूरा करेगा।

यह पूर्णतः प्रामाणिक साधना है, जिसे प्रत्येक साधक को करना ही चाहिए, साधना समाप्त होने के अगले दिन समस्त साधना सामग्री को नदी में विसर्जित कर दें।

वीर्य स्तम्भन मंत्र

यह मंत्र ग्रहण काल में सिद्ध किया जाता है और यह अपने आप में श्रेष्ठ मंत्र है, जो व्यक्ति कमजोर हो, धातु–क्षीणता का शिकार हो, जिसका वीर्य पतला और दुर्गन्ध युक्त हो या जो अपनी पत्नी को सन्तुष्ट नहीं कर पाता हो या जो शीघ्र स्खलन का शिकार हो या किसी भी प्रकार से सम्भोग करने में कमजोर हो, तो उसके लिए यह मंत्र वरदान स्वरुप है।

ग्रहण काल में दक्षिण दिशा की ओर मुंह कर बैठे फिर अपने सामने मंत्र सिद्ध चैतन्य मूंगा रख कर हकीक माला से निम्न मंत्र की केवल पांच माला जप करने से ही यह मूंगा सिद्ध हो जाता है –

॥ॐ नमो भगवते महाबल पराक्रमाय मनोभिलषित स्तम्भनं कुरु कुरु स्वाहा॥

इसके बाद यह मूंगा जीवन भर उपयोगी बना रहता है, जब भी सम्भोग की इच्छा हो, उससे पहले यह मंत्र पांच बार पढ़ कर इस मूंगे को अपने मुंह में रख लें और एक मिनट बाद मूंगे को मुंह से निकाल कर सुरक्षित स्थान या सन्दूक में रख दें, इसके बाद यदि सम्भोग किया जाय, तो निश्चय ही वीर्य स्तम्भन होकर पूर्ण सुख प्राप्त होता है।

शून्य में से कोई भी पदार्थ प्राप्त करें

कोई भी साधना या कोई भी रहस्य तभी तक रहस्य है, जब तक वह हमारी समझ में नहीं आता। प्रत्येक मोटर, मशीन या कार्य की एक गुप्त कुंजी होती है, एक मूल रहस्य होता है और जब तक वह रहस्य प्राप्त नहीं होता, तब तक वह कार्य असम्भव लगता है। हमारी बुद्धि उस स्तर तक सोच ही नहीं पाती, कि ऐसा हो सकता है और जब बुद्धि ऐसा सोच नहीं पाती, तो हम यह मान लेते हैं, कि यह सब ढोंग है, पाखण्ड है, छलावा है।

गुप्त रहस्य

इसका कारण यह है, कि अधिकांश साधना रहस्य गोपनीय ही रहे, इसके जो जानकार थे, वे हिमालय में अपनी साधनाओं में व्यस्त थे, उन्हें दुनिया से कोई लेना–देना नहीं था, इसलिए प्रामाणिक ज्ञान या प्रामाणिक रहस्य प्राप्त नहीं हो पाता था।

ऐसे संन्यासी भी इस प्रकार की साधनाएं और सिद्धियां प्रत्येक व्यक्ति को बताते नहीं थे, मरते समय अपने एक–आध शिष्य को उस प्रकार की साधना का रहस्य बता देते थे और इसलिए एक प्रकार से बहुत ही कम योगियों के पास यह जानकारी थी।

शंकराचार्य इस साधना के अद्वितीय सिद्ध योगी थे और वे अपने जीवन में हजारों बार शून्य में से कोई भी पदार्थ प्राप्त कर लोगों के सामने रख देते थे, इस सामग्री में खाद्य पदार्थ, रुपये–पैसे, वस्तु, द्रव्य या

अन्य कोई भी वस्तु या पदार्थ हो सकता है।

यह साधना निश्चय ही गोपनीय रही, परन्तु शंकराचार्य की परम्परा में ही उच्चकोटि के योगी प्रणवाचार्य जी एक विभूति हैं, उन्होंने इस क्षेत्र में अद्वितीयता प्राप्त की है और सृष्टि विज्ञान या पदार्थ विज्ञान के वे अन्यतम आचार्य हैं।

यह मेरा सौभाग्य रहा, कि मैं लगभग तीन वर्ष तक उनके आश्रम में रहा और उनकी कृपा से ही मुझे शून्य से पदार्थ प्राप्ति की साधना प्राप्त हुई। मैंने इसे सार्वजनिक रूप से सैकड़ों स्थानों पर दिखाया है और हर बार यह पूर्णता के साथ सम्पन्न हुई है।

आज मैं घनघोर जंगल में ताजा और स्वादिष्ट भोजन प्राप्त कर सकता हूं, मनोवांछित द्रव्य या रुपये–पैसे शून्य से प्राप्त कर सकता हूं, दूसरे शब्दों में कुछ भी चाहूं, वह सामग्री हवा में मुट्ठी लहराते ही प्राप्त हो जाती है, जिसका उपयोग मैं तो करता ही हूं, मेरे अन्य परिचित भी लाभ उठाते हैं।

सर्वप्रथम साधक स्नान कर, पीले वस्त्र धारण कर, पीले आसन पर पूर्व की ओर मुंह कर बैठ जायें और अपने सामने जलपात्र, अगरबत्ती, शुद्ध घृत का दीपक रख लें, तत्पश्चात् '**शून्य सिद्धि यंत्र**' को लाल वस्त्र बिछा कर उस पर स्थापित कर दें, यह यंत्र विन्ध्यवासिनी कीलक से सिद्ध एवं सिद्ध बीज से सम्पुटित हो।

विनियोग

दाहिने हाथ में जल लेवें –

ॐ अस्य श्री विन्ध्यवासिनी विशालाक्षी महालक्ष्मी अष्टाक्षर मंत्रस्य श्री सदाशिव ऋषिः पंक्तिश्छन्दः श्री महालक्ष्मी देवता ह्रीं बीजम् ॐ शक्तिः, चतुर्वर्गसिद्धयर्थे जपे विनियोगः।

जल भूमि पर छोड़ दें।

ऋष्यादि न्यास

श्री सदाशिव ऋषये नमः शिरसि।

पंक्तिश्छन्दसे नमः मुखे।
विशालाक्षी श्री महालक्ष्मी देवतायै नमः हृदि।
ह्रीं बीजाय नमः गुह्ये।
ॐ शक्तये नमः पादयोः।
चतुर्वर्गसिद्धयर्थे जपे विनियोगाय नमः सर्वांगे।

ध्यान

ध्यायेद् देवीं विशालाक्षीं तप्त–जाम्बू–नद–प्रभां।
द्विभुजामम्बिकां चण्डीं खड्ग खर्पर–धारिणीम्।।
नानालंकार–सुभगां रक्ताम्बर–धरां शुभां।
सदा षोडश–वर्षीयां प्रसन्नास्यां त्रिलोचनाम्।।
मुण्ड–मालावली–रम्यां पीनोन्नत–पयोधरां।
वर–दात्रीं महा–देवीं जटा–मुकुट मण्डिताम्।।
शत्रु–क्षय करीं देवीं साधकाभीष्ट दायिकां।
सर्व–सौभाग्य–जननीं महासम्पत्प्रदां स्मरेत्।।

इसके बाद साधक मूल मंत्र का जप करें और नित्य 21 माला मंत्र जप करें –

मंत्र

।। ॐ ह्रीं कालि महाकालि किले किले फट् स्वाहा।।

नियम

1. इस साधना में साधक पीली धोती पहनें और पीले ही आसन पर बैठें।
2. पुरुष या स्त्री कोई भी इस साधना में भाग ले सकता है।
3. यह पांच दिन की साधना है और हकीक माला या स्फटिक माला से यह मंत्र जप किया जाना चाहिए।
4. सामने '**शून्य सिद्धि यंत्र**' को लाल वस्त्र पर रख कर उस पर नजर

रखते हुए मंत्र जप करें।

जब साधना समाप्त हो जाय, तो सवा किलो आटा, तीन पाव गुड़ तथा एक पाव घी मिलाकर हलवे की तरह बना लें और किसी मिट्टी के पात्र में वह हलवा रख दें, फिर उस पर चार दिये लगा दें और उन चारों दियों के आस–पास पांच लाल मिर्च, पांच कोयले के टुकड़े तथा पांच लोहे की कीलें रख दें और साधक इस सामग्री को रात्रि में जहां तीन या चार रास्ते मिलते हों, वहां रख दें अथवा जंगल में जाकर रख दें, रखकर पीछे मुड़कर न देखें और घर आकर स्नान कर लें। इसमें किसी प्रकार का भय नहीं है और साधक को चिन्ता करने की जरूरत नहीं है। माला तथा यंत्र को नदी में प्रवाहित कर दें।

यह पूर्णतः सौम्य साधना है तथा गायत्री उपासक अथवा ब्राह्मण इस साधना को सम्पन्न कर सकता है।

साधना सम्पन्न होने के बाद साधक अपने शरीर को बड़ी चादर से ढक लें और अपने पास थोड़ी सीं जगह रखें और फिर मंत्र पढ़ कर जिस वस्तु की इच्छा करेगा, वह वस्तु चादर में ही उसके पास प्राप्त हो जायेगी।

यह मेरा आजमाया हुआ सिद्ध प्रयोग है और सर्वथा गोपनीय है, जिसे मैंने अपने जीवन में पहली बार साधकों के लिए स्पष्ट किया है।

बाधा निवारण प्रयोग

इस प्रयोग को सम्पन्न करने के बाद बाधा, अड़चन या मुसीबत आपके लिए एक छोटी सी कंकरी है, जिसे आप पलक झपकते ही उछालने की क्षमता रखते हैं, क्योंकि अब आप समर्थ हैं, कि चाहे कितनी भी बड़ी बाधा क्यों न हो, उसे एक झटके में हटा देंगे और बना लेंगे अपने जीवन को निष्कंटक।

किसी कागज पर अपनी परेशानी लिखकर उस पर '**ब्लक्ष**' रखें, फिर उसके सामने 51 बार निम्न मंत्र का जप 7 दिन तक करें –

॥ ॐ क्लीं क्लेशनाशाय क्लीं फट् ॥

आठवें दिन **ब्लक्ष** को उस कागज समेत मौली से बांधकर नदी में प्रवाहित कर दें, तो आप शीघ्र ही अपनी परेशानियों और बाधाओं को दूर कर लेंगे।

सिद्ध सफल प्रयोग

हमारे शास्त्रों में इतने अधिक प्रयोग और विधियां दी हुई हैं, कि कभी–कभी तो उन प्रयोगों की सफलता देखकर आश्चर्यचकित रह जाना पड़ता है। मैंने अपने शिष्यों और साथियों को इन प्रयोगों के माध्यम से सफलता दिलाई है, उनकी समस्याएं दूर की हैं, कठिनाइयों पर विजय प्राप्त की है और अपने मन की इच्छाओं को पूर्ण किया है।

ये ऐसे प्रयोग हैं, जिन्हें सिद्ध करने की आवश्यकता नहीं होती और न सवा लाख या पांच लाख मंत्र जप करने की अनिवार्यता होती है, इसमें कोई विशेष विधि–विधान या पूजा–पाठ की भी आवश्यकता नहीं होती। ये तो सीधे सरल प्रयोग हैं और तुरन्त इनका प्रभाव प्राप्त होता है।

जिस प्रकार घर में अगरबत्ती लगाते ही उसकी सुगन्ध से घर महकने लग जाता है, उसी प्रकार इन प्रयोगों को सम्पन्न करते ही अनुकूलता एवं कार्य सिद्धि अनुभव होने लग जाती है। मैं नीचे के पृष्ठों पर उन अनुकूल प्रयोगों को दे रहा हूं, जिनको मैंने कई बार आजमाया है और प्रत्येक बार अपनी कसौटी पर पूर्ण खरे उतरे हैं।

गमन रक्षा

हमें कई बार कई स्थानों पर जाना होता है और मन में चिन्ता बनी रहती है, कि जाने पर कार्य सम्पन्न होगा या नहीं या कार्य में कोई बाधा तो नहीं आयेगी अथवा जिस अधिकारी के पास जा रहे हैं, वहां जाने पर जो मैं कार्य चाहता हूं या जिस प्रकार से मैं कार्य चाहता हूं, उस

प्रकार से कार्य सफल होगा या नहीं, ऐसा सन्देह बराबर बना रहता है।

इसके लिए एक महत्वपूर्ण प्रयोग है और इस प्रयोग को सम्पन्न कर यदि किसी से मिलने जायें या यात्रा करें, तो अवश्य ही कार्य में सफलता और सिद्धि मिलती है, अधिकारी या हम जिससे बात करना चाहते हैं, वह मिल जाता है और हमें किसी प्रकार की परेशानी नहीं आती।

यात्रा करने से पूर्व कुछ सरसों के दाने अपनी मुट्ठी में लेकर निम्न मंत्र का पांच बार उच्चारण कर यात्रा करें, तो अवश्य ही कार्य में सफलता मिलती है। यह यात्रा चाहे दिन में दस बार करनी पड़े या एक स्थान से दूसरे स्थान पर जाना पड़े अथवा शहर में ही किसी से मिलने जाना पड़े, तब यह उपाय बहुत उपयोगी है।

सरसों के दाने हाथ में लेकर पांच बार मंत्र पढ़कर वे सरसों के दाने अपने ऊपर घुमा कर, जिस तरफ जाना है, उस तरफ फेंक दें और यात्रा प्रारम्भ कर दें, तो अवश्य ही कार्य में सिद्धि प्राप्त होती है।

मंत्र

॥ ॐ क्लीं रक्ष रक्ष कार्यसिद्धयै ह्रीं ह्रीं फट्॥

यह मंत्र अत्यधिक उपयोगी है और इसे सिद्ध करने की आवश्यकता नहीं है, केवल पांच बार उच्चारण करना ही पर्याप्त है।

रोग नाश के लिए

कई बार घर में सदस्यों को रोग हो जाता है और इलाज करवाने पर भी पूरी सफलता नहीं मिल पाती, अगर पत्नी की बीमारी ठीक होती है, तो पुत्र बीमार पड़ जाता है और पुत्र की बीमारी ठीक होती है, तो खुद तकलीफ पाने लग जाते हैं, ऐसी किसी भी स्थिति के लिए यह प्रयोग आश्चर्यजनक रूप से सहायक है।

आधी रात के समय शांत चित्त होकर दक्षिण दिशा की ओर मुंह कर बैठ जायें और सामने महाकाली का चित्र रख दें तथा स्वयं काली मिर्च और सरसों को रोगी के ऊपर घुमाकर महाकाली के सामने उसे रख

दें और ठीक आधी रात के समय हकीक माला से निम्न मंत्र की पांच माला मंत्र जप करें –

मंत्र

रोगानशेषानपहंसि तुष्टा रुष्टा तु कामान् सकलानभीष्टान्। त्वामाश्रितानां न विपन्नराणां त्वामाश्रिता ह्याश्रयतां प्रयान्ति॥

इसके बाद जब पांच माला मंत्र जप पूरा हो जाय, तो सरसों और काली मिर्च को पुनः रोगी के ऊपर सात बार घुमाकर घर के बाहर गड्ढा खोदकर जमीन में गाड़ दें। ऐसा करने पर आश्चर्यजनक रूप से लाभ प्राप्त होता है और तुरन्त आराम होने लग जाता है।

इस प्रयोग को मैंने सैकड़ों लोगों पर आज़माया है और प्रत्येक बार मुझे सफलता मिली है। वास्तव में ही यह प्रयोग अपने आप में आश्चर्जनक रूप से सिद्धिदायक है, पर इसमें शर्त यही है, कि मंत्र जप ठीक आधी रात को हो।

संकट निवारण प्रयोग

कई बार अचानक जीवन में संकट आ जाते हैं और ऐसा लगता है, कि इस संकट से मुक्ति पाना असम्भव है। यह संकट शत्रुओं का डर, राज्य भय, इन्कम टैक्स का भय या अन्य किसी प्रकार का हो सकता है।

मेरा यह अनुभव रहा है, कि किसी प्रकार का संकट हो या मन में भय व्याप्त हो गया हो, तो यह प्रयोग अपने आप में आश्चर्यजनक रूप से सफलतादायक है।

मैंने जीवन में अनुभव किया है, कि कठिन से कठिन विपत्तियों में भी इस प्रयोग ने मेरी रक्षा की है और कुछ ही समय में उस भय से मुक्ति मिल गई है। यह अपने आप में अत्यन्त ही तेजस्वी और भय से मुक्ति दिलाने में सर्वाधिक उपयोगी है, इस प्रयोग को सम्पन्न करते ही दूसरे दिन से ही अनुकूल वातावरण बनने लग जाता है और दो–तीन दिन में कार्य सिद्ध हो जाता है।

रात्रि को ठीक 12 बजे लाल आसन पर लाल धोती पहन कर

पूर्व की ओर मुंह कर बैठ जायें और हकीक माला से 11 माला मंत्र जप कर लें, जब तक मंत्र जप पूरा न हो जाय, तब तक आसन से उठे नहीं और न ही कोई अन्य कार्य यथा – पानी पीना, लघु शंका करना आदि सम्पन्न करें।

मेरा तो अनुभव यह रहा है, कि मंत्र जप सम्पन्न होते ही कार्य में अनुकूलता प्रारम्भ होने लग जाती है और कार्य सफल हो जाता है, इसमें आधी रात का समय और हकीक माला दोनों आवश्यक हैं।

मंत्र

॥ ॐ ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे ॐ ग्लौं हूं क्लीं जूं सः ज्वालय ज्वालय ज्वल ज्वल प्रज्वल प्रज्वल ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे ज्वल हं सं लं क्षं फट् स्वाहा॥

प्रयोग समाप्त होने पर '**हकीक माला**' को निर्जन स्थान में डाल दें। इस प्रयोग को पाठकों को अपनाना चाहिए और स्वयं अनुभव करना चाहिए, कि इस मंत्र में कितनी अधिक शक्ति और उपयोगिता है।

निश्चित कामना पूर्ति प्रयोग

कई बार हमें अपने जीवन में ऐसे कई कार्य सम्पन्न करने पड़ते हैं, जो हमारे जीवन में आवश्यक होते हैं, यदि वे कार्य समय पर पूर्ण न हों, तो हानि हो सकती है या परेशानियां उत्पन्न हो सकती हैं।

उदाहरण के लिए इन्टरव्यू में सफलता, शीघ्र नौकरी लगना, व्यापार में उन्नति होना या कोई ऐसा कार्य, जो रुका हुआ हो और पूरा नहीं हो रहा हो, तो ऐसे कार्य की सफलता के लिए यह प्रयोग अपने आप में चमत्कारी है। इस प्रयोग को सम्पन्न करते ही कुछ ही दिनों में हमारा कार्य सम्पन्न हो जाता है।

रात्रि के समय स्नान कर लाल धोती पहन कर लाल आसन पर बैठें। इसमें '**हकीक माला**' से 51 माला मंत्र जप अनिवार्य है, यह पूरा मंत्र जप एक ही रात में सम्पन्न हो जाना चाहिए और बीच में उठना या अन्य कार्य करना वर्जित है।

मंत्र

॥ ॐ तत्सवितुर्वरेण्यं महत्कम्या ज्वल ज्वल प्रज्वल प्रज्वल स्वाहा धियो योनः प्रचोदयात् परं ज्योतिर्महा ज्वल ज्वल प्रज्वल प्रज्वल स्वाहा परो रजसे सावदो परं ज्योति कोटि-चन्द्रार्का दीन् ज्वल ज्वल स्वाहा ओमापो ज्योति रसोमृतं ब्रह्म भूर्भुवः स्वरोम् सर्व-तेजो ज्वल ज्वल स्वाहा॥

यह मंत्र अपने आप में इतना तेजस्वी और अद्वितीय मंत्र है, कि इसे मैंने अपने जीवन में सैकड़ों बार आजमाया हो और एक बार भी यह प्रयोग असफल नहीं हुआ। एक बार मैं मुकदमे में बुरी तरह उलझ गया था, सारी परिस्थितियां मेरे विपरीत हो रही थीं, तब मैंने इस प्रयोग को आजमाया और उसके दूसरे दिन से ही आश्चर्यजनक रूप से परिस्थितियां अनुकूल होने लगीं और उस कठिन मुकदमे को मैं जीत गया। इस प्रकार इस प्रयोग से कई लोग इन्टरव्यू में सफल हुए हैं, प्रमोशन प्राप्त किया है और जीवन में पूर्ण अनुकूलता प्राप्त की है।

वास्तव में ही यह प्रयोग कलियुग में चमत्कारिक है और किसी भी प्रकार की कार्य सिद्धि में यह प्रयोग तुरन्त सफलतादायक है।

पुत्र प्राप्ति प्रयोग

पाठकों को विश्वास आये या न आये, परन्तु पुत्र प्राप्ति से सम्बन्धित यह प्रयोग सर्वथा गोपनीय, महत्वपूर्ण और दुर्लभ रहा है। मैंने अपने जीवन में अनुभव किया है, कि चाहे किसी भी प्रकार की बाधा हो, परन्तु इस प्रयोग को सम्पन्न करने पर अवश्य ही पुत्र प्राप्ति होती है।

यह प्रयोग पुत्र प्राप्ति की इच्छा रखने वाली महिला को करना चाहिए। कृष्ण पक्ष की अष्टमी को स्नान कर अपने बाल धोकर आसन पर बैठ जायें और सामने भगवान कृष्ण का चित्र रख दें। यह बाल–गोपाल का चित्र होना चाहिए, जिसमें श्रीकृष्ण घुटनों के बल चल रहे हों या गोप–गवालों के साथ खेल रहे हों। चित्र के सामने '**पुत्रेष्टि यंत्र**' को स्थापित कर दें।

तत्पश्चात् **'हकीक माला'** से निम्न मंत्र का 21 माला मंत्र जप करें और उसके बाद ही भोजन करें, नियमपूर्वक एक समय भोजन करें, इसके अलावा दूध या फल ले सकती हैं, पर अन्न मात्र एक समय ही लें।

इस प्रकार बराबर तीन महीने करें, बीच में रजस्वला समय आने पर इस प्रयोग को पांच दिन के लिए बंद कर दें, बाकी सारे समय में प्रयोग बराबर चालू रखें।

तीन महीने समाप्त होते–होते उसे निश्चित ही गर्भ धारण हो जाता है और वह ठीक समय पर अत्यन्त ही सुन्दर बालक को जन्म देती है। मैंने इस प्रयोग को लगभग सौ से ज्यादा साधिकाओं और शिष्याओं को कराया है और प्रत्येक बार आश्चर्यजनक रूप से सफलता मिली है, एक बार भी यह प्रयोग निष्फल नहीं गया।

मंत्र

॥ ह्रीं हरि-हर पुत्र-लाभाय शत्रुनाशाय मद-गज वाहनाय महाशास्त्राय नमः॥

तीन महीने के बाद पांच बालकों को भोजन करा कर और उन्हें वस्त्र आदि भेंट कर इस प्रयोग को पूर्णता प्रदान करें।

प्रयोग समाप्त होने पर यंत्र तथा माला को नदी में प्रवाहित कर दें। वास्तव में ही पुत्र प्राप्ति के लिए विश्व का यह तेजस्वी मंत्र है, जिसके सम्पन्न करने पर निश्चय ही लाभ होता है।

सर्व सिद्धि प्रयोग

यह प्रयोग मुझे एक उच्चकोटि के महात्मा से मिला था। इससे पूर्व मैंने कई साधनाएं सम्पन्न की थीं, पर किसी भी साधना में पूर्ण सफलता नहीं मिल पा रही थी। इससे मैं सर्वथा निराश और हताश हो गया था और मेरे मन में यह विचार आ गया था, कि कलियुग में ये सारे मंत्र निष्फल और प्रभावहीन हैं।

ऐसे ही दिनों में मेरी भेंट एक संन्यासी से हो गई थी, जो केदारनाथ के मार्ग में एक गुफा में रहते थे। मैंने उनसे चर्चा की, कि

प्रयत्न करने पर भी मुझे किसी भी साधना में सफलता नहीं मिल पा रही है, तो उन्होंने एक सर्वसिद्धि मंत्र दिया और कहा, कि कोई भी साधना सिद्ध करनी है, तो उससे पहले यह प्रयोग सम्पन्न कर लिया जाय, तो निश्चय ही साधना में सिद्धि प्राप्त होती है।

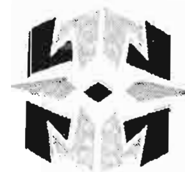
सबसे पहले अपने गुरु का पूजन कर गुरु मंत्र का पांच लाख जप करें और फिर इस सर्वसिद्धि मंत्र की सर्व सिद्धि प्रदायक माला से एक सौ एक माला मंत्र जप करें –

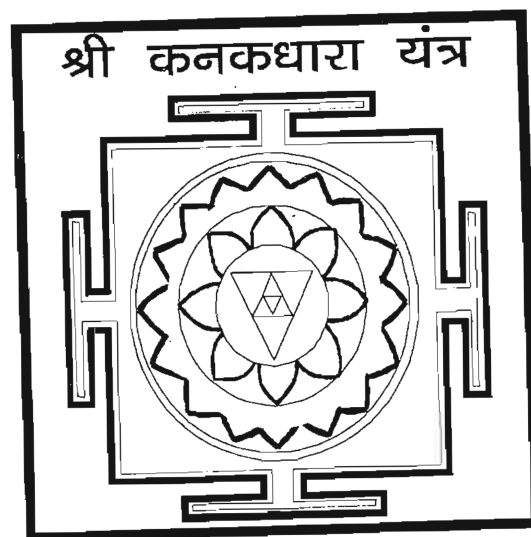
मंत्र

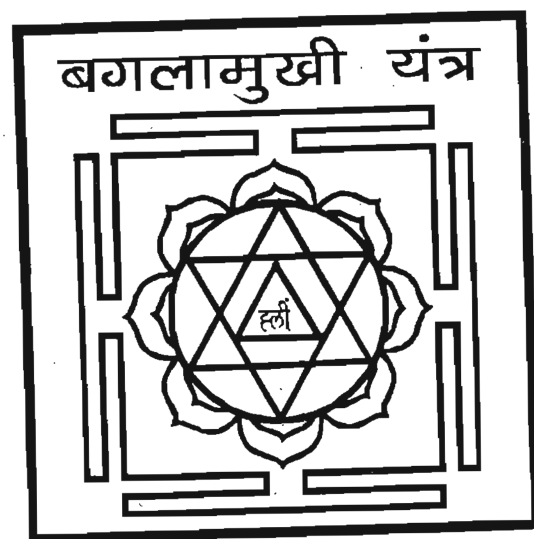
॥ ॐ ज्वालिके ज्वल ज्वल सर्व पाप दोष हर हर सर्व सिद्धि प्रदाय सिद्धये नमः ॥

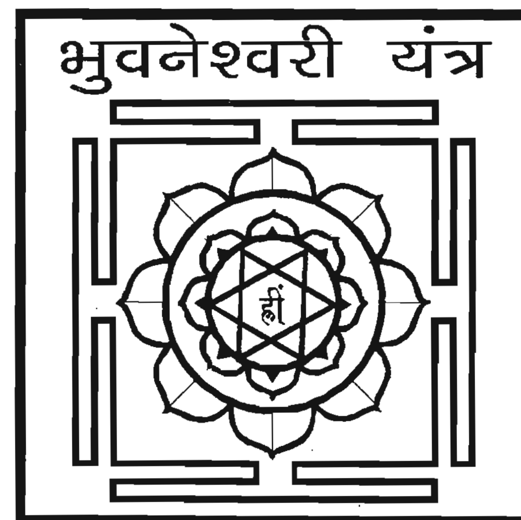
इसके बाद मूल साधना प्रारम्भ की जाय, तो जिस साधना या सिद्धि को आप प्राप्त करना चाहते हैं, उसमें अवश्य ही सफलता प्राप्त होती है।

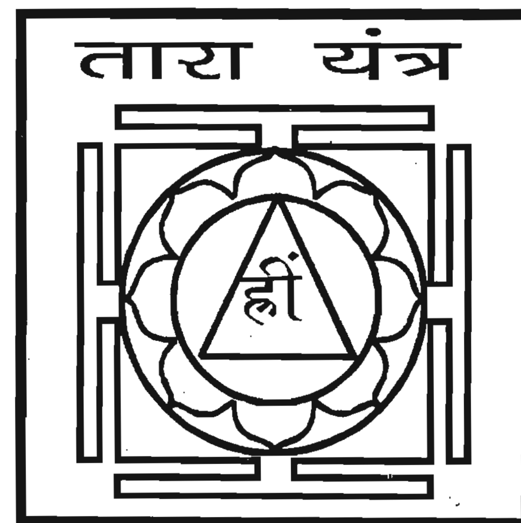
घर आकर मैंने इसी तरीके से आठ महाविद्याएं सिद्ध कीं, छिन्नमस्ता और धूमावती जैसी कठिन साधनाओं को भी मैंने इसी प्रयोग के द्वारा सिद्ध किया और मैंने अनुभव किया, कि वास्तव में ही यह प्रयोग अपने आप में आश्चर्यजनक रूप से सफलतादायक है और चाहे कठिन से कठिन साधना या सिद्धि प्राप्त करनी हो, तो इस प्रयोग को सम्पन्न करने पर अवश्य ही सफलता मिलती है।



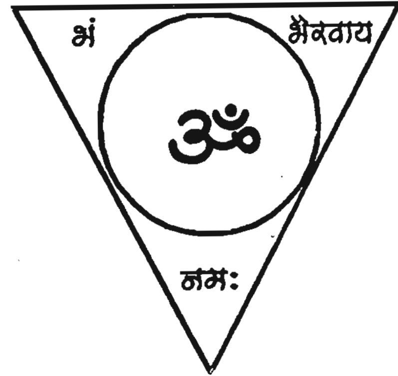

श्री कनकधारा यंत्र


बगलामुखी यंत्र
ह्लीं

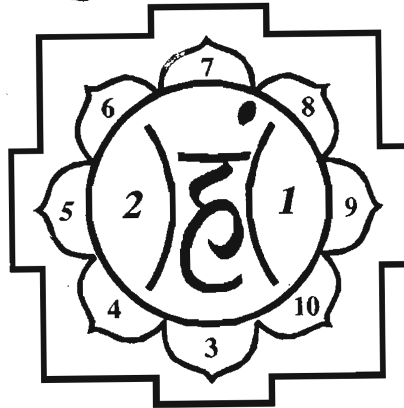

भुवनेश्वरी यंत्र
ह्रीं


तारा यंत्र
ह्रीं

भैरव यंत्र



हनुमान यंत्र



ज्ञान और चेतना की अनमोल कृतियां

पूज्यपाद गुरुदेव

डॉ. नारायण दत्त श्रीमाली जी

द्वारा रचित अनमोल ग्रंथ . . .

कुण्डलिनी यात्रा		दैनिक साधना विधि	30/-
मूलाधार से सहस्रार तक	150/-	झर झर अमरत झरै	30/-
फिर दूर कहीं पायल खनकी	150/-	तांत्रोक्त गुरु पूजन	30/-
गुरु गीता	150/-	गुरु सूत्र	30/-
ज्योतिष और काल निर्णय	150/-	मैं बांहे फैलाये खड़ा हूं	20/-
निखिलेश्वरानन्द स्तवन	120/-	सिद्धाश्रम साधना सिद्धि	20/-
हस्तरेखा विज्ञान		गुरु संध्या	20/-
व पंचांगुली साधना	120/-	अप्सरा साधना	20/-
ध्यान, धारणा और समाधि	150/-	दुर्लभोपनिषद	20/-
निखिल सहस्रानाम	96/-	बगलामुखी साधना	20/-
विश्व की अलौकिक साधनाएं	96/-	धनवर्षिणी तारा	20/-
निखिलेश्वरानन्द शतकम	75/-	महाकाली साधना	20/-
अमृत बूंद	60/-	शिष्योपनिषद	20/-
स्वर्ण तंत्रम	60/-	भुवनेश्वरी साधना	20/-
लक्ष्मी प्राप्ति	60/-	दीक्षा संस्कार	20/-
निखिलेश्वर चिन्तन	40/-	षोडशी त्रिपुर सुन्दरी	20/-
सिद्धाश्रम का योगी	40/-	हंसा उड़हु गगन की ओर	20/-
निखिलेश्वरानन्द रहस्य	40/-	साधना एवं सिद्धि	15/-
आधुनिक हिप्नोटिज्म		गुरु और शिष्य	15/-
के १०० स्वर्णिम सूत्र	60/-	नारायण सार	15/-
प्रत्यक्ष हनुमान सिद्धि	40/-	नारायण तत्व	15/-
भैरव साधना	40/-	गुरुदेव	15/-
स्वर्णिम साधना सूत्र	40/-	सिद्धाश्रम	15/-
मातंगी साधना	40/-	दीक्षा	15/-

सम्पर्क

मंत्र-तंत्र-यंत्र विज्ञान, डॉ. श्रीमाली मार्ग, हाईकोर्ट कॉलोनी, जोधपुर फोन0291-432209, फैक्स : 0291-432010

सिद्धाश्रम, 306 कोहाट एन्क्लेव, पीतमपुरा, नई दिल्ली फोन :011-7182248, फैक्स : 011-7196700



इस ग्रंथ में गणपति, कुबेर, हनुमान, बगलामुखी, साबर साधनाएं तथा अनेक दुर्लभ साधनाएं हैं, जिन्हें सामान्य गृहस्थ स्त्री–पुरुष कोई भी सम्पन्न कर सकता है, इन साधनाओं के लिए न बहुत विधि–विधान की जरूरत है और न विद्वता की, सामान्य सामग्री के माध्यम से आप पुस्तक में वर्णित साधना को करके अपनी समस्याओं का समाधान प्राप्त कर सकते हैं।